हमारे कुछ हिन्दी प्रकाशन

अहिंसक समाजवादकी ओर	२—०—०
गांधीजीकी संक्षिप्त आत्मकथा	०—१२—०
गोसेवा	१—८—०
नअी तालीमकी ओर	१—०—०
बापूके पत्र — २ : सरदार वल्लभभाअीके नाम	३—८—०
बुनियादी शिक्षा	१—८—०
सच्ची शिक्षा	२—०—०
विद्यार्थियोंसे	२—०—०
शिक्षाकी समस्या	३—०—०
सर्वोदय	२—८—०
हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण	१—८—०
बापूकी छायामें	२—८—०
विवेक और साधना	८—०—०
सुखवाद	०—६—०
महादेवभाअीकी डायरी — १	५—०—०
महादेवभाअीकी डायरी — २	५—०—०
महादेवभाअीकी डायरी — ३	६—०—०
सरदार वल्लभभाअी — १	६—०—०
सरदार वल्लभभाअी — २	५—०—०
अुस पारके पड़ोसी	३—८—०
बापूकी झांकियां	१—०—०
स्मरण-यात्रा	३—८—०
गांधी और साम्यवाद	१—४—०
जड़मूलसे क्रान्ति	१—८—०
शिक्षाका विकास	१—८—०
शिक्षामें विवेक	१—८—०
संसार और धर्म	२—८—०
स्त्री-पुरुष-मर्यादा	१—१२—०
ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम	१—४—०
गांधीजीके पावन प्रसंग	०—६—०
जीवनकी सुवास	०—६—०

डाकखर्च अलग

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद — १४

सत्य ही ओीश्वर है

[ओीश्वर, ओीश्वर-साक्षात्कार अथवा अनुभव और ओीश्वर-परायण जीवन सम्बन्धी गांधीजीके लेखों और भाषणोंसे चुने हुओ वचन]

गांधीजी

सपादक

आर० के० प्रभु

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर

अहमदाबाद

प्रकाशकका निवेदन

गाधीजी द्वारा जीवनके विविध क्षेत्रोमे प्राप्त की हुअी सिद्धियोसे ससार आश्चर्य-चकित हो गया है, लेकिन अुन्होने अिन सिद्धियोको प्राप्त करनेकी शक्ति कैसे पाअी और अुसका विकास कैसे किया यह जाननेकी अभिलाषा ससारभरके लोग रखते है।

गांधीजीके जीवन और अुनकी साधनाके विषयमे विचार करनेसे मालूम होता है कि यह शक्ति अुन्हे सत्यकी आराधना और अीश्वर-विषयक दृढ श्रद्धासे प्राप्त हुअी थी। अुनके साधना-कालमे सत्य तथा अीश्वर-तत्त्व सम्बन्धी अुनकी भावना और विचारोका धीरे धीरे विकास होता गया। पहले वे मानते थे और कहते थे कि अीश्वर सत्य है। बादमे वे कहने लगे कि 'सत्य ही अीश्वर है।' गाधीजीकी अिस भावनाका तथा विचारोका विकास कैसे हुआ, यह जाननेसे प्रत्येक जिज्ञासुको और साधारण मनुष्यको यह बात समझमे आती है कि जीवनके कानून अर्थात् अीश्वर-तत्त्व क्या है।

श्री आर० के० प्रभुने गाधीजीके अिन विषयोसे सम्बन्ध रखनेवाले वचनोका सग्रह अग्रेजीमे किया है, जो नवजीवन ट्रस्टकी ओरसे प्रकाशित हो चुका है। श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यने अुस सग्रहकी जो प्रस्तावना लिखी है, अुससे लोकशिक्षणकी दृष्टिसे अिस पुस्तकका महत्त्व समझमे आता है। अुनकी प्रस्तावना अिस प्रकार है.

> नवजीवनके व्यवस्थापक-ट्रस्टी प्रचलित फैशन और भ्रमके शिकार हो गये है। वे चाहते है कि गाधीजीकी धर्म और अीश्वर-सबधी रचनाओमे से चुने गये अशोके संग्रहके लिअे मै दो शब्द लिखू। यह विषय और मूल लेखक दोनो ही अैसे है कि श्री जीवणजीको यह 'भूमिकाकी भूख' नही होना चाहिये थी। परन्तु फैशन अितना प्रबल है कि अिन सब बातोंके बावजूद वे भी दूसरो जैसा ही कर रहे है और मुझसे यह सर्वथा अनावश्यक काम करा रहे है।
>
> व्यक्ति और राष्ट्र, दोनोके लिअे अीश्वर और अिसलिअे धर्म साधारण स्वस्थ जीवनकी मौलिक आवश्यकताअे है। अिस पुस्तकमे पाठक अिन विषयो पर गाधीजीको अपने जीवनके अत्यत परिपक्व कालके

तीस वर्षोंमे विभिन्न अवसरों पर अपने हृदयसे बोलते हुअे देखेंगे। अेक आधुनिक महापुरुष, जिसने अपने जीवनमे बहुत बडे बडे काम किये, अीश्वर और धर्मके विषय पर क्या सोचता था, यह बात अिस कठिन कालमे शिक्षित स्त्री-पुरुषोंके लिअे बोधप्रद सिद्ध हुअे बिना नहीं रह सकती।

अन्य प्रचलित धर्मोंकी पृष्ठभूमि पर मंदिर या मूर्तिपूजाका समर्थन करते हुअे गांधीजी लिखते है. "हम मानव परिवारके सब मनुष्य दार्शनिक नही है। किसी न किसी तरह हमे कोअी अैसी वस्तु चाहिये जिसे हम छू सके, जिसे हम देख सके, जिसके सामने हम घुटने टेक सके। अिसका कोअी महत्त्व नही कि वह चीज कोअी पुस्तक है या पत्थरकी खाली अिमारत है या पत्थरकी अैसी अिमारत है जिसमे अनेक मूर्तिया निवास करती हो।"

अेक दूसरी जगह वे कहते है. "हिन्दू धर्म अैसे असीम महासागरकी तरह है, जिसमे असख्य अमूल्य रत्न भरे है। अुसमे जितनी गहरी डुबकी लगाअिये अुतने ही अधिक रत्न मिलेगे।"

जो कोअी यह समझना चाहता है कि हमारे राष्ट्रपिता कैसे पुरुष थे, अुसे यह पुस्तक जरूर पढनी चाहिये। सभव है कोअी धर्मके बारेमे अैसी बात न भी सीखना चाहे जो हमारे धर्मशास्त्रो अथवा अन्य धर्मग्रथोंमे नहीं है। परन्तु यहा तो हमे अेक महापुरुषके मनका अेक पहलू मिलता है — अेक अैसे महापुरुषका जिससे हमे प्रेम है और जिसका हमारा राष्ट्र अुपकार मानता है। अिस पुस्तकका धार्मिक शिक्षाकी किसी पुस्तकसे कही अधिक मूल्य है।

मद्रास, ११-४-'५५

यह सग्रह हिन्दी-पाठकोके लिअे अुपयोगी सिद्ध होगा, अिसी खयालसे अुसका यह हिन्दी सस्करण पाठकोके समक्ष रखते हुअे हमे हर्ष होता है। हमे पूरा विश्वास है कि जीवनके अुद्देश्य और अुसकी सार्थकताके सम्बन्धमे प्रकट किये जानेवाले विचारोके भवरमे पडे हुअे लोगोको, खास करके नौजवानोको, यह सग्रह मददगार साबित होगा।

अिसका हिन्दी अनुवाद श्री रामनारायण चौधरीने किया है।

अहमदाबाद,
२५-३-'५७

अनुक्रमणिका

सत्य ही अीश्वर है

१

मेरी खोज

मैं केवल सत्यका शोधक हूं। मेरा दावा है कि मुझे सत्यका रास्ता मिल गया है। मेरा दावा है कि मैं सत्यको पानेका सतत प्रयत्न कर रहा हूं। परंतु मैं स्वीकार करता हूं कि मुझे अभी तक वह मिला नहीं है। सत्यको पूरी तरह प्राप्त कर लेना अपनेको और अपने लक्ष्यको प्राप्त कर लेना है अर्थात् संपूर्ण हो जाना है। मुझे अपनी अपूर्णताओंका दुःखद भान है। और अिसीमें मेरा सारा बल समाया हुआ है, क्योंकि अपनी मर्यादाओंको जान लेना मनुष्यके लिअे दुर्लभ वस्तु है।

यंग अिंडिया, १७–११–'२१

अगर मैं पूर्णता प्राप्त कर चुका होता तो मैं मानता हूं कि मुझे अपने पडोसियोंके — आसपासके लोगोंके दुःखदर्दका वैसा अनुभव नहीं होता, जैसा कि अभी मुझे होता है। पूर्णताकी स्थितिमें मैं अुनके दुःखोंको देखता, देखकर अुन्हें अपने ध्यानमें रखता, अुपायका निर्देश कर देता और अपने असंदिग्ध सत्यके बलसे लोगों द्वारा अुस पर अमल कराता। परंतु अभी तक मुझे अुतना ही धुंधला दिखाअी देता है जितना कांचमें से दिखाअी देता है और अिसलिअे मुझे धीरे धीरे और परिश्रमपूर्ण क्रियाओं द्वारा अपनी बात मनवानी पडती है और फिर भी हमेशा अिसमें सफलता नहीं मिलती। अैसी हालतमें यह जानते हुअे कि देशमें अैसा दुःख फैला हुआ है जो दूर किया जा सकता है और यह देखते हुअे कि विश्वनियन्ताकी आंखके नीचे ही नरककाल मौजूद है, अगर मैं भारतके तीन करोडों पीडित किन्तु मूक मानव-प्राणियोंके साथ हमदर्दी न रखूं और अुनके दुःखसे दुःखी न होअूं तो मैं अपनी मनुष्यतासे गिर जाअूंगा।

यंग अिंडिया, १७–११–'२१

मैं तो अपने पथ पर कठिनाअीसे बढ रहा अेक अैसा दुर्बल प्राणी हूं, जो पूरी तरह शुद्ध और सात्त्विक बननेके लिअे तडप रहा है, जो पूरी तरह मन-कर्म-वचनसे सत्यपरायण और अहिंसक बनना चाहता है, परंतु जिस आदर्शको

वह सच्चा मानता है अुस तक पहुचनेमें सदा असफल रहता है। यह अेक कष्टपूर्ण चढाअी है, परतु मेरे लिअे अिसका कष्ट अेक सच्चा आनन्द है। अूपरकी ओर अेक अेक कदम वढाने पर मुझे पहलेसे ज्यादा शक्ति महसूस होती है और अगला कदम अुठानेकी योग्यता प्राप्त होती है।

यग अिडिया, ९–४–'२५

मुझे रास्ता मालूम है। वह कठिन और तग है। वह खाडेकी धारकी तरह दुर्गम है। मुझे अुस पर चलनेमे मजा आता है। जव फिसल जाता हू तो रोता हू। परन्तु औीश्वरका अभय-वचन है कि 'जो प्रयत्न करता है अुसका कभी नाश नही होता।' मुझे अिस वचनमे अटूट श्रद्धा है। अिसलिअे यद्यपि मुझे अपनी कमजोरीके कारण हजार वार असफलता मिलती है, फिर भी मै श्रद्धा नही छोडूगा और आशा रखूगा कि किसी न किसी दिन जव अिद्रिया पूरी तरह मेरे कावूमे आ जायगी तव मुझे अुस प्रकाशका दर्शन अवश्य होगा।

यग अिडिया, १७–६–'२६

मैने अुस अतर्यामीको देखा नही है और न अुसे जाना है। मैने औीश्वरमें दुनियाका जो विश्वास है अुसीको अपना लिया है, और चूकि मेरी श्रद्धा अमिट है अिसलिअे अुस श्रद्धाको मै अनुभवके समान समझता हूं। परन्तु चूकि अिसके खिलाफ यह आक्षेप किया जा सकता है कि श्रद्धाको अनुभव वताना सत्यका अपलाप है, अिसलिअे शायद यह कहना अधिक सही होगा कि औीश्वरमें अपने विश्वासका ठीक वर्णन करनेके लिअे मेरे पास शब्द नही है।

आत्मकथा (अग्रेजी) १९४८; पृष्ठ ३४१

मेरा दावा है कि मै वचपनसे ही सत्यका पुजारी हू। मेरे लिअे यह सवसे सहज और स्वाभाविक वस्तु थी। मेरी भक्तिपूर्ण खोजने मुझे 'औीश्वर सत्य है' के प्रचलित मत्रके वजाय 'सत्य ही औीश्वर है' का अधिक गहरा मत्र दिया। यह मत्र मुझे औीश्वरको मानो अपनी आखोके सामने प्रत्यक्ष देखनेकी क्षमता प्रदान करता है। मै अनुभव करता हू कि वह मेरी रग-रगमे समाया हुआ है।

हरिजन, ९–८–'४२

अहिंसा मेरा अीश्वर है और सत्य मेरा अीश्वर है। जब मैं अहिंसाको ढूंढता हूं तो सत्य कहता है: 'मेरे द्वारा अुसे खोजो।' जब मैं सत्यकी तलाश करता हूं तो अहिंसा कहती है: 'मेरे जरिये अुसे खोजो।'

यंग अिंडिया, ४–६–'२५

अैसे सर्वव्यापी सत्यनारायणका साक्षात्कार करनेके लिअे मनुष्यके मनमें छोटेसे छोटे प्राणीके प्रति अपने ही जैसा प्रेम होना चाहिये। और जो मनुष्य अिसकी आकांक्षा रखता है वह जीवनके किसी क्षेत्रसे बाहर नहीं रह सकता। अिसी कारणसे मेरे सत्यप्रेमने मुझे राजनीतिके क्षेत्रमें घसीट लिया है; और मैं बिना किसी संकोचके किन्तु पूरी नम्रताके साथ कह सकता हूं कि जो लोग यह कहते हैं कि धर्मका राजनीतिके साथ कोअी संबंध नहीं है वे नहीं जानते कि धर्मका क्या अर्थ है।

आत्मकथा (अंग्रेजी) (१९४८); पृष्ठ ६१५

मैं मानव-जातिकी सेवाके द्वारा अीश्वर-दर्शनका प्रयत्न कर रहा हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि अीश्वर न तो अूपर स्वर्गमें है, न नीचे किसी पातालमें; वह तो हरअेकके हृदयमें विराजमान है।

आत्मकथा (अंग्रेजी) (१९४८); पृष्ठ ६१५

मुझे पृथ्वीके नश्वर राज्यकी कोअी आकांक्षा नहीं है। मैं तो स्वर्गके राज्य अर्थात् मोक्षके लिअे प्रयत्न कर रहा हूं। अपने अुद्देश्यकी पूर्तिके लिअे मुझे किसी गिरि-गुफाकी शरण लेनेकी आवश्यकता नहीं है। अगर मैं समझ सकूं तो वह गुफा मेरे भीतर ही मौजूद है। गुफावासी गुफामें रहते हुअे भी मनके महल बना सकता है, जब कि जनक जैसा महलमें रहनेवाला अैसा नहीं करता। गुफामें रहनेवाला विचारके पंखों पर बैठकर संसारका चक्कर लगाता रहे तो अुसे शान्ति नहीं मिलती। लेकिन जनक जैसे लोग 'शान-शौकत' से रहते हुअे भी अकल्पनीय शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। मेरे लिअे मोक्षका मार्ग यही है कि मैं अपने देशकी और देशके द्वारा मानव-जातिकी सेवाके लिअे अविश्रान्त परिश्रम करता रहूं। मैं सब प्राणियोंके साथ अेकता स्थापित करना चाहता हूं।

यंग अिंडिया, ३–४–'२४

मैं न केवल मानव कहलानेवाले प्राणियोंके साथ ही भाअीचारा या अेकता महसूस करना चाहता हू, वल्कि सव प्राणियोंके साथ, यहा तक कि पृथ्वी पर रेंगनेवाले जीवोंके साथ भी अेकता साधना चाहता हू। आपको आघात न पहुचे तो मैं यह कहूगा कि मैं पृथ्वी पर रेंगनेवाले प्राणियोंके साथ अेकता अिसलिअे चाहता हू कि हम अेक ही अीश्वरकी सन्तान होनेका दावा करते है और अगर अैसा है तो नामरूप कुछ भी हो, समस्त प्राणी वास्तवमें अेक ही है।

यग अिंडिया, ४–४–'२९

'गाधीवाद' जैसी कोअी वस्तु नही है, और मैं अपने पीछे कोअी सम्प्रदाय छोडकर नही जाना चाहता। मेरा यह दावा नही है कि मैंने कोअी नया सिद्धान्त या धर्म निकाला है। मैंने अपने ढगसे केवल सनातन सत्योंको दैनिक जीवन और अुसकी समस्याओ पर लागू करनेकी कोशिश की है। सत्य और अहिसा अनादि कालसे चले आये है। मैंने केवल भरसक विशाल पैमाने पर अिन दोनोके प्रयोग करनेकी कोशिश की है। अैसा करते हुअे मैंने कभी कभी भूले की है, और अपनी भूलोंसे शिक्षा प्राप्त की है। अिस प्रकार जीवन और अुसकी समस्याये मेरे लिअे सत्य और अहिंसाके अभ्यासके अनेक प्रयोग वन गयी है।

हरिजन, २८–३–'३६

सत्य और अहिंसामे मेरी श्रद्धा दिन-दिन वढ रही है। और ज्यो ज्यों मैं अुन्हे अपने जीवनमे अुतारनेका प्रयत्न कर रहा हू, त्यो त्यो प्रत्येक क्षण मेरा भी विकास हो रहा है। मुझे अुनके नये नये गूढार्थ सूझ रहे है। मुझे अुनमे रोज नअी रोशनी नजर आती है और नये नये अर्थ मालूम होते है।

हरिजन, २–२–'४०

२

अीश्वर है

अेक अनिर्वचनीय रहस्यमयी शक्ति है जो सर्वत्र व्याप्त है। मैं अुसे अनुभव करता हूं, यद्यपि देखता नही हूं। यह अदृश्य शक्ति अपना अनुभव तो कराती है, परंतु अुसका कोअी प्रमाण नही दिया जा सकता; क्योंकि जिन वस्तुओंका मुझे अपनी अिंद्रियो द्वारा ज्ञान होता है अुन सबसे वह बहुत भिन्न है। वह अिन्द्रियोंकी पहुचके बाहर है।

परन्तु अेक खास हद तक अीश्वरके अस्तित्वको बुद्धिके द्वारा भी साबित किया जा सकता है। साधारण मामलोंमे भी हम जानते है कि लोगोंको यह पता नही होता कि कौन अुन पर शासन करता है या क्यो करता है और कैसे करता है। फिर भी वे जानते है कि कोअी असी शक्ति अवश्य है जो अुन पर शासन करती है। अपने पिछले सालके मैसूरके दौरेमे मैं कअी गरीब देहातियोंसे मिला और पूछने पर मुझे पता चला कि अुन्हे यह मालूम नही है कि मैसूरमे किसका राज्य है। अुन्होंने केवल अितना कहा कि किसी देवताका राज्य है। अगर अुन गरीब लोगोंका ज्ञान अपने राजाके बारेमे अितना सीमित है तो मुझे — जो ये गरीब लोग अपने राजासे जितने छोटे है अुसकी अपेक्षा अीश्वरसे अनेक गुना छोटा हू — आश्चर्य न होना चाहिये, अगर मै राजाओंके राजा अीश्वरकी हस्तीको अनुभव न करूं। फिर भी जैसा अुन गरीब देहातियोंको मैसूरके बारेमे अनुभव होता था, वैसा ही मुझे भी अवश्य अनुभव होता है कि विश्वमे व्यवस्था है, हरअेक प्राणी और प्रत्येक वस्तु पर शासन करनेवाला अेक अटल नियम है। और यह कोअी अन्धा नियम नही है। क्योंकि सजीव प्राणियोंके आचरणको नियमित करनेवाला कोअी नियम अन्धा नही हो सकता; और सर जगदीशचन्द्र बसुकी अद्भुत खोजोंसे अब तो यह भी साबित किया जा सकता है कि जड़ पदार्थोंमे भी जीवन है। सब प्राणियोंका शासन करनेवाला यह नियम ही अीश्वर है। नियम और नियामक अेक ही है। मुझे नियम या नियामकके बारेमे बहुत थोडा ज्ञान है, केवल अिसीलिअे मैं अुनके अस्तित्वसे अिनकार नही कर सकता। जैसे किसी पार्थिव शक्तिके अस्तित्वका अिनकार करनेसे या अुसके अज्ञानसे मेरा कोअी लाभ नही होगा, अिसी तरह अीश्वर

और अुसके नियमको न माननेसे मैं अुसके अमलमें मुक्त नहीं हो जाअूंगा, जब कि जिस तरह किसी सांसारिक राज्यको स्वीकार कर लेनेसे अुसके अधीन जीवन आसान हो जाता है, अुसी प्रकार दैवी सत्ताको नम्र होकर चुपचाप स्वीकार कर लेनेसे जीवनकी यात्रा सरल हो जाती है।

मैं अस्पष्ट तौर पर यह जरूर अनुभव करता हूं कि जब मेरे चारों ओर हर चीज हमेशा बदल रही है, नष्ट हो रही है, तब जिन सारे परिवर्तनके पीछे कोओी चेतन शक्ति अैसी है जो बदलती नहीं है, जो सबको धारण किये हुअे है, जो सर्जन करती है, संहार करती है और फिर नया सर्जन करती है। यह जीवनदायी शक्ति ही ओश्वर है। और चूंकि केवल अिन्द्रियों द्वारा दिखाओी देनेवाली और कोओी भी चीज न स्थायी है और न हो सकती है, अिसलिअे अेकमात्र ओश्वरका ही अस्तित्व है।

यह शक्ति कल्याणकारी है या अकल्याणकारी? मैं देखता हूं कि यह सर्वथा कल्याणकारी है, क्योंकि मुझे दिखाओी देता है कि मृत्युके बीच जीवन कायम रहता है, असत्यके बीच सत्य और अंधकारके बीच प्रकाश स्थिर रहता है। अिससे मुझे पता चलता है कि ओश्वर जीवन है, सत्य है और प्रकाश है। वही प्रेम है। वही परम मंगल है।

परंतु जो ओश्वर केवल बुद्धिको संतोष देता है वह ओश्वर नहीं है। ओश्वर तभी ओश्वर है जब वह हृदय पर शासन करता हो और अुसका रूपान्तर करता हो। अुसे अपने भक्तके छोटेसे छोटे काममें प्रगट होना चाहिये। यह तभी हो सकता है जब पांचों अिन्द्रियोंसे होनेवाले ज्ञानसे भी अधिक वास्तविक रूपमें अुसका निश्चित साक्षात्कार प्राप्त किया जाय। अिन्द्रियोंसे होनेवाला ज्ञान हमें कितना ही वास्तविक दिखाओी दे, वह झूठा और भ्रमपूर्ण हो सकता है, और अक्सर होता है। लेकिन अतीन्द्रिय ज्ञान अचूक होता है। अिसका प्रमाण बाहरी सबूतोंमें नहीं मिलता, परंतु जिन लोगोंने ओश्वरके वास्तविक अस्तित्वको अपने भीतर अनुभव किया है अुनके आचरण और चरित्रमें होनेवाले परिवर्तनसे मिलता है।

अैसा प्रमाण सब देशोंमें होनेवाले पैगम्बरों और ऋषियोंकी अटूट परंपराके अनुभवोंमें पाया जाता है। अिस प्रमाणको अस्वीकार करना अपने आपको न माननेके बराबर है।

अिस तरहके साक्षात्कारकी पूर्वगामी शर्त है—अलट श्रद्धा। जो व्यक्ति अपने अन्दर ओीश्वरकी अुपस्थितिके सत्यकी जाच करना चाहता है, अुसे पहले जीवित श्रद्धाका विकास करना चाहिये। श्रद्धाके द्वारा ही वह अैसा कर सकता है। और चूकि स्वय श्रद्धा किसी वाह्य प्रमाणसे सावित नही की जा सकती, अिसलिअे सवसे सुरक्षित मार्ग यह है कि ससारके नैतिक शासनमे और अिसलिअे नैतिक कानूनमे, सत्य और प्रेमके नियमकी सर्वोपरितामे, विश्वास किया जाय। जहा सत्य और प्रेमके विपरीत सब वातोका सर्वथा त्याग करनेका स्पष्ट सकल्प है, वहा श्रद्धा रखना सवसे सुरक्षित अुपाय है।

किसी वौद्धिक अुपायसे मै दुनियामे वुराअीके अस्तित्वका कारण नही समझा सकता। अैसा करनेकी अिच्छा रखना मानो ओीश्वरकी बराबरी करना है। अिसलिअे मै नम्रतापूर्वक यह मान लेता हू कि वुराअीका अस्तित्व है। और मै ओीश्वरको अत्यन्त सहनशील और धैर्यशाली अिसीलिअे कहता हू कि वह संसारमे वुराअी होने देता है। मै जानता हू कि अुसमे वुराअी नही है। अुसने वुराअी पैदा तो की तो है, परतु वह अुससे अछूता है।

मै यह भी जानता हू कि अगर मै प्राणोंकी वाजी लगाकर भी वुराअीके खिलाफ युद्ध नही करूगा तो मुझे ओीश्वरका ज्ञान कभी नही होगा। मेरा यह विश्वास मेरे अपने ही नम्र और सीमित अनुभवसे दृढ हुआ है। मै जितना शुद्ध वननेकी कोशिश करता हू अुतनी ही ओीश्वरसे निकटता अनुभव करता हू। जव मेरी श्रद्धा आजकी तरह नाममात्रकी न रहकर हिमालयकी भाति अचल और अुसके शिखर पर चमकनेवाली बर्फकी तरह धवल और तेजस्वी हो जायगी, तव मै अुससे कितनी अधिक निकटता अनुभव करूगा? तव तक मै अपने पत्रलेखकसे कहूगा कि वह कार्डिनल न्यूमैनके साथ अुसका यह अनुभवसे निकला हुआ भजन गाये

> "हे प्रेमल ज्योति, चारो ओर घिरे हुअे अधकारमे तू मुझे रास्ता वता।
> रात अधेरी है और मै घरसे दूर हू। तू मुझे रास्ता वता।
> तू मेरे पैरोको थामे रह, मै दूरका दृश्य देखना नही चाहता,
> मेरे लिअे अेक कदम ही काफी है।"

यंग अिडिया, ११–१०–'२८

३

अेक अीश्वर ही है

मेरी दृष्टिमे अीश्वर सत्य और प्रेम है, अीश्वर नीति और सदाचार है, अीश्वर अभय है। अीश्वर प्रकाश और जीवनका स्रोत है, फिर भी अिन सबसे अूपर और परे है। अीश्वर अन्तरात्मा है। वह नास्तिककी नास्तिकता भी है, क्योंकि अपने निसीम प्रेमके कारण वह अुसे भी रहने देता है। वह हृदयोंकी जाच करता है। वह वाणी और बुद्धिसे परे है। वह हमे और हमारे हृदयोंको खुद हमसे भी अधिक जानता है। वह जो कुछ हम कहते है अुसीको नही मान लेता, क्योंकि अुसे मालूम है कि हममें से कुछ जान-बूझकर और दूसरे अनजाने अक्सर जो कहते है वह करते नही। जिन्हे अुसके व्यक्तिगत अस्तित्वकी जरूरत है अुनके लिअे वह व्यक्तिरूप है। जिन्हें अुसके स्पर्शकी आवश्यकता है, अुनके लिअे वह साकार है। वह शुद्धतम सार है। जिनमे श्रद्धा है अुनके लिअे वह केवल सत्स्वरूप है। वह सब मनुष्योंके लिअे प्रत्येककी भावनाके अनुसार सब कुछ है। वह हमारे भीतर है और फिर भी हमसे अूपर और परे है। कोअी काग्रेसमे से 'अीश्वर' शब्दको निकाल सकता है, परन्तु स्वयं अीश्वरको निकाल देनेकी शक्ति किसीमे नही है। अीश्वरके नाम पर कहना और शपथपूर्वक कहना, अिन दोनोमे क्या फर्क है? और जिसे conscience (सदसद्विवेककी सहज शक्ति) कहा जाता है, वह सरल तीन अक्षरोंके समूह 'अीश्वर' शब्दका ही खीच-तानकर किया गया किन्तु अपूर्ण अर्थ है। अगर अुसके नाम पर बीभत्स दुराचार या अमानुषिक अत्याचार किये जाते है तो अिससे अीश्वरका अस्तित्व मिट नही सकता। वह बडा सहनशील है। वह धैर्यवान है, परतु भयकर भी है। वह अिस लोकमे और परलोकमे सबसे कठोर व्यक्ति है। वह हमारे साथ वही बरताव करता है जो हम अपने मनुष्य और पशु पडोसियोंके साथ करते है। अुसके सामने अज्ञानका बहाना नही चल सकता। पर साथ ही वह क्षमाशील भी है, क्योंकि वह हमे पश्चात्तापका हमेशा मौका देता है। वह सबसे बडा लोकतत्रवादी है, क्योंकि अुसने हमे बुराअी और अच्छाअीके बीच अपना चुनाव खुद कर लेनेकी पूरी छूट दे रखी है। अुसके बराबर आज तक कोअी जालिम भी नही हुआ है, क्योंकि वह कअी बार हमारे मुह तक आये हुअे कौरको छीन लेता है, और अिच्छा-स्वातत्र्यकी आडमे हमे अितनी अपर्याप्त छूट देता

है कि हमारी बेवकूफी पर वह हस सके। अिसीलिअे हिन्दू धर्म अिसे अुसकी लीला या माया कहता है। हम नही है, अेक वही है। और अगर हम चाहते है कि हमारा अस्तित्व रहे तो हमे सदा अुसके गुणगान करने होगे और अुसकी अिच्छा पर चलना होगा। हम अुसकी वसीकी तान पर नाचते रहे तो कल्याण ही कल्याण है।

यंग अिडिया, ५–३–'२५

अद्वैतवाद और अीश्वर

[अेक मित्रके प्रश्नोके अुत्तरमे गाधीजीने लिखा]

मै अद्वैतवादी हू, फिर भी द्वैतवादका समर्थन करता हू। जगत हर क्षण बदल रहा है और अिसलिअे मिथ्या है, अुसका कोअी स्थायी अस्तित्व नही है। परतु सदा बदलते रहने पर भी अुसमे कोअी चीज अैसी है जो कायम रहती है, अिसलिअे वह अुस हद तक सत्य है। अिस कारण मुझे अुसे सत्य और असत्य दोनो कहनेमे और अिस प्रकार स्वय अनेकान्तवादी या स्याद्वादी कहलानेमे कोअी आपत्ति नही। परतु मेरा स्याद्वाद पडितोंका स्याद्वाद नही है, अुसकी मेरी अपनी विशेष कल्पना है। मै पडितोसे विवाद नही कर सकता। मेरा यह अनुभव रहा है कि अपने दृष्टिकोणसे मै सदा सही होता हू और अपने अीमानदार आलोचकोकी नजरमे अक्सर गलती पर होता हू। मै जानता हू कि अपनी अपनी दृष्टिसे हम दोनो ही सही होते है। और अिसलिअे मै अपने विरोधियो अथवा आलोचकोकी नीयत पर शक करनेसे बच जाता हू। जिन सात अधोने हाथीका सात तरहसे अलग अलग वर्णन किया, वे अपने अपने दृष्टिकोणसे ठीक थे, अेक-दूसरेके दृष्टिकोणसे गलत थे और जो आदमी हाथीको जानता था अुसके खयालसे सही भी थे और गलत भी थे। मै सत्यकी अनेकरूपताके अिस सिद्धान्तको बहुत पसन्द करता हू। अिसी सिद्धान्तने मुझे मुसलमानको अुसीकी दृष्टिसे और अीसाअीको अुसीकी नजरमे समझना सिखाया है। पहले मुझे अपने विरोधियोके अज्ञान पर क्रोध होता था। अब मै अुनसे प्रेम करता हू, क्योकि अब मुझे वह दृष्टि मिल गअी है जिससे मै अपनेको दूसरोकी नजरसे और दूसरोको अपनी नजरसे देख सकता हू। मै सारे विश्वको अपने प्रेमालिगनमे बाध लेना चाहता हू। मेरा अनेकान्तवाद मेरे सत्य और अहिसाके सिद्धान्तका फल है।

मैं ओश्वरको जैसा मानता हूं ठीक वैसा ही अुसका वर्णन करता हूं। मैं अुसे स्रष्टा और अस्रष्टा दोनों मानता हूं। यह भी मेरी सत्यकी अनेकरूपताके सिद्धान्तकी स्वीकृतिका परिणाम है। जैनोंके मचमें मैं ओश्वरके अस्रष्टा होनेका समर्थन करता हूं और रामानुजके मचसे स्रष्टा होनेका। सच तो यह है कि हम सब अकल्पनीयकी कल्पना करते हैं, अवर्णनीयका वर्णन करते हैं और अज्ञातको जानना चाहते हैं और अिसीलिअे हमारी वाणी लड़खड़ाती है, अपूर्ण सिद्ध होती है और बहुधा परस्परविरोधी होती है। अिसीलिअे वेदोंने ब्रह्मको 'नेति' 'नेति' कहा है। परंतु वह—अुसे 'स' कहो या 'तत्'—नेति अर्थात् 'यह नहीं' है, फिर भी वह है अवश्य। अगर हम हैं, हमारे माता-पिता हैं और अुनके भी माता-पिता थे, तो यह मानना भी अुचित है कि अिस सारी सृष्टिका भी कोअी स्रष्टा है। अगर वह नहीं है तो हमारा भी कोअी ठौर-ठिकाना नहीं है। यही कारण है कि हम सब अेकस्वरसे अेक ओश्वरको परमात्मा, ओश्वर, शिव, विष्णु, राम, अल्लाह, खुदा, दादा अहुरमज्द, जिहोवा और गॉड आदि भिन्न भिन्न असंख्य नामोंसे पुकारते हैं। वह अेक भी है और अनेक भी, वह परमाणुसे भी छोटा और हिमालयसे भी बड़ा है। वह महासागरकी अेक बूंदमें भी समा जाता है और सातों समुद्र भी अुसका पार नहीं पा सकते। बुद्धि अुसे जाननेमें असमर्थ है। वह बुद्धिकी पहुंच या पकड़के बाहर है। परंतु अिस मुद्देका मुझे विस्तार करनेकी जरूरत नहीं है। अिस मामलेमें श्रद्धा अत्यावश्यक है। मेरा तर्क असंख्य धारणाअें बना और बिगाड़ सकता है। मुमकिन है कोअी चतुर नास्तिक वाद-विवादमें मुझे हरा दे। परंतु मेरी श्रद्धाकी गति मेरी बुद्धिसे अितनी तेज है कि मैं सारे संसारको चुनौती देकर कह सकता हूं कि 'ओश्वर था, है और सदा रहेगा।'

परंतु जो ओश्वरके अस्तित्वसे अिनकार करना चाहते हैं अुन्हें अैसा करनेकी आजादी है। वह दयालु और करुणामूर्ति है। वह कोअी पार्थिव राजा नहीं जिसे अपनी सत्ता मनवानेके लिअे सेनाकी जरूरत हो। वह हमें स्वतन्त्रता देता है, पर अुसकी करुणा हमें अुसकी अिच्छाका स्वीकार और पालन करनेके लिअे बाध्य करती है। लेकिन अगर हममें से कोअी अुसकी अिच्छाके आगे झुकना पसन्द न करे तो वह कहता है 'अैसा ही हो, मत झुको। मेरा सूर्य तुम्हें कम प्रकाश नहीं देगा, मेरे बादल तुम्हारे लिअे कम वर्षा नहीं करेंगे। मैं तुमसे जबरन् अपनी सत्ता नहीं मनवाअूंगा।' अैसे परम-

कृपालु ओश्वरका अस्तित्व नादान लोग न माने तो न माने। मैं तो अुन करोडों सयानोमे से हू, जिनका अुसमे विश्वास है, और अुसे प्रणाम करने और अुसका गौरव गानेमे मैं कभी थकता नही।

यंग अिंडिया, २१-१-'२६

४

सत्य ही ओश्वर है

[लदनकी गोलमेज परिषद्से लौटते हुओ स्विट्जर्लैण्डकी अेक सभामे पूछे गये अेक प्रश्नके अुत्तरमे गाधीजीने कहा.]

आपने मुझसे पूछा है कि मैं सत्यको ओश्वर क्यो समझता हू। अपने बचपनमे मुझे हिन्दू शास्त्रोंमे जिन्हे ओश्वरके सहस्र नाम कहा जाता है अुनका जप करना सिखाया गया था। परतु अिन सहस्र नामोमे ओश्वरकी सारी नामावली समाप्त नही हो जाती। हम मानते है—और मेरे खयालमे यही सत्य है—कि जितने प्राणी है अुतने ही ओश्वरके नाम है और अिसलिअे हम यह भी कहते है कि ओश्वर अनाम है, और चूकि ओश्वरके अनेक रूप है, अिसलिअे हम अुसे अरूप भी समझते है, और चूकि वह हमसे कओी वाणियोमे बात करता है, अिसलिअे हम अुसे अवाक् समझते है; अित्यादि अित्यादि। अिसी तरह जब मैंने अिस्लामका अध्ययन किया तब मुझे पता लगा कि अिस्लाममे भी ओश्वरके अनेक नाम है। जो लोग कहते थे कि ओश्वर प्रेम है अुनके साथ मैं भी कहता था कि ओश्वर प्रेम है। परतु अपने हृदयकी गहराओीमे मैं यही कहा करता था कि ओश्वर प्रेमरूप होगा, मगर सबसे ज्यादा तो ओश्वर सत्यरूप है। अगर मानव-वाणीके लिअे ओश्वरका सपूर्ण वर्णन करना सभव हो, तो मैं अिस निश्चय पर पहुचा हू कि मेरे अपने लिअे तो ओश्वर सत्य है—सत्य शब्द ही अुसका सर्वोत्तम वाचक है। परतु दो वर्ष पूर्व मैं अेक कदम और आगे बढा; मैंने कहा कि न केवल ओश्वर सत्यरूप है बल्कि सत्य ही ओश्वर है। ओश्वर सत्य है और सत्य ही ओश्वर है, अिन दोनों वचनोके सूक्ष्म भेदको आप समझ लेगे। अिस नतीजे पर मैं सत्यकी पचास वर्षकी दीर्घ, अनवरत और कठिन खोजके बाद पहुचा हू।

अिसके बाद मुझे पता चला कि सत्य तक पहुचनेका निकटतम मार्ग प्रेम है। परन्तु मैने यह भी पाया कि कमसे कम अंग्रेजी भाषामे 'लव' (प्रेम) शब्दके अनेक अर्थ है और विकारके अर्थमे मानवप्रेम तो अेक मलिन चीज है जो मनुष्यका पतन करती है। मैने यह भी देखा कि अहिंसाके अर्थमे प्रेमके पुजारियोकी सख्या दुनियामे अिनीगिनी ही है। परन्तु सत्यके बारेमे दो अर्थ नही है और नास्तिकों तकने सत्यकी आवश्यकता या शक्ति स्वीकार की है। परन्तु सत्यको ढूढ निकालनेकी अपनी लगनमे नास्तिकोने अीश्वरके अस्तित्वसे भी अिनकार करनेमे सकोच नही किया है और अपने दृष्टिकोणसे अुन्होने ठीक ही किया है। अिस तरह सोचते हुअे मेरी समझमे आया कि अीश्वर सत्यरूप है, यह कहनेके बजाय मुझे यह कहना चाहिये कि सत्य ही अीश्वर है। अिस सम्बन्धमें मुझे चार्ल्स ब्रैडलॉका नाम याद आता है। वे अपनेको बहुत अुत्साहपूर्वक नास्तिक बताया करते थे। परन्तु मै अुनके बारेमे कुछ जानता हू, अिसलिअे मै अुन्हे कभी नास्तिक नही कहूगा। मै अुन्हे अेक अीश्वर-भीरु मनुष्य कहूगा, यद्यपि मै जानता हू कि वे अिस वर्णनको स्वीकार नही करेगे। यदि मै अुनसे कहू कि "मि० ब्रैडलॉ, आप अेक सत्यभीरु मनुष्य है, अिसलिअे अीश्वर-भीरु मनुष्य है", तो अुनका मुह लाल हो जायगा। मगर मै यह कहकर कि सत्य ही अीश्वर है अुनके विरोधको सहज ही ठडा कर सकता हू। मैने अनेक नौजवानोंका विरोध अिसी तरह ठडा कर दिया है। 'अीश्वर सत्य है' कहनेमे अेक दूसरी कठिनाअी यह है कि अीश्वरका नाम करोडो लोगोने लिया है और अुसके नाम पर अवर्णनीय अत्याचार किये है। यह बात नही है कि सत्यके नाम पर वैज्ञानिक लोग क्रूरताअे नही करते। मै जानता हू कि सत्य और विज्ञानके नाम पर पशुओकी चीर-फाडके सिलसिलेमें अुन पर कैसी अमानुषिक निर्दयताअे की जाती है। सारांश यह कि अीश्वरका वर्णन किसी भी तरह किया जाय, अुसमे कअी कठिनाअियां है। परन्तु मनुष्यका मन अेक सीमित वस्तु है और जब आप अेक अैसी सत्ताकी कल्पना करते है जो मनुष्यकी समझनेकी शक्तिसे परे है तब आपको अिन सीमाओके भीतर रहकर ही प्रयत्न करना पडता है।

हिन्दू तत्त्वज्ञानमे अेक चीज और है, वह कहता है—अेक अीश्वर ही है, अुसके सिवा किसी और चीजकी सत्ता नही है। यही सत्य आप अिस्लामके कलमेमे जोरके साथ कहा हुआ पाते है। वहा आपको साफ साफ

कहा गया है कि अेक अीश्वर है, और कुछ भी नही है। असलमे अंग्रेजी शब्द Truth के लिअे संस्कृतमे जो शब्द है — यानी 'सत्य' — अुसका शब्दार्थ ही 'जो है' है। अिस कारणसे और अन्य कअी कारणोंसे, जो मैं आपको बता सकता हू, मैं अिस नतीजे पर पहुचा हू कि 'सत्य ही अीश्वर है' यह व्याख्या मुझे सबसे अधिक सन्तोष देती है। और जब आप सत्यको अीश्वरके रूपमे पाना चाहते है, तब अुसका अेकमात्र अनिवार्य साधन प्रेम अर्थात् अहिंसा ही है। और चूकि मैं मानता हू कि अंतमे साधन और साध्य समानार्थक शब्द हो जाते है, अिसलिअे मुझे यह कहनेमे संकोच नही होगा कि अीश्वर प्रेम है।

'तो फिर सत्य क्या है?' यह सवाल अुठा।

प्रश्न कठिन है, परन्तु मैने अुसे अपने लिअे यह कहकर हल कर लिया है कि जो हमारी अन्तरात्मा कहे वही सत्य है। आप पूछेगे, तब विभिन्न लोग विभिन्न और विरोधी सत्योंकी कल्पना कैसे करते है? अिसका अुत्तर यह है कि मानव-मन असंख्य माध्यमो द्वारा काम करता है और मानव-मनका विकास हरअेकमे अेकसा नही हुआ है, अिसलिअे यह परिणाम तो आयगा ही कि जो अेकके लिअे सत्य हो वह दूसरेके लिअे असत्य हो। और अिसलिअे जिन लोगोने सत्यके प्रयोग किये है वे अिस परिणाम पर पहुचे है कि अिन प्रयोगोमे कुछ शर्तोंका पालन करना जरूरी है। जैसे वैज्ञानिक प्रयोग सफलतापूर्वक करनेके लिअे अमुक वैज्ञानिक तालीम चाहिये, ठीक वैसे ही आध्यात्मिक क्षेत्रमे प्रयोग करनेकी योग्यता प्राप्त करनेके लिअे कठोर प्रारंभिक साधना जरूरी है। अिसलिअे कोअी अपनी अन्तरात्माकी आवाजकी बात करे, अुसके पहले अुसे अपनी मर्यादाये अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये। अिस कारण अनुभवके आधार पर हमारा विश्वास है कि जो लोग अीश्वरके रूपमे सत्यकी व्यक्तिगत खोज करना चाहते है, अुन्हे पहले कअी व्रतोंका पालन करना चाहिये, अुदाहरणार्थ, सत्य, ब्रह्मचर्य — क्योंकि आप सत्य और अीश्वरके लिअे अपना प्रेम और किसीको नही दे सकते — अहिंसा, दरिद्रता, अपरिग्रह आदि। अगर आप अपने पर ये पाचो व्रत लागू नही करते तो आपको यह प्रयोग शुरू ही न करना चाहिये। और भी कअी व्रत-नियम आदि बताये गये है, परन्तु मै अुन सबकी चर्चा अभी नही करूगा। अितना कहना काफी है कि जिन लोगोने ये प्रयोग किये है वे

जानते है कि हरअेकका अन्तरात्माकी आवाज सुननेका दावा करना अुचित नही। लेकिन आजकल हरअेक आदमी यम-नियमकी कोअी भी तालीम लिये बिना ही अपने अन्तःकरणकी आवाजके अधिकारका दावा करता है। अिसके फलस्वरूप संसारको जितना असत्य प्रदान किया जा रहा है कि वह हैरान है। अिसलिअे मैं आपसे सच्ची नम्रतापूर्वक अितना ही निवेदन कर सकता हू कि सत्यकी प्राप्ति अैसे किसी व्यक्तिको नही हो सकती जिसमें नम्रताकी विपुल भावना न हो। अगर आप सत्यके महासागरके तल पर तैरना चाहते हैं तो आपको शून्य बन जाना होगा। अिससे आगे मैं अिस मोहक मार्ग पर अिस समय नही बढ सकूगा।

यंग अिडिया, ३१–१२–'३१

५

ओश्वर प्रेम है

वैज्ञानिक हमे बताते है कि हमारी यह पृथ्वी जिन परमाणुओंसे बनी है अुनमे अुन्हे अेक-दूसरेके साथ बाध रखनेवाली शक्ति न हो तो वह चूर चूर हो जाय और हमारा अस्तित्व मिट जाय। यह शक्ति जिस तरह जड पदार्थमे है अुसी तरह सारे चेतन प्राणियोमे भी होनी चाहिये, चेतन प्राणियोको अेक-दूसरेसे बाध रखनेवाली, अुन्हे जोडने और अेक करनेवाली अिस शक्तिका नाम है — प्रेम। अुसे हम पिता-पुत्रमे, भाअी-बहनमें और मित्र-मित्रमे देखते है। परन्तु हमे प्राणीमात्रमे अुसका अुपयोग करना सीखना है और अुसके अुपयोगमे ही हमारा ओश्वरका ज्ञान समाया हुआ है। जहा प्रेम है वहा जीवन है, द्वेष नाशकी ओर ले जाता है।

यंग अिडिया, ५–५–'२०

यद्यपि प्रकृतिमे काफी अपकर्षण है, फिर भी वह जीती है आकर्षणके द्वारा। पारस्परिक प्रेमके आधार पर प्रकृति कायम है। मनुष्य विनाशके आधार पर नही जीता। स्वप्रेम अुसे दूसरोको प्रेम करने और अुनके हितका ध्यान रखनेके लिअे प्रेरित करता है। राष्ट्रोमे अेकता अिसलिअे होती है कि

जिन व्यक्तियोंसे वे बनते हैं अुनमे पारस्परिक प्रेमका तत्त्व काम करता हैं। जिस तरह हमने परिवार-धर्मका विस्तार करके राष्ट्रोंका निर्माण किया है, अुसी तरह किसी दिन हमें राष्ट्रधर्मका विस्तार करके अुसे विश्वव्यापी बनाना होगा।

यग अिण्डिया, २–३–'२२

मैंने देखा है कि विनाशके बीच भी जीवन कायम रहता है और अिस-लिअे मेरा विश्वास है कि विनाशके नियमसे बडा कोअी नियम अवश्य है। वह नियम प्रगट होगा तभी सुव्यवस्थित समाजकी रचना सम्भव होगी और जीवन जीने योग्य होगा। और अगर वह नियम ही जीवनका सच्चा नियम है तो हमे दैनिक जीवनमे अुस पर चलना होगा। जहा कही भी विसवाद पैदा हो, जहा भी आपको किसी विरोधीका सामना करना पड़े, वहा आप अुसे प्रेमसे जीतिये। मैंने अुक्त नियम अपने जीवनमे अिसी सादे ढगसे कार्यान्वित किया है। अिसका यह अर्थ नही कि मेरी तमाम मुश्किले हल हो गअी। मतलब अितना ही है कि मैंने पाया है कि प्रेमके कानूनने जो काम किया है वह विनाशके कानूनने कभी नही किया।

यंग अिण्डिया, १–१०–'३१

मेरा विश्वास हैं कि मानव-जातिकी कार्यशक्ति कुल मिलाकर हमे गिरानेके लिअे नही, परतु अुठानेके लिअे है; और यह परिणाम अुस निश्चित, भले ही अज्ञात, कार्यका है जो प्रेमका कानून करता है। मानव-जाति कायम है अिसी बातमे जाहिर होता है कि बिखेरनेवाली शक्तिसे मिलानेवाली शक्ति बडी है, दूर ले जानेवाली शक्तिसे नजदीक लानेवाली शक्ति बडी है।

यग अिडिया, १२–११–'३१

अगर प्रेम या अहिंसा हमारे जीवनका धर्म नही है, . . तो समय समय पर होनेवाली अुन लडाअियोमे हम बच नही सकते, जो भयकरतामे अेकसे अेक बढकर होती हैं।

हरिजन, २६–९–'३६

जितने धर्मोपदेशक गुरु आज तक हुअे हैं, अुन सबने अिस नियमका थोडे या बहुत जोरके साथ प्रचार किया है। यदि प्रेम जीवनका धर्म न होता

तो जीवन मृत्युके बीच कायम ही न रहता। जीवन मृत्यु पर अेक शाश्वत नियम है। अगर मनुष्य और पशुमें कोअी बुनियादी फर्क है तो वह यही है कि मनुष्य दिन-दिन अिस धर्मको अधिकाधिक स्वीकार कर रहा है और अपने निजी जीवनमे अुसका पालन कर रहा है। संसारके प्राचीन और अर्वाचीन सभी सन्त अपने अपने ज्ञान और सामर्थ्यके अनुसार प्रेम-जीवनके अिसी सर्वोच्च धर्मके जीवित दृष्टान्त थे। यह सच है कि हमारे भीतरका पशु बहुत बार विजयी होता है। परतु अिससे यह धर्म अप्रमाणित नहीं हो जाता, अुसी पालनकी कठिनाअी जरूर जाहिर होती है। लेकिन अेक अैसे धर्मके पालनका, जो सत्य जितना ही अूचा है, कठिन होना ही स्वाभाविक है। जब अिस धर्मका पालन सार्वत्रिक हो जायगा तब स्वर्गकी भांति पृथ्वी पर भी अीश्वरका राज्य हो जायगा। यह याद दिलानेकी जरूरत नही कि पृथ्वी और स्वर्ग सब हमारे भीतर ही है। अपने भीतरकी पृथ्वीको हम जानते है, पर अपने भीतरके स्वर्गसे हम अपरिचित है। अगर यह मान लिया जाता है कि कुछ लोगोंके लिअे प्रेमधर्मका पालन सभव है, तो यह न मानना धृष्टता है कि और सब लोगोंके लिअे अिसका पालन करना सभव नही है। अभी कुछ समय पहलेके हमारे पूर्वज नर-भक्षण और कअी दूसरी बाते अैसी करते थे जिन्हे आज हम घृणित कहेगे। बेशक अुन दिनोमे भी डिक शेपर्ड जैसे चद व्यक्ति रहे होगे, जिनकी अपने भाअियोको खा जानेमे अिनकार करनेके (अुनके लिअे) विचित्र सिद्धान्तका प्रचार करने पर हसी अुडाअी गअी होगी और कदाचित् जिन्हे अिसके लिअे सताया भी गया होगा।

हरिजन, २६–९–'३६

अीश्वर कोअी अैसी शक्ति नही है, जो दूर कही बादलोमे रहती हो। अीश्वर हमारे भीतर रहनेवाली अदृश्य शक्ति है और पलकें आखोके जितनी निकट है अुनसे भी वह हमारे ज्यादा निकट है। हमारे भीतर अनेक शक्तियां छिपी हुअी पडी है, जिनका पता हमे सतत सघर्षसे लगता है। अिसी प्रकार अगर हम अिस सर्वोच्च शक्तिको दृढ निश्चय और परिश्रमपूर्वक तलाश करे तो अुसे भी पा सकते है। अुसकी प्राप्तिका अैसा अेक मार्ग अहिंसाका है। यह बहुत जरूरी है, क्योंकि अीश्वर हम सबके भीतर है और अिसलिअे हमे प्रत्येक मानव-प्राणीके साथ निरपवाद रूपमे अपनी अेकता सिद्ध करनी पडेगी। विज्ञानकी भाषामे अिसे आश्लेषण (cohesion) या आकर्षणकी

शक्ति कहते हैं। लोकभाषामें अिसे प्रेम कहा जाता है। प्रेम हमें अेक-दूसरेके साथ और ओीश्वरके साथ बांधता है। अहिंसा और प्रेम अेक ही चीज हैं।

(ता० १–६–'४२ के अेक निजी पत्रसे।)

हरिजन, २८–३–'५३

६

ओीश्वर सत्-चित्-आनन्द है

'सत्य' शब्द सत् धातुसे बना है। सत्का अर्थ है—होना या अस्ति, सत्यका अर्थ हुआ—होनेका भाव या अस्तित्व। सत्यके सिवा दूसरी किसी चीजकी हस्ती ही नहीं है। परमेश्वरका सच्चा नाम ही 'सत्' या सत्य है। अिसलिअे परमेश्वर 'सत्य' है, अैसा कहनेकी अपेक्षा 'सत्य' ही परमेश्वर है अैसा कहना अधिक अुचित है। राजा या सरदारके बिना हमारा काम नहीं चलता, अिसलिअे अुनका 'परमेश्वर' नाम अधिक प्रचलित है और रहेगा। लेकिन विचार करनेमें मालूम होगा कि 'सत्' या 'सत्य' ही सच्चा नाम है और यही पूरा अर्थ प्रगट करनेवाला है।

जहां सत्य है वहां ज्ञान—शुद्ध ज्ञान—है ही। जहां सत्य नहीं है वहां शुद्ध ज्ञान असंभव है। अिसलिअे ओीश्वर नामके साथ चित् यानी ज्ञान शब्दकी योजना हुअी है। और जहां सच्चा ज्ञान है वहां आनन्द ही आनन्द होता है, शोक होता ही नहीं। और चूंकि सत्य शाश्वत है अिसलिअे आनन्द भी शाश्वत होता है। अिसी कारणसे ओीश्वरको हम सच्चिदानन्द नामसे भी पहचानते हैं।

अिस सत्यकी आराधनाके लिअे ही हमारी हस्ती है। हमारा प्रत्येक कार्य, प्रत्येक श्वासोच्छ्वास अुसीके लिअे होना चाहिये। अैसा करना सीख लेने पर बाकी सारे नियम हमारे हाथ सहज ही लग जाते हैं और अुनका पालन भी सरल हो जाता है। सत्यके बिना किसी भी नियमका शुद्ध पालन अशक्य है।

सामान्यतः सत्यका अर्थ केवल सच बोलना ही समझा जाता है। लेकिन सत्य शब्दका प्रयोग यहां विशालतर अर्थमें किया गया है। विचारमें, वाणीमें और आचारमें सत्यका होना ही सत्य है। अिस सत्यको जो सम्पूर्णतया समझ लेता है, अुसे जगतमें दूसरा कुछ भी जाननेको नहीं रहता। क्योंकि, जैसा

हम अूपर कह आये है, सारा ज्ञान अुसमे समाया हुआ है। अुसमें जो न समाये वह सत्य नही है, ज्ञान नही है। तो फिर अुसमे सच्चा आनन्द तो हो ही कैसे सकता है? यदि हम अिस कसौटीका अुपयोग करना सीख जायें तो हमें यह जाननेमे देर न लगे कि कौनसा कार्य करने योग्य है और कौनसा त्याज्य है? क्या देखने योग्य है और क्या नही; क्या पढने योग्य है और क्या नही?

पर यह पारसमणिरूप, कामधेनुरूप सत्य प्राप्त कैसे किया जाय? अिसका अुत्तर भगवानने दिया है—अभ्यास और वैराग्यसे। अभ्यास यानी अेकमात्र सत्यके लिअे अुत्कट अधीरता और वैराग्य यानी सत्यके सिवा और दूसरी सारी वस्तुओंके विषयमे आत्यंतिक अुदासीनता। फिर भी हम देखेंगे कि अेकके लिअे जो सत्य है वह दूसरेके लिअे असत्य हो सकता है। अिससे घबरानेका कोअी कारण नही है। जहा शुद्ध प्रयत्न है वहा समझमें आ जायगा कि भिन्न जान पड़नेवाले सब सत्य अेक ही पेड़के असख्य भिन्न दिखाअी देनेवाले पत्तोंके समान है। परमेश्वर स्वयं भी क्या प्रत्येक मनुष्यको भिन्न नही दिखायी देता? फिर भी हम जानते है कि वह अेक ही है। पर सत्य नाम ही परमेश्वरका है, अिसलिअे जिसे जो सत्य जान पडे अुसीके अनुसार वह चले तो अुसमें दोष नही है, अितना ही नही बल्कि वही अुसका कर्तव्य है। फिर यदि अुसमें भूल होगी भी तो वह अवश्य सुधर जायगी। कारण, सत्यकी शोधके पीछे तपश्चर्या होती है यानी खुद कष्ट सहन करनेकी, अुसके पीछे मर-मिटनेकी भावना होती है। अिसलिअे अुसमे स्वार्थकी तो गध तक नही होती। अैसी निःस्वार्थ शोधमें लगा हुआ कोअी भी मनुष्य आज तक अन्तपर्यन्त गलत रास्ते पर नही गया। गलत रास्ते पर पाव पडते ही वह ठोकर खाता है और फिर सीधे रास्ते पर आ जाता है। अिसलिअे सत्यकी आराधना ही सच्ची भक्ति है। और भक्ति तो 'सिरका सौदा' है या यों कहे कि हरिका मार्ग है, जिसमें कायरताके लिअे कोअी स्थान नही, जिसमें हार नामकी कोअी चीज है ही नही। वह 'मरकर जीनेका मत्र' है।

अिस प्रसगमें हरिश्चन्द्र, प्रह्लाद, रामचद्र, अिमाम हसन, अिमाम हुसैन, अीसाअी सतो आदिके अुदाहरण विचारने योग्य है। यदि हम सब बालक और वृद्ध, स्त्री और पुरुष अुठते-बैठते, खाते-पीते, खेलते और काम करते हुअे प्रतिदिन सारे समय अपना सपूर्ण ध्यान सत्यकी ही खोजमें लगायें और जब तक शरीरके नाशके साथ हम सत्यके साथ तद्रूप न हो जायं तब तक अैसा

ही करते रहे तो कितना अच्छा हो! यह सत्यरूप परमेश्वर मेरे लिअे रत्नचिन्तामणि सिद्ध हुआ है, हम सबके लिअे वह वैसा ही सिद्ध हो।

मगलप्रभात, अध्याय १

७

ओश्वर और प्रकृति

हम न तो ओश्वरके सब कानूनोंको जानते है और न हमे अुनकी कार्य-पद्धति ही मालूम है। बडेसे बडे वैज्ञानिक या अध्यात्मवादीका ज्ञान भी रजकण जितना ही है। यदि ओश्वर मेरे लिअे अपने पार्थिव पिताकी भाति कोअी व्यक्ति नही है, तो अिसका मतलब यह है कि वह अुससे अनन्त गुना अधिक है। मेरे जीवनकी छोटीसे छोटी बात भी अुसके शासनके अधीन है। मै शब्दश: मानता हू कि अुसकी मर्जीके बगैर पत्ता भी नही हिलता। अेक अेक सास जो मै लेता हू अुसकी कृपा पर निर्भर है।

हरिजन, १६–२–'३४

वह और अुसका कानून अेक ही है। वह कानून ही ओश्वर है। अुसका जो भी गुण बताया जाता है वह केवल गुण नही है। वह स्वय ही गुणरूप है। वह सत्य है, प्रेम है, कानून है और हजार अन्य वस्तुअे है, जो मनुष्यकी बुद्धि सोच सकती है।

हरिजन, १६–२–'३४

प्रकृतिके नियम अटल है, अपरिवर्तनीय है, और चमत्कारका अर्थ यदि प्रकृतिके नियमोका भग या अुल्लघन माना जाय, तो चमत्कार नामकी कोअी चीज ही नही होती। परतु हम सीमित प्राणी तरह तरहकी कल्पनाअे करते है और अपनी क्षुद्र मर्यादाअे ओश्वर पर थोपते है। हम ओश्वरकी नकल कर सकते है, मगर वह हमारा अनुकरण नही कर सकता। समयका विभाजन हमारे लिअे है, अुसके लिअे नही। अुसके लिअे काल अनन्त है। हमारे लिअे भूत है, वर्तमान है, भविष्य है। और महज सौ वर्षका मानव-जीवन अनन्त कालके सागरमे अेक बूदके सिवा और क्या है?

हरिजन, १७–४–'३७

ओश्वरने अपने खुदके कानूनोंमें संशोधन करनेका स्वयं अपने हाथमें कोअी अधिकार नहीं रखा है और न अुसे अुनका कोअी संशोधन करनेकी जरूरत है। वह सर्वशक्तिमान है और सर्वज्ञ है। वह अेकसाथ स्पष्टतासे और बिना किसी प्रयासके भूत, वर्तमान और भविष्य तीनोंको जानता है। अिसलिअे अुसके लिअे किसी चीजका पुनर्विचार, संशोधन, परिवर्तन या सुधार करनेका प्रश्न ही नहीं अुठता।

यंग अिंडिया, २५–११–'२६

हमारा यह पार्थिव जीवन आंखोंको [illegible] चूडियोंसे भी अधिक क्षणभंगुर है। आप काचकी चूडियोंको किसी पेटीमें बन्द करके सुरक्षित रखें तो हजारों वर्ष तक वे टिक सकती हैं। परन्तु यह पार्थिव जीवन अितना क्षणभंगुर है कि पल भरमें नष्ट हो सकता है। अिसलिअे हमें जो स्वल्प अवकाश दिया गया है अुसका हमें सदुपयोग करना चाहिये, अवगुणोंको छोड़ने चाहिये, हृदयकी शुद्धि करना चाहिये और मृत्यु होने पर — जो साधारण क्रममें अथवा भूकम्प या दूसरी प्राकृतिक विपत्तियोंके द्वारा कभी भी आ सकती है — अपने मालिकके सामने खड़े होनेको तैयार रहना चाहिये।

हरिजन, २–२–'३४

सभ्य और असभ्य सारे संसारकी तरह मेरा भी यह विश्वास है कि मानव-जाति पर आनेवाली तमाम विपत्तियां (जैसे १९३४ का बिहार-भूकंप) हमारे पापोंके कारण आती हैं। जब यह विश्वास हृदयमें पैदा होता है तो लोग प्रार्थना करते हैं, पश्चात्ताप करते हैं और आत्मशोधन करते हैं। . मुझे ओश्वरके अुद्देश्यका बहुत सीमित ज्ञान है। अैसी विपत्तियां ओश्वर अथवा प्रकृतिकी सनक नहीं हैं। वे अुतने ही निश्चित रूपमें नियत नियमोंके अधीन होती हैं, जितनी ग्रहोंकी चाल अुनकी गतिके नियमोंके अधीन होती है। बात अितनी ही है कि अिन घटनाओंका नियंत्रण करनेवाले नियमोंका हमें ज्ञान नहीं होता और अिसलिअे हम अुन्हें आकस्मिक विपत्तियां अथवा प्राकृतिक अुत्पात कहते हैं।

हरिजन, २–२–'३४

प्रत्येक भौतिक विपत्तिके पीछे कोअी ओश्वरीय हेतु होता है। यह बिलकुल संभव है कि विज्ञानके संपूर्णताको पहुंचने पर किसी दिन हमें वह पहलेसे ही

यह भी बता सके कि भूचाल कब आयेंगे, जैसे आजकल वह हमे ग्रहणके बारेमे बता देता है। यह मानव मस्तिष्ककी अेक और विजय होगी। परतु अैसी अेक नही, असख्य विजयोसे भी हमारे अन्तरकी शुद्धि नही हो सकती और अिस अन्त शुद्धिके बिना किसी भी सफलताका कोअी मूल्य नही है।

हरिजन, ८–६–'३५

जो लोग भीतरी शुद्धिकी आवश्यकताको समझते है, अुनसे मै कहूगा कि वे मेरे साथ यह प्रार्थना करे कि हमे अिन विपत्तियोके पीछे ओीश्वरका हेतु समझनेका बुद्धि मिले, वे हमे विनम्र बनाये, जब मृत्युका बुलावा आ पहुचे तब अपने सिरजनहारके समक्ष खडे होनेको हमे तैयार करे और हम अपने विपत्तिग्रस्त भाअियोका — फिर वे कोअी भी हो — दु ख बटानेके लिअे सदा अुद्यत रहे।

हरिजन, ८–६–'३५

यह कहना कि ओीश्वर अिस दुनियामे बुराअी होने देता है भले ही कानोंको अच्छा न लगे, परतु यदि वह भलाअीके लिअे जिम्मेदार माना जाता है तो अिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अुसे बुराअीके लिअे भी जिम्मेदार मानना पडेगा। क्या ओीश्वरने रावणको अद्वितीय बलका प्रदर्शन नही करने दिया? अिस बातको समझनेमे जो कठिनाअी महसूस होती है, अुसका मूल कारण यह है कि ओीश्वर क्या है, अिस बातकी हमे ठीक पहचान नही है। ओीश्वर कोअी व्यक्ति नही है। वह वर्णनसे परे है। वह कानून बनानेवाला है, कानून भी है और अुसे कार्यान्वित करनेवाला भी है। कोअी मानव-प्राणी अपने ही हाथमें ये सारी सत्ताअे लेनेकी गुस्ताखी नही कर सकता। अगर करे तो पूरा निरकुश समझा जायगा। ये सत्ताअे तो अुसीको शोभा देती है जिसे हम ओीश्वर कहकर पूजते है।

हरिजन, २४–२–'४६

शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टिसे ओीश्वर भलाअी और बुराअी दोनोके मूलमे है। वह कातिलका खजर और चीरफाड करनेवाले डॉक्टरका चाकू, दोनोका संचालन करता है। परतु अिसके बावजूद हमारे लिअे, हमारे जीवनके हितकी

दृष्टिसे, भलाओ और बुराओ ओक-दूसरेसे सर्वथा भिन्न और असगत है। हमारे लिओ वे प्रकाश और अधकारकी, ओश्वर और शैतानकी प्रतीक है।

हरिजन, २०-२-'३७

मै ओश्वरको कोओ व्यक्ति नही मानता। मेरे लिओ सत्य ही ओश्वर है। और ओश्वरका कानून तथा ओश्वर अिस अर्थमे भिन्न वस्तुओं या तथ्य नही है, जिस अर्थमे कोओ दुनियावी राजा और अुसका कानून अलग अलग होते है। चूकि ओश्वर स्वय कानून है, अिसलिओ यह कल्पना नही की जा सकती कि वह कानूनको तोडता होगा। अिसलिओ वह हमारे कार्योका नियत्रण नही करता और स्वय हट नही जाता। जब हम कहते है कि वह हमारे कार्योका नियत्रण करता है तब हम केवल मानव-भाषाका व्यवहार करते है और अुसे सीमित बनाते है। अन्यथा वह और अुसका कानून सब जगह विद्यमान है और सबका शासन करते है। अिसलिओ मै औसा नही समझता कि वह हमारी हर प्रार्थनाका हर तफसीलमे अुत्तर देता है। परतु अिसमे शक नही कि वह हमारे कार्यका नियत्रण करता है और मै अक्षरश: मानता हू कि घासकी ओक पत्ती भी अुसकी मर्जीके बगैर न तो अुगती है और न हिलती है। हमें जो अिच्छा-स्वातत्र्य प्राप्त है, वह खचाखच भरे जहाजके मुसाफिरके अिच्छा-स्वातत्र्यसे भी कम है।

"ओश्वरसे लौ लगाते हुओ क्या आपको स्वतंत्रताकी भावना अनुभव होती है?"

होती है। तब मुझे वह पराधीनता अनुभव नही होती, जो यात्रियोंसे भरी नाव पर बैठे हुओ यात्रीको होती है। यद्यपि मै जानता हू कि मेरी स्वतत्रता ओक मुसाफिरकी स्वतत्रतासे भी कम है, फिर भी मै अुसकी कद्र करता हू; क्योकि गीताका यह अुपदेश मेरी रग-रगमे समा गया है कि मनुष्य अिस अर्थमे अपने भाग्यका विधाता स्वय ही है कि अुसे अिस स्वतत्रताका अपनी अिच्छानुसार अुपयोग करनेकी स्वतत्रता है। परतु परिणामोंका नियता वह नही है। जहा अुसने अपनेको नियता माना वही वह ठोकर खाता है।

हरिजन, २३-३-'४०

८

अीश्वर दरिद्रनारायणके रूपमे

मानव-जाति अीश्वरको — जो मनुष्यकी बुद्धिके लिअे अगम्य है और जिसका वैसे कोअी नाम नही हो सकता — जिन अनन्त नामोसे पहचानती है, अुनमे से अेक नाम दरिद्रनारायण है, अुसका अर्थ है गरीबोंका यानी अुनके हृदयमे प्रगट होनेवाला अीश्वर।

यग अिडिया, ४–४–'२९

गरीबोंके लिअे रोटी ही अध्यात्म है। अुन करोडो भूखोंको आप और किसी तरह प्रभावित नही कर सकते। कोअी दूसरी बात अुनका ध्यान आकर्षित नही कर सकती। हा, आप अुनके पास भोजन लेकर जाअिये, तो वे आपको ही अपना अीश्वर समझ लेगे। वे और कोअी विचार कर ही नही सकते।

यग अिडिया, ५–५–'२७

अिन्ही हाथोंसे मैने अुनके फटे-पुराने कपडोंकी गाठोंमे बधे मैले पैसे अिकट्ठे किये है। अुनसे आधुनिक प्रगतिकी बाते न कीजिये। अुनके सामने व्यर्थ अीश्वरका नाम लेकर अुनका अपमान न कीजिये। हम अुनसे अीश्वरकी बात करेगे तो वे आपको और मुझे राक्षस बतायेगे। अगर वे किसी अीश्वरको पहचानते है, तो अुसके बारेमे अुनकी कल्पना यही हो सकती है कि वह लोगोको आतंकित करनेवाला, दण्ड देनेवाला, अेक निर्दय अत्याचारी है।

यग अिडिया, १५–९–'२७

मुझे अुनके सामने अीश्वरका सन्देश ले जानेकी हिम्मत नही होती। मै अुन करोडों भूखोंके सामने, जिनकी आखोमे तेज नही और जिनका अीश्वर अुनकी रोटी ही है, अीश्वरका सन्देश ले जाअू तो फिर वहा खडे अुस कुत्तेके सामने भी ले जा सकता हू। अुनके सामने अीश्वरका सन्देश ले जाना हो तो मुझे अुनके सामने पवित्र परिश्रमका सन्देश ही ले जाना चाहिये। हम यहा बढ़िया नाश्ता अुडा कर बैठे हो और अुससे भी बढिया भोजनकी आशा रखते हो तब अीश्वरकी बात करना भला मालूम होता है,

मगर जिन लाखों लोगोंको दो जून खानेको भी नसीब नहीं होता अुनसे मैं ओश्वरकी बात कैसे कहूं? अुनके सामने तो ओश्वर रोटी और मक्खनके रूपमें ही प्रगट हो सकता है। भारतके किसानोंको रोटी अपनी जमीनसे मिल रही थी। मैंने अुन्हें चरखा दिया ताकि अुन्हें थोड़ा मक्खन भी मिल जाय। अगर आज यहां मैं लंगोटी पहनकर आया हूं तो अिसका कारण यही है कि मैं अुन लाखों आधे भूखे, आधे नंगे और मूक मानव-प्राणियोंका अेकमात्र प्रतिनिधि बनकर आया हूं।

यंग अिंडिया, १५–१०–'३१

मेरा दावा है कि मैं अपने लाखों-करोड़ों देशवासियोंको जानता हूं। मैं दिनरात अुनके साथ रहता हूं। मुझे अेकमात्र अुन्हींकी चिन्ता है, क्योंकि मैं अुस ओश्वरके सिवा, जो लाखों मूक जनोंके हृदयोंमें निवास करता है, और किसी ओश्वरको नहीं मानता। वे अुसे नहीं पहचानते, पर मैं पहचानता हूं। और मैं अुस ओश्वरकी जो सत्य है या अुस सत्यकी जो ओश्वर है अिन लाखों लोगोंकी सेवाके द्वारा ही पूजा करता हूं।

हरिजन, ११–३–'३९

मैं तो कहूंगा कि अेक तरहसे हम सब चोर हैं। अगर मैं कोअी अैसी चीज लेता हूं जिसकी मुझे तात्कालिक आवश्यकता नहीं है और अुसे अपने पास रखता हूं तो मैं अुसे किसी दूसरेसे चुराता ही हूं। यह प्रकृतिका निरपवाद बुनियादी नियम है कि प्रकृति हमारी जरूरतके लायक रोज पैदा करती है, और अगर हरअेक अपने लिअे अुतना ही ले जितना अुसके लिअे जरूरी हो और अुससे अधिक न ले, तो अिस दुनियामें कोअी कंगाल नहीं रहेगा, कोअी मनुष्य भूखसे नहीं मरेगा।

महात्मा गांधी (१९१८); पृ० १८९

भारतमें लाखों-करोड़ों आदमी अैसे हैं जिन्हें दिनमें केवल अेक जून खाकर संतोष कर लेना पड़ता है और अिस अेक जूनमें भी अुन्हें सूखी रोटी और चुटकी-भर नमकके सिवा और कुछ नहीं मिलता। जब तक अिन करोड़ोंको खानेको अन्न और पहननेको कपड़ा नहीं मिल जाता तब तक आपके और हमारे पास जो कुछ है अुसे रखनेका सचमुच हमें कोअी हक नहीं है। हमें और आपको अिस बातका खयाल होना चाहिये, हमें अपनी जरूरतें

तदनुसार कर्म करनी चाहिये और स्वेच्छापूर्वक कष्ट भी सहन करने चाहिये, ताकि अुन लोगोंकी सेवा-शुश्रूषा हो सके और अुन्हें अन्न-वस्त्र मिल सकें।

महात्मा गांधी (१९१८); पृ० १८९

९

ओीश्वरकी आवाज

ओीश्वरकी आवाज सुननेका मेरा दावा नया नहीं है। जहां तक मैं जानता हूं अुसे सिद्ध करनेका अिसके सिवा और कोओी रास्ता नहीं है कि परिणामोंकी जांच की जाय। ओीश्वर अपनेको सिद्ध करनेका विषय बनाये और वह भी अपनी ही सतानोंके द्वारा, तो ओीश्वर ओीश्वर न रह जाय। किन्तु वह अपने स्वेच्छा-प्रेरित सेवकको कड़ीसे कड़ी परीक्षाओंमें से पार हो जानेकी शक्ति अवश्य देता है। मैं पिछले पचास वर्षोंसे भी ज्यादा समयसे अिस अत्यन्त कठोर स्वामीका स्वेच्छा-प्रेरित दास रहा हूं। अुसकी आवाज ज्यों-ज्यों वर्ष बीते हैं त्यों-त्यों मुझे अधिकाधिक सुनाओी पड़ती रही है। अुसने मुझे अधिकसे अधिक अंधकारपूर्ण घड़ीमें भी छोड़ा नहीं है। कओी बार तो अुसने मुझे खुद मेरे ही खिलाफ बचाया है और मुझे रंचमात्र भी स्वाधीनता नहीं दी है। अुसके प्रति मेरा समर्पण जितना अधिक रहा है अुतना ही मेरा आनन्द बढ़ा है।

हरिजन, ६–५–'३३

जहां तक मुझे मालूम है किसीने अिस बात पर शंका नहीं की है कि अन्तर्नाद कुछ लोगोंको सुनाओी पड़ सकता है। और यदि अन्तर्नादके नाम पर बोलनेका किसी अेक भी व्यक्तिका दावा सच्चा ठहरे तो अिसमें जगतका लाभ ही है। यह दावा बहुतसे करेंगे, किन्तु वे सब अुसे सत्य सिद्ध नहीं कर सकेंगे। लेकिन झूठा दावा करनेवालोंको रोकनेके लिअे अुस दावेको दबा रखना ठीक नहीं होगा और दबाना नहीं चाहिये। अन्तर्नादका दावा यदि कओी लोग सचमुच कर सकें तो अिसमें कोओी आपत्ति नहीं है। लेकिन दुर्भाग्यवश दंभका कोओी अिलाज नहीं है। बहुतसे लोग सद्‌गुणोंका ढोंग और दिखावा कर सकते

हैं, अिसलिअे अुन्हें दबाकर रखना ठीक नहीं हो सकता। अन्तर्नादके नाम पर बोलनेका दावा करनेवाले लोग सारी दुनियामें हमेशा होते आये हैं। लेकिन अुनकी स्वल्पकालिक प्रवृत्तियोंसे दुनियाका कोअी नुकसान नहीं हुआ है। कोअी मनुष्य अन्तर्नाद सुन सके, अुसके पहले अुसे लंबी और काफी कठोर साधना करनी पडती है। और जब सचमुच जो चीज सुनाअी पड़ती है वह अन्तर्नाद ही होता है तब अुसे पहचाननेमें भूल हो ही नहीं सकती। कोअी दुनियाको चिरकाल तक धोखा नहीं दे सकता। अिसलिअे यदि मेरे जैसा अल्प मनुष्य अपनी प्रामाणिक बात कहनेमें सकोच नहीं करता, और जब अुसे विश्वास-पूर्वक लगता है कि अुसने अन्तर्नाद सुना है अुस समय अुसके नाम पर बोलनेकी हिम्मत करता है, तो अुससे दुनियामें अंधाधुंधी मचनेका कोअी भय नहीं है।

हरिजन, १८–३–'३३

मेरे लिअे अीश्वरकी, अन्तःकरणकी या सत्यकी आवाज या जिसे मैं अन्तर्नाद कहता हूं — सब अेक ही अर्थके सूचक शब्द हैं। मैंने अीश्वरकी कोअी आकृति नहीं देखी। अुसकी मैंने कभी कोशिश नहीं की, क्योंकि मैंने हमेशा अीश्वरको निराकार माना है। मैंने जो आवाज सुनी, वह दूरसे आ रही मालूम होती थी, पर साथ ही बिलकुल समीप भी जान पडती थी। वह आवाज अैसी असंदिग्ध थी जैसे कोअी मनुष्य प्रत्यक्ष हमसे कुछ कह रहा हो। अुसे किसी तरह टाला नहीं जा सकता था। जिस समय मैंने अुसे सुना, मैं कोअी सपना नहीं देख रहा था। मैं बिलकुल जाग्रत था। आवाज सुननेके पहले मेरे हृदयमें भारी मंथन चल रहा था। अेकाअेक यह आवाज सुननेमें आयी। मैंने अुसे ध्यानसे सुना। मुझे निश्चय हो गया कि वह अंतरात्माकी ही आवाज है और मेरा चित्त जो व्याकुल था शान्त हो गया। मैंने निश्चय कर लिया, अनशनका दिन और अुसके आरंभका समय तय हो गया। मेरा हृदय अुल्लाससे भर गया। यह सब रातके ११ और १२ के बीचमें हुआ। मेरा मन ताजा हो गया और अुसके बारेमें मैं वह टिप्पणी लिखने लगा जो कि पाठकोंने देखी ही होगी।

हरिजन, ८–७–'३३

क्या मैं अिस बातका कोअी प्रमाण दे सकता हूं कि यह अन्तरात्माकी आवाज ही थी, मेरे अुत्तप्त मस्तिष्ककी कोअी कल्पना-तरंग नहीं थी? जो

विश्वास नही करता अैसे शकाशीलके लिअे मेरे पास और कोअी प्रमाण नही है। अुसकी अिच्छा हो तो वह कह सकता है कि यह सब भ्रम है और मै आत्मवचनाका शिकार हुआ हू। मुमकिन है अैसा ही हुआ हो। मै अुसके विरुद्ध कोअी प्रमाण नही दे सकता। लेकिन यह मै अवश्य कह सकता हू कि मेरे खिलाफ सारी दुनिया अेकमतसे अभिप्राय दे तो भी मुझे अिस विश्वाससे नही हटा सकती कि मैने जो आवाज सुनी वह ओीश्वरकी ही आवाज थी।

हरिजन, ८-७-'३३

लेकिन कुछ लोग तो अैसा मानते है कि ओीश्वर स्वय हमारी कल्पनाकी अुपज है। अगर यह विचार मान लिया जाय तब तो कुछ भी सत्य नही है, सब कुछ हमारी कल्पनाकी ही अुपज है। मगर तब भी जब तक मेरे अूपर मेरी कल्पनाकी सत्ता है तब तक तो मै अुसके अधीन रह कर ही व्यवहार कर सकता हू। अत्यन्त वास्तविक वस्तुअे भी सापेक्ष-रूपमे ही वास्तविक है। मेरे लिअे तो मैने जो आवाज सुनी वह मेरी हस्तीसे भी ज्यादा वास्तविक थी। अुसने मुझे कभी धोखा नही दिया है, और दूसरोका भी यही अनुभव है।

हरिजन, ८-७-'३३

और अिस आवाजको जो चाहे सुन सकता है। वह हरअेकके अन्दर है। लेकिन दूसरी चीजोंकी तरह अुसके लिअे भी निश्चित पूर्व-तैयारीकी आवश्यकता है।

हरिजन, ८-७-'३३

भ्रमका तो कोअी प्रश्न ही नही है। मैने अेक सीधीसादी वैज्ञानिक बात कही है। जिनमे आवश्यक योग्यता प्राप्त करनेका धैर्य और आकाक्षा हो वे सब अिसकी जाच कर सकते है। यह योग्यता भी समझनेमे नितान्त सरल और जिनमे अुसे प्राप्त करनेका सकल्प-बल हो अुनके लिअे नितान्त आसान है। मै तो अितना ही कहूगा. "तुम्हे किसी दूसरेका नही, केवल अपना ही विश्वास करना है। तुम अिस अन्तरकी आवाजको सुननेकी कोशिश करो। 'अन्तरकी आवाज' यह प्रयोग यदि तुम्हे ठीक नही मालूम हो तो तुम अुसे 'बुद्धिका आदेश' कह सकते हो। तब तुम बुद्धिका आदेश जाननेका प्रयत्न करो और अुसका पालन करो। तुम ओीश्वरका नाम नही लेना चाहते

तो मत लो, किसी दूसरी चीजका नाम लो। अन्तमें तुम देखोगे कि नाम कुछ भी हो, यह चीज ओश्वर ही है। कारण, सद्भाग्यसे अिस विश्वमें ओश्वरके सिवा और कुछ है ही नहीं।" मैं यह भी कहूंगा कि अन्तरकी आवाजकी प्रेरणा पर चलनेका दावा करनेवाले सब लोगोंको सचमुच यह प्रेरणा मिल चुकी होती है, अैसी बात नहीं है। दूसरी मानसिक शक्तियोंकी तरह अन्तरात्माकी आवाज सुननेकी क्षमता प्राप्त करनेके लिअे भी पूर्व-प्रयत्न और तालीमकी जरूरत होती है, शायद किसी दूसरी क्षमताकी प्राप्तिके लिअे जितना चाहिये अुससे कहीं अधिक प्रयत्न और तालीमकी। लेकिन अुन हजारों लोगोंमें से, जो अुसे सुननेका दावा करते हैं, अगर चन्द भी अपना दावा सही साबित कर सके, तो हमें अिन शकास्पद दावेदारोंका खतरा अुठाना चाहिये। जो व्यक्ति ओश्वरीय प्रेरणा या अन्तरकी आवाजके आदेशके अनुसार चलनेका झूठा दावा करता है, अुसे अपने अिस झूठका किसी पार्थिव राजाके नाम पर झूठी सत्ताका दावा करनेवालेको जो परिणाम भुगतना पड़ता है, अुससे अधिक बुरा परिणाम भुगतना पडता है। दूसरेको तो, भेद खुल जाने पर, मात्र शारीरिक दण्ड ही भोगना पडता है, लेकिन पहलेको शरीर और आत्मा दोनोंकी क्षति अुठानी पडती है। अुदार आलोचकोंने मुझ पर बेअीमानीका दोष नहीं लगाया है, लेकिन अुनका खयाल है कि बहुत मुमकिन है मुझे कोअी भ्रम हो गया है। अैसा हो, तो भी परिणाम अुससे बहुत भिन्न होगा जो कि झूठा दावा करने पर होगा। मैं अेक विनम्र साधक होनेका दावा करता हूं, अैसी स्थितिमें मुझे बहुत सावधान रहनेकी, अपने मनका सही सन्तुलन बनाये रखनेकी बडी आवश्यकता है। अैसे साधकको पहले अपनेको शून्यवत् कर देना होता है, तब कहीं ओश्वर अुसका मार्गदर्शन करता है। मैं समझता हूं कि अिस सवाल पर अितना कहना काफी है।

'दि बाम्बे क्रानिकल', १८-११-'३३

१०

ओीश्वरका साक्षात्कार

मेरे लिअे सत्य सर्वोपरि सिद्धान्त है, जिसमे दूसरे अनेक सिद्धान्तोका समावेश हो जाता है। यह सत्य वाणीका स्थूल सत्य ही नही है, परन्तु विचारका सत्य भी है और न केवल हमारी कल्पनाका सापेक्ष सत्य है, वल्कि स्वतत्र चिरस्थायी सत्य है, यानी परमेश्वर ही है। ओीश्वरको असख्य व्याख्याअे है, क्योंकि अुसकी विभूतियां भी अगणित है। ये विभूतिया मुझे आश्चर्यचकित करती है और अेक क्षणके लिअे स्तव्ध भी कर देती है। परन्तु मै ओीश्वरकी पूजा सत्यके रूपमे ही करता हू। मैने अुसे अभी तक पाया नही है, परन्तु मै अुसकी खोज कर रहा हू। अिस खोजमे अपनी प्रियसे प्रिय वस्तुओंका भी त्याग करनेको मै तैयार हू। और मुझे विश्वास है कि अिस शोधरूपी यज्ञमे अपने शरीरको भी होमनेकी मेरी तैयारी और शक्ति है। लेकिन जव तक मै अिस केवल सत्यका साक्षात्कार नही कर लेता तब तक मैने जिस सापेक्ष सत्यकी कल्पना की है अुसीको मुझे पकडे रखना चाहिये। तब तक वह सापेक्ष सत्य ही मेरा प्रकाशस्तभ, मेरी ढाल और मेरा कमरवन्द रहेगा। यद्यपि यह मार्ग खाडेकी धारकी तरह तग और दुर्गम है, फिर भी मेरे लिअे वह जल्दीसे जल्दीका और आसानसे आसान मार्ग रहा है। चूकि मैने अिस मार्गका कठोरतासे अनुसरण किया है, अिसलिअे मेरी हिमालय जैसी वडी भूले भी मुझे तुच्छ-सी प्रतीत हुअी है। कारण, अिस मार्गने मुझे विनाशसे वचाया है और मै अपने ज्ञानके अनुसार आगे बढता रहा हू। अपनी प्रगतिमे मुझे केवल सत्यकी, ओीश्वरकी हल्की हल्की झाकिया होती रही है और मेरा यह विश्वास दिन-दिन वढ रहा है कि वही सत्य है, और सव कुछ असत्य है।

आत्मकथा (अंग्रेजी) १९४८; पृ० ६–७

मेरा यह विश्वास भी वढता रहा है कि जो कुछ मेरे लिअे सभव है वह अेक वच्चेके लिअे भी सभव है और यह कहनेके लिअे मुझे अुचित कारण भी मिले है। सत्यकी खोजके साधन जितने कठिन है अुतने ही सरल

भी है। किसी अहकारी व्यक्तिको वे सर्वथा असभव और अेक निर्दोष बालकको बिलकुल सभव दिखाओ दे सकते है। सत्यके शोधकको रजकणसे भी नम्र होना चाहिये। दुनिया धूलको पैरो तले रौदती है, परन्तु सत्यके शोधकको अितना नम्र बन जाना चाहिये कि धूल भी अुसे कुचल सके। तभी और तभी अुसे सत्यकी झाकी मिलेगी।

आत्मकथा (अग्रेजी) १९४८; पृ० ६–७

ओश्वरमे अिस विश्वासकी बुनियाद श्रद्धा पर रखनी होगी जो बुद्धिसे परे है। वास्तवमे कथित साक्षात्कारकी जडमे भी श्रद्धाका कुछ तत्त्व होता है, क्योकि अुसके बिना अुसकी सत्यता सिद्ध नही हो सकती। वस्तुतः अैसा ही होना चाहिये। अपने शरीरकी मर्यादाओको कौन लाघ सकता है? मेरा मत है कि अिस सशरीर जीवनमे सपूर्ण साक्षात्कार असभव है। अिसकी जरूरत भी नही। मानव-प्राणी जितनी अधिकसे अधिक आध्यात्मिक अुच्चता प्राप्त कर सकते है अुसके लिअे जरूरत सिर्फ अटल और सजीव श्रद्धाकी ही है। ओश्वर हमारे अिस पार्थिव शरीरके बाहर नही है। अिसलिअे बाहरी प्रमाण कुछ हो भी तो वह बहुत कामका नही है। अिन्द्रियो द्वारा ओश्वरको पहचाननेमे हमें हमेशा असफलता होगी, क्योकि वह अिन्द्रियोसे परे है। हा, हम अिन्द्रियोसे अपनेको विरत कर ले तो अुसका अनुभव कर सकते है। दैवी सगीत हमारे भीतर सतत चलता रहता है, परन्तु अिन्द्रियोके कोलाहलमे वह कोमल सगीत डूब जाता है, क्योकि वह अिन्द्रियोसे प्रतीत होनेवाली वस्तुसे भिन्न और अनन्त गुना श्रेष्ठ है।

हरिजन, १३–६–'३६

मैंने देख लिया और मैं मानता हू कि ओश्वर हमारे सामने शरीर धारण करके नही परन्तु कार्यके रूपमे आता है। यही कारण है कि हमारा बुरेसे बुरे समयमे अुद्धार हो जाता है।

हरिजन, १३–६–'३६

मेरे हर बारके अनुभवने—जो सदा अेकसा रहा है—मुझे विश्वास करा दिया है कि सत्यके सिवा और कोओ ओश्वर नही है। . . . सत्यकी जो अुडती हुओ छोटी छोटी झाकिया मुझे हो पाओ है, अुनसे सत्यके अुस अवर्णनीय तेजकी कल्पना नही हो सकती, जो हमारी आखोसे रोज दिखाओ

देनेवाले सूर्यके तेजसे करोड गुना अधिक है। सच तो यह है कि जो कुछ मैंने देखा है वह अुस महान प्रकाशकी हल्की-सी झलकमात्र है। परतु मैं अपने तमाम प्रयोगोंके परिणामस्वरूप विश्वासपूर्वक अितना कह सकता हू कि सत्यके सपूर्ण दर्शन अहिंसाके सपूर्ण पालनके बाद ही हो सकते हैं।

यग अिंडिया, ७–२–'२९

मुझे अीश्वरकी अिच्छाका कोअी खास साक्षात्कार नही हुआ है। मेरा दृढ विश्वास है कि वह अपनेको प्रत्येक मानव-प्राणीके सामने रोज प्रगट करता है, मगर हम भीतरकी अिस शान्त आवाजके लिअे अपने कान बन्द कर लेते हैं। हम अपने सामनेके अग्निस्तभके प्रति आखे मूद लेते हैं। मैं अुसकी सर्वव्यापकताको अनुभव करता हू।

यग अिंडिया, २५–५–'३१

मनुष्यका अतिम लक्ष्य अीश्वर-साक्षात्कार है, और अुसकी सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सभी प्रवृत्तिया अीश्वर-दर्शनके अतिम अुद्देश्यसे प्रेरित होनी चाहिये। समस्त मानव-प्राणियोंकी तात्कालिक सेवा अिस प्रयत्नका आवश्यक अग बन जाती है। कारण, अीश्वरको पानेका अेकमात्र अुपाय यह है कि अुसे अुसकी सृष्टिमें देखा जाय और अुसके साथ अेकता अनुभव की जाय। यह सबकी सेवासे ही हो सकता है। मैं सपूर्णका अेक अविभाज्य अग हू और मैं अुसे शेष मानवतासे अलग नही पा सकता। मेरे देशवासी मेरे निकटतम पडोसी हैं। वे अितने असहाय, अितने साधनहीन, अितने जड हो गये हैं कि मुझे अुनकी सेवामें अपनी सारी शक्ति लगा देनी चाहिये। अगर मुझे यह विश्वास हो जाय कि मैं अुसे हिमालयकी किसी गुफामें पा सकता हू तो मैं तुरत वहाके लिअे चल पड़ूगा। परतु मैं जानता हू कि मैं अुसे मानवतासे अलग कही नही पा सकता।

हरिजन, २९–८–'३६

जो अभेद्य अधकार हमारे चारो ओर छाया हुआ है वह शाप नही, बल्कि वरदान है। अुसने हमें अपने सामनेका कदम ही देखनेकी शक्ति दी है और अगर दैवी प्रकाश अुस कदमको हमें दिखा देता है तो यह हमारे लिअे काफी है। तब हम न्यूमैनके साथ मिलकर गा सकते हैं कि 'मेरे लिअे अेक कदम

ही काफी है।’ और अपने पिछले अनुभवसे हम विश्वास रख सकते हैं कि दूसरा कदम हमें यथासमय हमेशा दिख जायगा। दूसरे शब्दोंमें, वह अभेद्य अंधकार जैसी हम कल्पना करते हैं वैसा अभेद्य नहीं है। परन्तु अधीर होकर जब हम अुस अेक कदमसे आगे देखना चाहते हैं तब वह अंधकार हमें अभेद्य मालूम होता है।

हरिजन, २०–४–’३४

मुझे आपके और मेरे अिस कमरेमें बैठे होनेका जितना विश्वास है, अुससे अधिक औश्वरके अस्तित्वका विश्वास है। और मैं यह भी कह सकता हूं कि मैं हवा और पानीके बिना रह सकता हूं, परन्तु औश्वरके बिना नहीं रह सकता। आप मेरी आंखें निकाल लें, परन्तु अिससे मैं नहीं मरूंगा। आप मेरी नाक काट डालें, परन्तु अिससे भी मैं नहीं मरूंगा। परन्तु आप मेरा औश्वर पर विश्वास नष्ट कर दें तो मैं निष्प्राण हो जाअूंगा। आप अिसे अंधविश्वास कह सकते हैं, परंतु मैं स्वीकार करता हूं कि यह अैसा अंधविश्वास है जिसे मैं अपनी छातीसे लगाये रखता हूं। अपने बचपनमें जब मुझे कोअी खतरा या डर मालूम होता था तब मैं अिसी तरह रामनामसे चिपटा रहता था। अेक बूढी दाअीने मुझे यही सिखाया था।

हरिजन, १४–५–’३८

पृथ्वीतल पर मैंने औश्वर जैसा कठोर मालिक नहीं देखा। वह आपकी परीक्षा बार-बार लेता ही रहता है। और जब आपको अैसा लगता है कि आपकी श्रद्धा या आपका शरीर आपका साथ नहीं दे रहा है और आपकी नैया डूब रही है, तब वह आपकी मददको किसी न किसी तरह पहुंच जाता है और आपको विश्वास करा देता है कि आपको श्रद्धा नहीं छोड़नी चाहिये; और वह आपका संकेत पाते ही आनेको तैयार है, परन्तु आपकी शर्त पर नहीं, अपनी ही शर्त पर। मैंने यही पाया है। मुझे अेक भी मौका अैसा याद नहीं जब अंत वक्त पर अुसने मेरा साथ छोड़ दिया हो।

‘स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी’ (१९३३); पृ० १०६९

११

अहिंसाका मार्ग

सत्यका मार्ग जितना सीधा है अुतना ही तग भी है। यही बात अहिंसाकी है। यह खांडेकी धार पर चलनेके बराबर है। ध्यानकी अेकाग्रताके द्वारा अेक नट रस्सी पर चल सकता है। परतु सत्य और अहिंसाके मार्ग पर चलनेके लिअे कही वडी अेकाग्रताकी जरूरत है। जरासा ध्यान चूके कि धडामसे जमीन पर आ गिरे। सतत साधनाके द्वारा ही सत्य और अहिंसाको सिद्ध किया जा सकता है। . . .

लोगोने अहिंसाको आज जो रूप दे रखा है, अहिंसा वैसी स्थूल चीज नही है। किसी प्राणीको चोट न पहुचाना वेशक अहिंसाका अग है। परतु यह अुसका छोटेसे छोटा चिह्न है। अहिंसाके सिद्धान्तको प्रत्येक वुरे विचारसे, अनुचित जल्दवाजीसे, झूठ बोलनेसे, घृणासे, किसीका वुरा चाहनेसे आघात पहुचता है। जिस वस्तुकी ससारको आवश्यकता है अुससे चिपटे रहनेमे भी अहिंसाका भग होता है। परतु ससारको तो हम रोज जो कुछ खाते है अुसकी भी जरूरत है। जिस स्थान पर हम खडे है वहा लाखो कीटाणु है, जो अुस स्थानके मालिक है और जिन्हे हमारे वहा होनेसे चोट पहुचती है। तव हमे क्या करना चाहिये? क्या हमे आत्महत्या कर लेनी चाहिये? अगर हमारा यह विश्वास हो, जैसा कि है, कि जव तक शरीरके लिअे आसक्ति वनी हुअी है तव तक अेक शरीरके नष्ट होने पर आत्मा अपने लिअे दूसरा शरीर तैयार कर लेती है, तो यह भी कोअी हल नही है। शरीरका वधन तो तभी मिटेगा जव हम अुसकी आसक्ति छोड देगे। आसक्तिसे मुक्ति ही सत्यरूपी अीश्वरका साक्षात्कार है। यह साक्षात्कार जल्दवाजीसे प्राप्त नही हो सकता। शरीर हमारा नही है। जब तक वह है तव तक हमे अुसे अपनेको सौंपी हुअी धरोहर समझकर अुसका अुपयोग करना चाहिये। शरीर-सवधी वातोंके प्रति यह दृष्टि रखकर ही हम किसी दिन शरीरके भारसे मुक्त होनेकी आशा रख सकते है। शरीरकी मर्यादाओंको अच्छी तरह समझकर हमे अपने भीतर जो भी शक्ति है अुसे लगाकर आदर्शकी ओर दिन प्रतिदिन आगे वढनेका प्रयत्न करना चाहिये।

अूपरकी बातोसे शायद यह स्पष्ट हो गया है कि अहिंसाके विना सत्यकी खोज और प्राप्ति असभव है।

(अहिंसा और सत्य आपसमे अितने गुथे हुअे है कि अुन्हें अेक-दूसरेसे सुलझाकर अलग करना लगभग असभव है। वे अेक सिक्केके या यों कहिये कि धातुके अेक चिकने गोल टुकडेके दो पहलुओंकी तरह है। कौन कह सकता है कि यह अुल्टा है और यह सीधा है? फिर भी, अहिंसा साधन है; सत्य साध्य है। साधन वही है जो सदा हमारी पहुचके भीतर हो, और अिसलिअे अहिंसा हमारा सर्वोच्च धर्म है। अगर हम साधनको सभाल ले तो हम साध्य तक देर या सवेर पहुचकर ही रहेगे। अेक बार यह बात अच्छी तरह समझ ले तो हमारी अतिम विजय असदिग्ध है। हमें रास्तेमे चाहे जो कठिनाअिया आये, बाह्य दृष्टिसे हमारी चाहे जितनी हार होती दिखे, हम सत्यकी खोज न छोडे और विश्वासके साथ अेक ही मंत्र जपे — सत्य है।

मगलप्रभात, अध्याय २

अहिंसा सर्वोच्च प्रकारकी सक्रिय शक्ति है। वह आत्मबल या हमारे भीतर विराजमान भगवानकी शक्ति है। अपूर्ण मानव अुसे पूरा ग्रहण नहीं कर सकता। वह अुसके सपूर्ण तेजपुजको बर्दाश्त नही कर सकेगा। परतु अुसका लेश-मात्र भी जब हमारे भीतर सक्रिय बन जाता है तब वह गजबका काम करता है। आकाशका सूर्य सारे विश्वको अपनी प्राणदायक गरमीसे भर देता है। परतु कोअी अुसके बहुत निकट चला जाय तो अुसे वह जलाकर राख कर देगा। अिसी तरह ओश्वरकी बात है। हम जिस हद तक अहिंसाको सिद्ध करते है अुतनी ही हद तक ओश्वरके सदृश बनते है; परतु हम पूरी तरह ओश्वर कभी नही बन सकते। अहिंसा रेडियमकी तरह काम करती है। रेडियमकी छोटीसे छोटी मात्रा भी किसी रुग्ण अगके बीचमे रख दी जाय, वह लगातार, चुपचाप और बिना रुके काम करता रहता है और अन्तमे सारे रोगग्रस्त अगको नीरोग बना डालता है। अिसी प्रकार थोडीसी भी सच्ची अहिंसा चुपचाप, सूक्ष्म और अदृश्य रूपमे काम करती है, और सारे समाजमे व्याप्त हो जाती है।

हरिजन, १२–११–'३८

नम्रताके बिना सत्य अहकारपूर्ण दिखावा मात्र होगा। जो सत्यका पालन करना चाहता है वह जानता है कि यह काम कितना कठिन है। ससार अुसकी कथित विजयोकी प्रशसा कर सकता है। दुनिया अुसके पतनके बारेमे बहुत

कम जानती हैं। सत्यपरायण मनुष्य परीक्षाओसे गुजरकर शुद्ध और नम्र वन जाता हैं। अुसे नम्र रहनेकी जरूरत है। जो मनुष्य समस्त ससारसे प्रेम रखना चाहता है और अुसमे अुन लोगोको भी शामिल समझता है जो अपने आपको अुसके दुश्मन कहते है, वह जानता है कि अपने ही वल-वूते पर यह काम कितना असभव हैं। अुसे पहले रजकण वनना होगा, तव वह अहिसाका 'क ख' समझ सकता है। प्रेमके साथ यदि अुसकी नम्रतामे वृद्धि नही होती हैं तो अुसकी कोअी कीमत नही है। . . . जिसमे जरा भी अहकार है वह अीश्वरका साक्षात्कार नही कर सकता। अीश्वरका साक्षात्कार करना हो तो अुसे शून्य वनना पडेगा। तूफानोके थपेडे खाते हुअे विश्वमे कौन यह कहनेका साहस करेगा कि 'मेरी जीत हुअी'? विजय हमारे भीतरके अीश्वरकी होती है, हमारी नही। जो वात भौतिक जगतके लिअे सही है वही आध्यात्मिक जगतके लिअे भी सही है। अगर अेक सासारिक युद्ध जीतनेके लिअे युरोपने पिछली लडाअीमे, जो अेक क्षणभगुर घटना थी, लाखो मनुष्योकी आहुति दे डाली, तो क्या आश्चर्य है कि आध्यात्मिक सग्राममे जूझते हुअे लाखोंको नष्ट होना पडे, ताकि ससारके सामने अेक सपूर्ण अुदाहरण वच रहे?

यग अिडिया, २५–६–'२५

मानव-जातिके हाथमे अहिसा सवसे वडा वल है। मनुष्यकी सूझने विनाशके जो प्रवलसे प्रवल हथियार निकाले है अुनसे भी यह प्रवल है। विनाश मानवका धर्म नही है। मनुष्य अपने भाअीके हाथो, जरूरत पडने पर, मरनेको तैयार रहकर आजादीसे जीता है, अुसे मारकर हरगिज नही। प्रत्येक हत्या या आघात, अुसका कारण कुछ भी रहा हो, मानवताके विरुद्ध अपराध है।

हरिजन, २०–७–'३५

दया, अहिसा, प्रेम ओर सत्यके सद्‌गुणोकी परीक्षा किसी मनुप्यमे तभी हो सकती है जव अुनका मुकावला क्रूरता, हिसा, वैर और असत्य आदिसे होता है।

अगर यह सच है तो यह कहना गलत होगा कि अेक हत्यारेके सामने अहिसा काम नही देगी। यह अवश्य कहा जा सकता है कि अेक हत्यारेके सामने अहिसाका प्रयोग करना आत्म-विनाशको न्यौता देना है। परतु अहिसाकी यही सच्ची कसौटी है। परतु जो निरी लाचारीके कारण अपना वध होने

देता है अुसके लिअे यह हरगिज नहीं कहा जा सकता कि अुसने यह परीक्षा पास कर ली है। जो वध होते समय भी अपने हत्यारेके प्रति क्रोध नहीं करता, बल्कि ओश्वरसे भी अुसे क्षमा करनेको कहता है, वही सच्चमुच अहिंसक है। अितिहास ओसा मसीहका अैसा ही वर्णन करता है। सूली पर अन्तिम श्वास लेते समय अुन्होंने अपने हत्यारोंके बारेमें अैसा कहा बताते हैं: "परम पिता, अिन्हें क्षमा कर दीजिये, क्योंकि अिन्हें पता नहीं है कि ये क्या कर रहे हैं।" दूसरे धर्मोमें भी हमें अैसे ही अुदाहरण मिल सकते हैं, परन्तु यह अुद्धरण अिसलिअे दिया गया है कि यह विश्वविख्यात है।

यह दूसरी बात है कि हमारी अहिंसा अभी अितनी अूचाओ तक नहीं पहुची है। हमारे लिअे यह बिल्कुल गलत होगा कि हम अपने ही दोषके, या अनुभवके अभावके कारण अहिंसाका स्तर नीचा कर दें। आदर्शको सही तौर पर समझे बिना हम अुस तक पहुचनेकी कभी आशा नहीं रख सकते। अत यह जरूरी है कि हम अहिंसाकी शक्तिको समझनेमे अपनी बुद्धिको लगावें।

हरिजन, २८–४–'४६

अहिंसा अेक व्यापक सिद्धान्त है। हम हिंसाकी ज्वालामें फंसे हुअे असहाय प्राणी हैं। 'जीवो जीवस्य जीवनम्' — अिस कहावतमें अेक गहरा अर्थ है। मनुष्य जाने-अनजाने बाह्य हिंसा किये बिना अेक क्षण भी नहीं रह सकता। अुसके जीनेमें ही — खाने-पीने और चलने-फिरनेमे — कुछ न कुछ हिंसा होती ही है, फिर वह कितनी भी सूक्ष्म क्यों न हो। अिसलिअे यदि अहिंसाके पुजारीके सब कामोका स्रोत दया है, यदि वह छोटेसे छोटे प्राणियोंको भी नष्ट करनेसे भरसक परहेज रखता है, अुन्हे बचानेकी कोशिश करता है और अिस प्रकार हिंसाके घातक फंदेसे मुक्त होनेका सतत प्रयत्न करता है, तो वह अपने ओमानका सच्चा होता है। अुसके संयम और अुसकी करुणामें सतत वृद्धि होती रहेगी, परंतु वह बाह्य हिंसासे सर्वथा विमुक्त कभी नही हो सकता।

आत्मकथा (अंग्रेजी) १९४८; पृ० ४२७–२८

और फिर, चूकि अहिंसाकी जडमे सब प्राणियोंकी अेकता है, अिसलिअे अेककी भूलका परिणाम सब पर हुअे बिना नही रह सकता और अिस कारण मनुष्य हिंसासे सर्वथा मुक्त नही हो सकता। जब तक वह अेक सामाजिक प्राणी है, तब तक वह अुस अहिंसामें भागीदार बने बिना नही रह सकता

जो समाजके अस्तित्वके साथ जुडी हुअी है। जब दो राष्ट्र लड रहे हों तब अहिंसाके पुजारीका कर्तव्य है कि लड़ाअी बन्द कराये। जो अिस कर्तव्य-पालनमे समर्थ नही है, जिसमे युद्धका विरोध करनेकी शक्ति नही है, जिसने लडाअी रोकनेकी योग्यता नही है, वह लडाअीमे भाग लेकर भी अपने आपको, अपने राष्ट्रको और ससारको युद्धसे मुक्त करनेकी पूरे दिलसे कोशिश कर सकता है।

आत्मकथा (अंग्रेजी) १९४८; पृ० ४२८

१२

प्रार्थना — धर्मका सार

मै मानता हू कि प्रार्थना धर्मका प्राण है और सार है। और अिसलिअे प्रार्थना मनुष्यके जीवनका मर्म होनी चाहिये, क्योकि कोअी आदमी धर्मके बिना जी ही नही सकता। कुछ लोग है जो अपनी बुद्धिके अहंकारमे कह देते है कि अुन्हे धर्मसे कोअी सरोकार नही। मगर यह तो अैसा ही है जैसे कोअी मनुष्य कहे कि वह सास तो लेता है मगर अुसकी नाक नही है। बुद्धिसे कहिये या स्वभावसे अथवा अंधविश्वाससे कहिये, मनुष्य दिव्य तत्त्वमे अपना कुछ न कुछ नाता स्वीकार करता ही है। घोरसे घोर नास्तिक या अनीश्वरवादी भी किसी नैतिक सिद्धान्तकी आवश्यकताको मानता है और अुसके पालनमे कुछ न कुछ भलाअी और अुसका पालन न करनेमे बुराअी समझता है। ब्रैडलॉकी नास्तिकता मशहूर है, वे सदा अपने आन्तरिक दृढ विश्वासको घोषित करनेका आग्रह रखते थे। अुन्हे अिस प्रकार सच कहनेके कारण अनेक कष्ट अुठाने पडे, परतु अिसमे अुन्हे आनद आता था और वे कहते थे कि सत्य स्वय अपना पुरस्कार है। यह बात नही थी कि अुन्हे सत्यके पालनसे होनेवाले आनदका बिलकुल भान नही था। परतु यह आनद पूरी तरह सासारिक ही नही होता, यह अीश्वरके साथ अपने सबधकी अनुभूतिसे पैदा होता है। अिसीलिअे मैंने कहा है कि जो आदमी धर्मको नही मानता वह भी धर्मके बिना नही रह सकता और नही रहता।

अब मै दूसरी बात पर आता हू। वह यह है कि प्रार्थना जैसे धर्मका सबसे मार्मिक अग है वैसे ही मानव-जीवनका भी है। प्रार्थना या तो याचना-

रूप होती है या व्यापक अर्थमें वह ओश्वरसे भीतरी लौ लगाना है। दोनों ही सूरतोंमें अंतिम परिणाम अेक ही होता है। जब वह याचनाके रूपमें हो तब याचना आत्माकी सफाओी और शुद्धिके लिअे, अुसके चारों ओर लिपटे हुअे अज्ञान और अंधकारके आवरण हटानेके लिअे होनी चाहिये। अिसलिअे जो अपने भीतर दिव्य ज्योति जगानेको तड़प रहा हो अुसे प्रार्थनाका आसरा लेना होगा। परंतु प्रार्थना शब्दों या कानोंका व्यायाम मात्र नहीं है, खाली मंत्र-जाप नहीं है। आप कितना ही रामनाम जपिये, अगर अुससे आत्मामें हलचल नहीं मचती तो वह व्यर्थ है। प्रार्थनामें शब्दोंके बिना हृदय होना हृदयके बिना शब्द होनेसे बेहतर है। वह स्पष्ट रूपसे आत्माकी तड़पके जवाबमें होनी चाहिये। और जैसे कोओी भूखा आदमी मन चाहे भोजनमें मजा लेता है, ठीक वैसे ही भूखी आत्माको हार्दिक प्रार्थनामें आनंद आता है। और यह मैं अपने और अपने साथियोंके थोड़ेसे अनुभवसे कहता हूं कि जिसने प्रार्थनाके जादूका अनुभव किया है वह लगातार कओी दिन तक आहारके बिना तो रह सकता है, परंतु प्रार्थनाके बिना अेक क्षण भी नहीं रह सकता। कारण, प्रार्थनाके बिना भीतरी शांति नहीं मिलती।

अगर यह बात है तो कोओी कहेगा कि हमें अपने जीवनके हर क्षणमें प्रार्थना करते रहना चाहिये। अिसमें कोओी सन्देह नहीं। परंतु हम भूल करनेवाले प्राणी हैं, अेक क्षणके लिअे भी भगवानसे भीतरी लौ लगानेके लिअे बाहरी विषयोंसे हटकर अन्तर्मुख होना हमें कठिन जान पड़ता है। तब हर क्षण ओीश्वरसे लौ लगाये रखना तो हमारे लिअे असंभव ही होगा। अिस-लिअे हम कुछ घंटे नियत करके अुस समय थोड़ी देरके लिअे संसारका मोह छोड़ देनेका गंभीर प्रयत्न करते हैं, अेक प्रकारसे अिन्द्रियातीत रहनेकी दिली कोशिश करते हैं। आपने सूरदासका भजन सुना है। यह ओीश्वरसे मिलनेके लिअे भूखी आत्माकी करुण पुकार है। हमारे पैमानेसे वे अेक सन्त थे, परंतु अुनके अपने पैमानेसे वे घोर पापी थे। आध्यात्मिक दृष्टिसे वे हमसे मीलों आगे थे, परंतु अुन्हें ओीश्वर-वियोगकी अितनी तीव्र पीड़ा थी कि अुन्होंने आत्मग्लानि और निराशाके स्वरमें अपनी पीड़ा अिस तरह व्यक्त की: 'मो सम कौन कुटिल खल कामी'।

मैंने प्रार्थनाकी आवश्यकताकी बात कही है और अुसके द्वारा प्रार्थनाका सार भी बताया। हमारा जन्म अपने मानव बन्धुओंकी सेवाके लिअे हुआ है

और यह काम हम अच्छी तरह नहीं कर सकते यदि हम पूरी तरहसे जागृत न रहें। मनुष्यके हृदयमें अंधकार और प्रकाशकी शक्तियोंमें सतत संग्राम होता रहता है। अतः जिसके पास प्रार्थनाकी ढालका सहारा नहीं है वह अंधकारकी शक्तियोंका शिकार हो जायगा। प्रार्थना करनेवाला आदमी अपने मनमें शांतिका अनुभव करेगा और संसारके साथ भी अुसका संबंध शांतिका होगा। जो मनुष्य प्रार्थनापूर्ण हृदयके बिना सांसारिक कर्म करेगा वह स्वयं भी दुःखी होगा और संसारको भी दुःखी करेगा। अिसलिअे मनुष्यकी मरणोत्तर स्थिति पर प्रार्थनाका जो प्रभाव होता है, अुसके सिवा भी प्रार्थनाका मनुष्यके पार्थिव जीवनमें असीम महत्त्व है। हमारे दैनिक कार्योंमें व्यवस्था, शांति और संवादिता लानेका अेकमात्र अुपाय प्रार्थना है। अिस प्राणभूत वस्तुको आत्मसात् किया जाय तो और सब बातें अपने आप संभल जायंगी। किसी वर्गका अेक कोण सम कर दिया जाय तो दूसरे कोण अपने आप सम हो जाते हैं।

अिसलिअे दिनका काम प्रार्थनासे शुरू कीजिये और अुसमें अितनी आत्मा अुंडेलिये कि वह शाम तक आपके साथ बनी रहे। दिनका अन्त भी प्रार्थनाके साथ कीजिये, ताकि आपकी रात शांतिपूर्ण तथा स्वप्नों और दुःस्वप्नोंसे मुक्त रहे। प्रार्थनाके स्वरूपकी चिन्ता न कीजिये। स्वरूप कुछ भी हो, वह अैसा होना चाहिये जिससे भगवानके साथ हमारे मनकी लौ लग जाय। अितना ध्यान रखिये कि स्वरूप कैसा भी हो, मगर आपके मुंहसे प्रार्थनाके शब्द निकलते समय आपका मन अिधर-अुधर न भटकने पाये।

विश्वके सब पदार्थोंको, जिनमें सूर्य, चन्द्र और तारे भी शामिल हैं, कुछ नियमोंका पालन करना पड़ता है। अिन नियमोंके नियंत्रणके बिना दुनियाका काम क्षणभर भी नहीं चल सकता। आपका जीवनोद्देश्य अपने मानव-बन्धुओंकी सेवा करना है। यदि आप अपने पर किसी न किसी तरहका अनुशासन नहीं लगायेंगे तो आपका सर्वनाश ही हो जायगा। प्रार्थना अेक प्रकारका आवश्यक आध्यात्मिक अनुशासन है। अनुशासन और संयम ही हमें पशुओंसे अलग करता है। अगर हम सिर अूंचा करके चलनेवाले मनुष्य होना चाहते हैं और चौपाये नहीं बनना चाहते, तो हमें यह बात समझ लेना चाहिये और अपने आपको स्वेच्छासे अनुशासन और संयममें रखना चाहिये।

यंग अिंडिया, २३–१–'३०

१३

प्रार्थना क्यों?

हम प्रार्थना करे ही क्यों? अगर अीश्वर है तो क्या जो कुछ हुआ है अुसे अीश्वर नही जानता है? क्या अुसे अपना कर्तव्य पालन कर सकनेके लिअे प्रार्थनाकी जरूरत रहती है?

नही, अीश्वरको याद दिलानेकी आवश्यकता नही। वह सबके भीतर है, अुसकी आज्ञाके विना कुछ भी नही होता। हमारी प्रार्थना तो अपने ही हृदयकी छानवीन है। वह तो हमे ही यह स्मरण दिलाती है कि हम प्रभुके सहारेके विना लाचार है। प्रार्थनाके विना कोअी प्रयत्न सम्पूर्ण नही होता। यह निश्चित रूपमे स्वीकार करना चाहिये कि अच्छेसे अच्छे मानव-प्रयत्नके पीछे भी भगवानका आशीर्वाद न हो तो वह वेकार है। प्रार्थना नम्रताकी पुकार है। वह आत्म-शुद्धिका, आत्म-निरीक्षणका आह्वान है।

हरिजन, ८–६–'३५

मेरी रायमे राम, रहमान, अहुरमज्द, गॉड या कृष्ण, ये सब अुस अदृश्य शक्तिको, जो सब शक्तियोसे वड़ी है, कोअी नाम देनेके मानव-प्रयत्न है। भले ही मनुष्य अपूर्ण हो, परतु पूर्णताका सतत प्रयत्न करना अुसके स्वभावमे है। प्रयत्न करते करते वह चिन्तनमे पड जाता है। और जैसे कोअी वच्चा खडा होनेकी कोशिश करता है, वार वार गिरता है और अन्तमे चलना सीख जाता है, ठीक अुसी तरह मनुष्य अितनी वुद्धि होते हुअे भी अुस अनन्त और अकाल पुरुषके मुकावलेमे निरा शिशु है। अिसमे अतिशयोक्ति दिखाअी दे सकती है, परतु है नही। अीश्वरका वर्णन मनुष्य अपनी टूटीफूटी भाषामे ही कर सकता है। जिस शक्तिको हम अीश्वर कहते है वह वर्णनातीत है। और न अुसे अिस वातकी कोअी जरूरत ही है कि मनुष्य अुसका वर्णन करनेका प्रयत्म करे। मानवको ही अुस भावनाकी आवश्यकता है जिसके द्वारा वह महासागरसे भी विशाल अिस शक्तिका वर्णन कर सके। अगर यह विधान स्वीकार कर लिया जाय तो यह पूछनेकी आवश्यकता नही कि हम प्रार्थना क्यों करते है। मनुष्य अीश्वरकी कल्पना

अपने ही मनकी सीमाओंके भीतर कर सकता है। यदि औश्वर महासागरकी भांति विशाल और असीम है, तो अेक छोटीसी बूंद जैसा मनुष्य कैसे कल्पना कर सकता है कि औश्वर क्या है? वह समुद्रमें गिरकर और समाकर ही अनुभव कर सकता है कि महासागर क्या वस्तु है। यह अनुभव अवर्णनीय है। मैडम ब्लावट्स्कीके शब्दोंमें, मनुष्य प्रार्थना करनेमें अपने ही विशालतर स्वरूपकी पूजा करता है। वही सच्ची प्रार्थना कर सकता है, जिसे दृढ विश्वास हो कि औश्वर अुसके भीतर है। जिसे यह विश्वास नहीं है, अुसे प्रार्थना करनेकी जरूरत नहीं। औश्वर तो नाराज नहीं होगा, परन्तु मैं अनुभवसे कह सकता हूं कि जो प्रार्थना नहीं करता वह जरूर घाटेमें रहता है। तब अिसका क्या महत्त्व है कि अेक आदमी औश्वरको व्यक्ति मानकर पूजता है और दूसरा शक्ति मानकर? दोनों ही अपनी अपनी समझसे ठीक ही करते हैं। कोअी नहीं जानता और शायद कभी नहीं जानेगा कि प्रार्थना करनेका सर्वथा अुचित मार्ग क्या है। आदर्श तो सदा आदर्श ही रहेगा। हमें अितना ही याद रखनेकी जरूरत है कि सब शक्तियोंमें औश्वरकी ही शक्ति है। और सब शक्तियां भौतिक हैं। परन्तु औश्वर ही वह प्राणभूत शक्ति या आत्मा है, जो सर्वव्यापी, सर्वग्राही और अिसलिअे मानव-बुद्धिसे परे है।

हरिजन, १८-८-'४६

अेक बौद्धसे संवाद

बुद्धके अेक अनुयायी डॉ० फाबरी अेबटाबादमें गांधीजीसे मिलने आये अुन्होंने पूछा:

"क्या प्रार्थनासे औश्वरका मन बदला जा सकता है? क्या प्रार्थनासे अुसे जाना जा सकता है?"

गांधीजीने कहा, "प्रार्थना करते समय मैं क्या करता हूं, अिसे पूरी तरह समझाना कठिन बात है। परन्तु मैं आपके प्रश्नका अुत्तर देनेका प्रयत्न अवश्य करूंगा। औश्वरका मन नहीं बदला जा सकता, परन्तु औश्वर जड़-चेतन सभी पदार्थों और जीवोंमें है। प्रार्थनाका अर्थ यह है कि मैं अपने भीतरवाले अुस औश्वरको पुकारता हूं, जगाता हूं। हो सकता है कि मुझे अिसका बौद्धिक निश्चय तो हो, परन्तु कोअी सजीव अनुभूति न हो। अिसलिअे जब मैं स्वराज्य या भारतकी स्वाधीनताके लिअे प्रार्थना करता हूं, तो मैं

अुस स्वराज्यको प्राप्त करनेकी या अुसे प्राप्त करनेमे अधिकसे अधिक योग देनेकी पर्याप्त शक्तिके लिअे प्रार्थना या अिच्छा करता हू। और मै मानता हू कि प्रार्थनाके अुत्तरमे मै वह शक्ति प्राप्त कर सकता हू।"

डॉ० फावरीने कहा, "तव तो आपका अुसे प्रार्थना कहना ठीक नही है, प्रार्थना करनेका अर्थ याचना या माग करना है।"

"हां, यह सही है। आप कह सकते है कि मै अपने आपसे, अपने अुच्च स्वरूपसे, वास्तविक आत्मासे याचना करता हू, जिसके साथ मै अभी तक पूर्ण अेकता स्थापित नही कर सका हू। अिसलिअे आप अिसका वर्णन यों कर सकते है कि जिस परमात्मामे सव समाये हुअे है अुसमे अपने आपको खो देनेकी सतत आकाक्षा करना ही प्रार्थना है।"

डॉ० फावरीने पूछा, "जो लोग प्रार्थना नही कर सकते, अुनके लिअे आपका क्या कहना है?"

गाधीजीने कहा, "मै अुनसे कहूगा कि नम्र वनो और वुद्धकी अपनी कल्पना द्वारा सच्चे वुद्धको सीमित मत करो। अगर अुनमे प्रार्थना करने लायक विनम्रता न होती तो करोडो मनुष्योके जीवन पर अुन्होने जो राज्य किया और आज भी कर रहे है वह न कर सकते। वुद्धिसे कही अूची कोअी चीज है जो हम पर और शका करनेवालों पर भी शासन करती है। अुनके जीवनके नाजुक मौको पर अुनकी शकाशीलता और अुनका तत्त्वज्ञान अुनकी मदद नही करते। अुन्हे सहारा देनेके लिअे किसी वेहतर चीजकी, अपनेसे वाहर किसी चीजकी जरूरत होती है। और अिसलिअे अगर कोअी मेरे सामने कोअी अैसी पहेली रखता है तो मै अुससे कहता हू, 'जव तक तुम अपने आपको शून्य नही वना लोगे तव तक तुम्हे ओश्वर या प्रार्थनाका अर्थ मालूम नही होगा। तुममे यह समझने लायक नम्रता होनी ही चाहिये कि तुम्हारी महानता और जवरदस्त वुद्धिके वावजूद तुम विश्वमे अेक विन्दुके समान ही हो। जीवनकी वातोकी निरी वौद्धिक कल्पना काफी नही होती। वुद्धिके लिअे अगम्य आध्यात्मिक कल्पना ही अैसी चीज है जो मनुष्यको सतोष दे सकती है। धनवान लोगोके जीवनमे भी नाजुक समय आते है। यद्यपि अुनके चारो ओर वे सव चीजे होती है जो रुपयेसे खरीदी जा सकती है और प्रेमसे मिल सकती है, फिर भी अपने जीवनमे अुन्हे कुछ अवसरों पर थोडी भी सान्त्वना नही मिलती। अिन्ही अवसरो पर हमे ओश्वरकी झांकी होती है,

अुसके दर्शन होते हैं, जो जीवनमें हर कदम पर हमें रास्ता बता रहा है। यही प्रार्थना है।'"

डॉ० फावरीने कहा, "आपका मतलब अुस चीजसे है जिसे हम सच्चा धार्मिक अनुभव कह सकते हैं और जो बौद्धिक कल्पनासे अधिक बलवान होता है। जीवनमें दो बार मुझे वह अनुभव हुआ, परतु बादमें मैंने अुसे खो दिया है। परतु अब मुझे बुद्धके अेक दो वचनोंसे बडी सान्त्वना मिलती है 'स्वार्थ दुःखका कारण है' और 'भिक्षुओ, याद रखो प्रत्येक वस्तु नाशवान है।' अिन वचनोंका विचार करता हूं तो मुझे लगभग वही बल मिलता प्रतीत होता है जो श्रद्धासे मिलता है।"

"यही प्रार्थना है," यह बात गांधीजीने अितने आग्रहके साथ कही कि वह डॉ० फावरीके मनको छुअे बिना नहीं रही होगी।

हरिजन, १९-८-'३९

१४

प्रार्थना कैसे, किसकी और कब करें?

'नवजीवन' के अेक पाठक पूछते हैं, 'आप हमसे अक्सर अीश्वरकी आराधना करनेको, प्रार्थना करनेको कहते हैं, परतु यह कभी नहीं बताते कि प्रार्थना कैसे करें और किसकी करें। क्या आप कृपा करके मुझे अिसका बोध करायेंगे?'

अीश्वरकी पूजा करना अीश्वरके गुणगान करना है। प्रार्थना अपनी अयोग्यता और दुर्बलताको स्वीकार करना है। अीश्वरके सहस्र नाम हैं या यों कहिये कि वह अनाम है। जो भी नाम हमें अच्छा लगे अुसीसे हम अुसकी पूजा या प्रार्थना कर सकते हैं। कुछ लोग अुसे राम कहते हैं, कुछ कृष्ण और दूसरे रहीम और कअी अुसे गॉड कहते हैं। सब अुसी अेक तत्त्वकी पूजा करते हैं, परतु जैसे सब आहार सभीको अनुकूल नहीं होते, अुसी तरह सब नाम सबको नहीं भाते। हरअेक अपनी अपनी परिस्थितिके अनुसार नाम पसन्द कर लेता है और अीश्वर अन्तर्यामी, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ होनेके कारण हमारी भीतरी भावनाओंको जानता है और हमारी पात्रताके अनुसार अुत्तर देता है।

अिसलिअे पूजा या प्रार्थना वाणीसे नहीं, हृदयसे करनेकी चीज है। और यही कारण है कि अुसे गूंगा और तुतलानेवाला, अज्ञानी और मूर्ख सब समान रूपसे कर सकते है। पर जिन लोगोंकी वाणीमें तो अमृत है, परंतु जिनके हृदय विषसे परिपूर्ण है, अुनकी प्रार्थना कभी नहीं सुनी जाती। अिसलिअे जो ओश्वरकी प्रार्थना करना चाहे अुसे अपना हृदय स्वच्छ कर लेना चाहिये। राम हनुमानकी सिर्फ वाणी पर ही नहीं, अुनके हृदयमें भी विराजमान थे। अुन्होंने हनुमानको अपार बल दिया। हनुमानने ओश्वरके बलसे पहाड़को अुठा लिया और समुद्रको पार किया। श्रद्धा ही हमें तूफानी समुद्रोंके पार ले जाती है, श्रद्धा ही पहाड़ोंको हिलाती है और श्रद्धा ही समुद्र लांघ जाती है। यह श्रद्धा अन्तर्यामी ओश्वरके सजीव और जाग्रत भानके सिवा और कुछ नहीं है। जिसने यह श्रद्धा प्राप्त कर ली है अुसे और कुछ नहीं चाहिये। शरीर रोगी होने पर भी अुसकी आत्मा स्वस्थ है, शरीरसे शुद्ध होकर वह आध्यात्मिक दौलतके मजे लूटता है।

लेकिन यह पूछा जा सकता है कि 'अिस हद तक हृदयकी शुद्धि हो कैसे?' मुहकी भाषा आसानीसे सिखा दी जाती है, परन्तु हृदयकी भाषा कौन सिखा सकता है? केवल भक्त — सच्चा भक्त ही अुसे जानता है और सिखा सकता है। गीताने तीन स्थानों पर भक्तकी व्याख्या की है और अुसकी सामान्य चर्चा तो हर जगह की है। परन्तु भक्तकी व्याख्याका ज्ञान हमारा अधिक मार्गदर्शन नहीं कर सकता। अिस पृथ्वी पर भक्त विरले ही होते है। अिसलिअे मैंने सेवाधर्मको अुसका साधन बताया है। जो अपने मानव बन्धुओंकी सेवा करता है अुसके हृदयमें निवास करनेकी भगवान स्वयं अिच्छा करते हैं। अिसीलिअे नरसिंह महेताने — जो अिस रहस्यको जानते थे — कहा है कि 'वैष्णव जन तो तेने कहीअे जे पीड पराअी जाणे रे'। अबू-बेन-आदम भी अैसा ही था। अुसने मनुष्योंकी सेवा की थी अिसलिअे ओश्वरके सेवकोंकी सूचीमें अुसका नाम सबसे अूपर था।

परन्तु दुःखी और पीड़ित कौन है? दलित और दरिद्र लोग। अिसलिअे जिसे भक्त बनना हो अुसे शरीर, आत्मा और मनसे अिनकी सेवा करनी चाहिये। जो दलित वर्गोंको अछूत मानता है वह शरीर द्वारा अुनकी सेवा कैसे कर सकता है? जो अपने शरीरको अितना भी कष्ट देनेको तैयार नहीं है कि गरीबोंके खातिर काते और जो झूठे बहाने बनाता है, वह सेवाका

अर्थ नहीं जानता। हट्टे-कट्टे अभागोंको दान नहीं मिलना चाहिये, अुनसे रोटीके लिअे काम करनेको कहना चाहिये। दानसे अुनका पतन होता है। जो गरीबोंके सामने स्वयं कातता है और अुन्हें भी कातनेको कहता है वह अीश्वरकी जैसी सेवा करता है वैसी और कोअी नहीं करता। भगवान भगवद्-गीतामें कहते हैं, 'जो भक्तिभावसे मुझे पत्र, पुष्प, फल जैसी तुच्छ वस्तुअें भी अर्पण करता है वह मेरा सेवक है।' और अुनके चरण वहां हैं जहां छोटे, गरीब और आश्रयहीन अभागे रहते हैं। अिसलिअे अैसे लोगोंके कल्याणके लिअे कातना सबसे बड़ी प्रार्थना, सबसे बड़ी पूजा और सबसे बड़ा त्याग है।

अिसलिअे प्रार्थना किसी भी नामसे की जा सकती है। प्रार्थनाका वाहन भक्तिपूर्ण हृदय है और सेवासे हृदय प्रार्थनापूर्ण बनता है। जो हिन्दू अिस युगमें पूरे दिलसे अछूतोंकी सेवा करते हैं वे सच्ची प्रार्थना करते हैं; जो हिन्दू और दूसरे लोग गरीबों और निर्धनोंके लिअे प्रार्थनापूर्वक कातते हैं वे सच्ची प्रार्थना करते हैं।

यंग अिंडिया, २४-९-'२५

अिस बारेमें कोअी नियम नहीं बनाया जा सकता कि प्रार्थना अथवा पूजामें कितना समय लगाया जाय। यह अपने अपने स्वभाव पर निर्भर है। मनुष्यके दैनिक जीवनमें ये मूल्यवान घड़ियां होती हैं। प्रार्थना-पूजा आदिका हेतु हमें विवेकी और नम्र बनाना है और वे हमें यह अनुभव कराती हैं कि अीश्वरकी मर्जीके बिना कुछ नहीं होता, और हम अुस 'कुम्हारके हाथोंमें केवल मिट्टी हैं'। अिन घड़ियोंमें मनुष्य अपनी पिछली बातों पर विचार करता है, अपनी दुर्बलताओंको स्वीकार करता है, क्षमा-याचना करता है और अधिक अच्छा बनने और करनेके लिअे बल मांगता है। किसीके लिअे अेक मिनिट काफी हो सकता है, औरोंके लिअे २४ घंटे भी थोड़े हो सकते हैं। जिनके हृदयमें अीश्वर हर समय बसा हुआ है अुनके लिअे श्रम ही प्रार्थना है। अुनका जीवन सतत पूजा या प्रार्थना ही है। जो लोग पापके लिअे ही जीते हैं, भोगके लिअे और अपने लिअे ही जीते हैं, अुनके लिअे बहुत समय भी थोड़ा है। अगर अुनमें धीरज, श्रद्धा और शुद्ध होनेका संकल्प हो तो वे अुस समय तक प्रार्थना करते रहेंगे, जब तक वे अपने भीतर अीश्वरके निश्चित और पावन प्रभावको महसूस न

करने लगे। हम साधारण मनुष्योंके लिअे जिन दो अुग्र मार्गोंके बीचका मध्यम मार्ग अुचित है। हम यह कह सकते जितने अुन्नत नही है कि हमारे सारे कार्य समर्पणके काम हैं और न हम अितने गिर गये है कि केवल अपने लिअे ही जीते हैं। अिसलिअे सब धर्मोंने सामान्य प्रार्थनाके लिअे अलग समय नियत कर दिया है। दुर्भाग्यसे प्रार्थना आज कल दभपूर्ण नही तो निरी यांत्रिक और नाममात्रकी जरूर हो गयी है। जरूरत अिस बातकी है कि अिस भक्तिके साथ सच्चा भाव हो।

ओिश्वरसे किसी वस्तुकी याचनाके अर्थमें निश्चित व्यक्तिगत प्रार्थना अपनी ही भाषामें होनी चाहिये। अिससे अधिक भव्य याचना और क्या हो सकती है कि हम ओिश्वरसे यह मागे कि हम सब प्राणियोंके साथ न्यायका बर्ताव करें?

यंग अिंडिया, १०–६–'२६

१५

अुपवास

सच्चा अुपवास शरीर, मन और आत्माकी शुद्धि करता है। वह अिन्द्रियोंका दमन करता है और अुस हद तक आत्माको मुक्त करता है। सच्चे हृदयसे की हुअी प्रार्थना चमत्कार कर सकती है। वह और भी अधिक शुद्धिके लिअे आत्माकी तीव्र लालसा है। जब अिस प्रकार प्राप्त की हुअी शुद्धताका किसी अुदात्त हेतुके लिअे अुपयोग किया जाता है तो वह प्रार्थना बन जाती है। गायत्रीके भौतिक अुपयोगसे, बीमारोंको अच्छा करनेके लिअे अुसके जपसे वही अर्थ प्रगट होता है जो हमने प्रार्थनाको दिया है। जब वही गायत्रीका जप नम्र और अेकाग्र चित्तसे समझके साथ राष्ट्रीय कठिनाअियों और संकटोंके समय किया जाता है तब वह संकट-नियंत्रणका अेक अत्यंत प्रबल अस्त्र बन जाता है। यह मान लेना सबमें बडी भूल है कि गायत्रीका जप, नमाज या अीसाअी प्रार्थना अज्ञानियों या विचारहीनोंके करने लायक कोअी अंध-विश्वास है। अिसलिअे प्रार्थना या अुपवास शुद्धिकी अेक अत्यंत शक्तिशाली प्रक्रिया है और जो चीज शुद्धि करती है वह अवश्य ही हमें अपना कर्तव्य अधिक अच्छी तरह करने और अपना लक्ष्य सिद्ध करनेके लिअे समर्थ बनाती

है। अिसलिअे यदि कभी अैसा प्रतीत हो कि अुपवास और प्रार्थना सफल नहीं होते तो अिसका कारण यह नही है कि अुनमे कुछ सार नही है, परन्तु यह कारण है कि अुनके पीछे सच्ची वृत्ति नही है।

कोअी मनुष्य अुपवास तो करे परतु सारा समय, जैसा अधिकाश लोग जन्माष्टमीके दिन करते है, यो ही बेकार गवा दे, तो स्वाभाविक है कि अुसको अधिक शुद्धिके रूपमे न केवल अुपवासका कोअी फल नही मिलेगा, बल्कि अिसके विपरीत अैसे दूषित अुपवासके अन्तमे वह पतित हो जायगा। सच्चा अुपवास वह है जिसके साथ शुद्ध विचारोंको ग्रहण करनेकी तैयारी हो और शैतानके सारे प्रलोभनोका विरोध करनेका सकल्प हो। अिसी प्रकार सच्ची प्रार्थना वह है जो बुद्धिसंगत और निश्चित हो। हमे अुसके साथ अेकाकार होना पडता है। जबान पर अल्लाहका नाम लेते और माला जपते हुअे हमारा मन अिधर-अुधर भटकता हो तो वह बेकार है।

यग अिंडिया, २४–३–'२०

अलबत्ता, अिससे अिनकार नही किया जा सकता कि अुपवास सचमुच दबाव डालनेवाले हो सकते है। स्वार्थपूर्तिके लिअे किये गये अुपवास अैसे ही है। किसी आदमीसे रुपया अैठने या अिसी तरहका कोअी व्यक्तिगत काम निकालनेके लिअे किया गया अुपवास दबाव या अनुचित प्रभाव डालनेके बराबर होगा। अैसे अनुचित प्रभावके विरोधका मै निसकोच समर्थन करूगा। जो अुपवास मेरे विरुद्ध किये गये है या जिनके करनेकी धमकी दी गअी है, अुनमे मैने खुद अैसे दबावका विरोध किया है। और अगर यह दलील दी जाय कि स्वार्थपूर्ण और स्वार्थरहित अुद्देश्यकी विभाजक रेखा अक्सर बहुत बारीक होती है, तो मै कहूगा कि जो आदमी किसी अुपवासका हेतु स्वार्थ-पूर्ण या अन्यथा नीच समझता हो अुसे अुसके आगे झुकनेसे दृढतापूर्वक अिनकार कर देना चाहिये, फिर भले अुसके परिणाम-स्वरूप अुपवास करनेवालेकी मृत्यु ही हो जाय। यदि लोग अुन अुपवासोकी परवाह न करनेके आदी बन जाय, जो अुनकी रायमे अनुचित अुद्देश्यसे किये जाते है, तो अुन अुपवासोमे दबाव और अनुचित प्रभावका रग नही रहेगा। सभी मानव-सस्थाओंकी भाति अुपवासोके भी सदुपयोग और दुरुपयोग दोनो हो सकते है। परतु सत्याग्रहके शस्त्रागारके अेक महान अस्त्रके रूपमे अुसे दुरुपयोगकी सभावनाके डरसे छोडा नही जा सकता। सत्याग्रहकी रचना और नियोजन हिसाका स्थान ले

सकनेवाले अेक कारगर अुपायके रूपमे किया गया है। सत्याग्रहका यह अुपयोग अभी अपने प्रारभिक कालमे है, अिसलिअे अभी वह पूर्णताको नही पहुंचा है। परतु चूकि आधुनिक सत्याग्रहका जन्मदाता मै हू, अिसलिअे अगर मै अुसके अनेक अुपयोगोमे मे किसीको भी छोड़ दू तो अपना यह दावा खो देता हू कि मै अुसे अेक नम्र जिज्ञासुकी वृत्तिसे अिस्तेमाल कर रहा हूं।

हरिजन, ९-९-'३३

औसाअियोकी आपत्तियां

[श्री सी० अेफ० अेण्ड्रूजने गाधीजीको अेक पत्र लिखा था, जिसमें बताया था कि अिंग्लैण्डके औसाअियोमे 'आमरण अनशन' के विरुद्ध नैतिक तिरस्कारका भाव है। अिसका हवाला देते हुअे गांधीजीने लिखा:]

हिन्दुओका धार्मिक साहित्य अुपवासके अुदाहरणोंसे भरा पडा है और हजारों हिन्दू आज भी जरा जरासे निमित्त पर अुपवास करते है। यही अेक अैसी वस्तु है जिससे कमसे कम हानि होती है। अिसमे शक नही कि हरअेक अच्छी चीजकी तरह अुपवासोका भी दुरुपयोग होता है। यह अनिवार्य है। सिर्फ अिसीलिअे हम भलाअी करना नही छोड सकते कि कभी कभी भलाअीकी आड़मे बुराअी की जाती है।

मेरी असली मुश्किल अपने प्रोटेस्टेण्ट औसाअी भाअियोंके साथ है। अुनमे मेरे अनेक मित्र है और अुनकी मित्रताका मेरी नजरमे अपार महत्त्व है। मुझे अुनके निकट स्वीकार करना चाहिये कि यद्यपि अुनके साथके प्रथम सपर्कमे ही मुझे अुपवासोके लिअे अुनकी अरुचि मालूम हो गअी थी, फिर भी मै अुसे कभी समझ नही सका हू।

अिन्द्रिय-दमनको ससार भरमे आध्यात्मिक प्रगतिकी शर्त माना गया है। अुपवासका व्यापक अर्थ करे तो अुपवासके विना कोअी प्रार्थना नही हो सकती। सपूर्ण अुपवास पूरी तरह और अक्षरश आत्मत्याग है। वह सच्चीसे सच्ची प्रार्थना है। "मेरा जीवन ले ले और वह सदा केवल तेरे ही लिअे हो", यह प्रार्थना केवल जबानी जमा-खर्च या शब्दालकार नही है और न होना चाहिये। यह तो सपूर्ण हृदयसे परिणामकी परवाह न करते हुअे खुशीसे समर्पण करनेकी बात है। अन्न और जलका भी त्याग केवल समर्पणका प्रारभ है, अल्पतम भाग है।

जब मैं अिस लेखके लिअे अपने विचारोंका संग्रह कर रहा था, तब ओीसाअियोंकी लिखी हुअी अेक पुस्तिका मेरे हाथोंमें आअी। अुसमें अुपदेशके बजाय आचरणकी आवश्यकता पर अेक अध्याय था। अुसमें जोनाहके तीसरे अध्यायका अेक अुद्धरण आता है। पैगम्बरने भविष्यवाणी की थी कि अुनके निनेवेह नगरमें प्रवेश करनेके चालीसवें दिन वह महान शहर नष्ट हो जायगा :

> "निनेवेहके लोगोंका ओीश्वर पर विश्वास था। अुन्होंने अेक अुपवास घोषित किया और छोटेसे बड़े तक सबने टाटके कपड़े धारण कर लिये। सन्देशा निनेवेहके राजाके पास भी पहुंचा, वह अपने सिंहासनसे अुठा और अुसने अपनी पोशाक अुतारकर टाटके कपड़े पहन लिये और राखमें बैठ गया। और अुसने डोंडी पिटवा कर निनेवेहमें राजा और सरदारोंके नाम पर यह आज्ञा घोषित और प्रकाशित कराअी कि 'मनुष्य या पशु, भेड़-बकरी या गाय-भैंस कोअी कुछ न खाये-पिये; वे न भोजन करें, न पानी पियें। परंतु मनुष्य और पशु सब टाटके कपड़े पहन लें और ओीश्वरसे जोरके साथ पुकार करें' 'सब अपने बुराअीके रास्तेसे हट जायं और अपने हाथोंमें भरी हुअी हिंसाको छोड़ दें। हो सकता है कि यह देखकर ओीश्वर अपना अिरादा बदल दे और अपने भयंकर क्रोधसे मुंह मोड़ ले और हमारा नाश न हो।' और ओीश्वरने अुनके कामोंसे देख लिया कि वे कुमार्गसे विमुख हो गये हैं, और ओीश्वरने अुन्हें सजा करनेकी अनिष्ट बात पर पश्चात्ताप किया और वैसा नहीं किया।"

अिस प्रकार यह अेक 'आमरण अुपवास' ही था। परंतु प्रत्येक आमरण अुपवास आत्मघात नहीं होता। निनेवेहके राजा और प्रजाका यह अुपवास मुक्तिके लिअे ओीश्वरसे अेक महान और विनम्र प्रार्थना थी। अगर मैं अपने अुपवासकी बाअिबलवाले अुपवाससे तुलना करूं तो मेरा अुपवास अैसा ही था। जोनाहकी पुस्तकका यह अध्याय पढ़कर अैसा मालूम होता है मानो रामायणकी कोअी घटना हो।

हरिजन १५-४-'३३

शाश्वत द्वंद्व युद्ध

विधाताने मनुष्यका लक्ष्य पुरानी आदतों पर विजय पाना, अपनी बुराअियों पर काबू रखना और भलाअीको फिरसे अुनके अुचित स्थान पर स्थापित करना बनाया है। अगर धर्म हमें यह विजय प्राप्त करना नहीं सिखाता तो वह कुछ भी नहीं सिखाता। परन्तु जीवनके अिस सच्चे साहसमें सफलताका कोअी राजमार्ग नहीं है। जिस सबसे बड़ी बुराअीसे हम पीड़ित हैं वह कायरता है। शायद यह सबसे बड़ी हिंसा भी है और रक्तपात वगैराके नामसे आम तौर पर जो हिंसा होती है अुससे तो अवश्य ही कायरता बड़ी हिंसा है। कारण, वह ीश्वरमें श्रद्धा न होनेसे और अुसके गुणोंके अज्ञानसे पैदा होती है। . . . परन्तु मैं अपना ही प्रमाण देकर कह सकता हूँ कि हार्दिक प्रार्थना निःसन्देह सबसे प्रबल अस्त्र है, जो कायरता और अन्य सब बुरी आदतों पर विजय प्राप्त करनेके लिअे मनुष्यके पास है। अपने अन्तरमें ीश्वरके वासका सजीव विश्वास न हो तो प्रार्थना असंभव है।

अिसी प्रक्रियाको ीसाअी और अिस्लाम धर्म ीश्वर और शैतानके बीच होनेवाला बाहरी नहीं भीतरी द्वंद्व बताते हैं; पारसी धर्म अहुरमज्द और अहरीमानके बीच तथा हिन्दू धर्म भलाअी और बुराअीकी शक्तियोंके बीचका द्वंद्व बताता है। हमें अपना निर्णय कर लेना है कि हम बुराअीकी शक्तियोंका साथ दें या भलाअीकी शक्तियोंका। और ीश्वरकी प्रार्थना करना ीश्वर और मनुष्यके बीच पवित्र गठबंधनके सिवा और कुछ नहीं है। अुसके द्वारा मनुष्य शैतानके फंदेसे मुक्ति प्राप्त करता है। परन्तु हार्दिक प्रार्थना जीभका जप नहीं है। यह तो अेक आन्तरिक अभ्यर्थना है, जो मनुष्यके अेक अेक शब्द, अेक अेक काम, नहीं नहीं, अेक अेक विचारमें प्रगट होती है। जब कोअी बुरा विचार अुस पर सफल आक्रमण करता है तो वह जान ले कि अुसने केवल वाणीसे प्रार्थना की है। यही बात अुसके मुँहसे निकल जानेवाले बुरे शब्दके बारेमें और अुसके हाथसे हो जानेवाले बुरे कामके बारेमें है। सच्ची प्रार्थना बुराअियोंकी अिस त्रिमूर्तिके खिलाफ अुसकी अचूक ढाल है। पहले ही प्रयत्नमें अैसी सच्ची प्रार्थनाको सदा सफलता नहीं मिलती। हमें अपने विरुद्ध प्रयत्न करना पड़ता है, अपने बावजूद विश्वास रखना

पडता है, क्योंकि हमारे लिये महीने ही वर्षोके बराबर होते है। अिसलिये अगर हमे प्रार्थनाकी क्षमता अनुभव करनी है तो अपार धीरजकी आदत डालनी होगी। हमारे सामने अधकार होगा, निराशा होगी और अिससे भी बुरी बाते होगी, परतु हमे अिन सबसे सग्राम करनेका साहस रखना होगा और कायरताके असरसे बचना होगा। प्रार्थनावाले मनुष्यके लिअे पीछे हटनेकी तो कोअी बात ही नही होती।

मै जो कुछ कह रहा हू वह कोअी परियोकी कहानी नही है। मैने कोअी काल्पनिक तस्वीर नही खीची है। मैने अुन पुरुषोंकी गवाहीका सार दे दिया है, जिन्होंने प्रार्थनाके द्वारा अपनी अूर्ध्व गतिमे आनेवाली प्रत्येक कठिनाअीको पार किया है; और मैने अपना भी नम्र प्रमाण जोड दिया है कि जैसे जैसे मेरी अुम्र बढती जाती है वैसे वैसे मै यह अनुभव करता जाता हू कि मुझे श्रद्धा और प्रार्थनासे कितनी शक्ति प्राप्त हुअी है। और ये दोनो वस्तुअे मेरे लिअे अेक ही है। मै जिस अनुभवका हवाला दे रहा हू वह कुछ घटो, दिनो या हफ्तो तक ही सीमित नही है; यह अनुभव मुझे लगातार लगभग ४० वर्षोंसे मिलता आ रहा है। मुझे भी निराशाओके घोर अधकारका, हार स्वीकार करने या सावधानी बरतनेकी सलाहोका और अहकारके सूक्ष्म आक्रमणोका अपना हिस्सा मिला है, परतु मै कह सकता हू कि मेरी श्रद्धाने —और मै जानता हू कि वह अभी तक बहुत थोड़ी है, कमसे कम अुतनी बडी तो नही है जितनी मै चाहता हू—अन्तमे अुन सब कठिनाअियो पर अब तक विजय प्राप्त की है। अगर हमे अपनेमे श्रद्धा है, अगर हमारे भीतर प्रार्थनापूर्ण हृदय है, तो हम अीश्वरको प्रलोभन न दे, अुसके साथ कोअी शर्त न करे। . जब तक हम अपनेको शून्य नही बना लेते तब तक अपने भीतरकी बुराअीको नही जीत सकते। जो अेकमात्र सच्ची और प्राप्त करनेके योग्य स्वतत्रता है, अुसकी अीश्वर हमसे सपूर्ण आत्म-समर्पणसे कम कीमत नही मागता। और जब कोअी मनुष्य अिस प्रकार अपने आपको अीश्वरमे खो देता है, तब वह तुरत अपनेको सब प्राणियोकी सेवामे सलग्न पाता है। वह अुसके लिअे आनद और मनोरजन बन जाती है। वह अेक नया आदमी हो जाता है, जिसे अीश्वरकी सृष्टिकी सेवामे खप जानेमे कभी थकावट नही मालूम होती।

यग अिडिया २०–१२–'२८

१७

आत्मशुद्धि

प्रेम और अहिंसाका प्रभाव अद्वितीय है। परन्तु वे अपना काम बिना शोरगुल, दिखावे या प्रदर्शनके करते हैं। अुनके लिअे आत्म-विश्वासका होना जरूरी है और आत्म-विश्वासके लिअे आत्मशुद्धि होनी चाहिये। निष्कलंक चरित्र और आत्मशुद्धिवाले मनुष्योंके प्रति आसानीसे विश्वास हो जायगा और अुनके आसपासका वातावरण अपने आप शुद्ध हो जायगा।

यंग अिंडिया, ६–९–२८

सब प्राणियोंके साथ तादात्म्य साधना आत्मशुद्धिके बिना असंभव है, आत्म-शुद्धिके बिना अहिंसा-धर्मका पालन थोथा स्वप्न ही रहेगा; जो हृदयके शुद्ध नहीं हैं अुन्हें अीश्वर-दर्शन कभी नहीं हो सकता। अिसलिअे, आत्म-शुद्धिका अर्थ जीवनके सभी पहलुओंमें शुद्धि होना चाहिये। और शुद्धि चूंकि बड़ी संक्रामक है, अिसलिअे अपनी शुद्धिसे अपने आसपासकी शुद्धि भी अवश्य होती है।

आत्मकथा (अंग्रेजी) १९४८, पृ० ६१५

परंतु शुद्धिका मार्ग कठिन और दुर्गम है। पूर्ण शुद्धता प्राप्त करनेके लिअे मनुष्यको मन, वचन और कर्ममें सर्वथा विकार-रहित बनना पड़ता है। अुसे प्रेम और घृणा, राग और द्वेषकी विरोधी धाराओंसे अूपर अुठना होता है। मैं जानता हूं कि मुझमें अभी तक वह त्रिविध शुद्धि नहीं आअी है, यद्यपि मैं अुसके लिअे सतत, अविश्रान्त प्रयत्न करता हूं। यही कारण है कि संसारकी प्रशंसा मुझे प्रभावित नहीं करती, सच तो यह है कि वह मुझे चुभती है। सूक्ष्म विकारों पर विजयी होना मुझे शस्त्रबल द्वारा संसारकी भौतिक विजयसे कठिन प्रतीत होता है।

आत्मकथा (अंग्रेजी) १९४८; पृ० ६१६

किसी पवित्र कार्यमें कभी हार न मानो और आगेके लिअे दृढ़ संकल्प कर लो कि तुम शुद्ध रहोगे और अीश्वरकी ओरसे तुम्हें अवश्य मदद मिलेगी। परंतु अीश्वर अहंकारियोंकी प्रार्थना कभी नहीं सुनता और न अुनकी सुनता है जो अुसके साथ सौदा करते हैं। अगर तुम अुससे सहायता चाहते

हो तो अुसके पास अपने सब आग्रह छोडकर जाओ, मनमे कोअी 'किन्तु-परतु' मत रखो और यह डर या शका भी न रखो कि वह तुम जैसे पतित प्राणीकी सहायता कैसे कर सकता है। जिसने सहायता मागनेवाले लाखोको मदद दी वह क्या तुम्हे ही छोड देगा? वह कोअी भी अपवाद नही करता और तुम देखोगे कि तुम्हारी प्रत्येक प्रार्थना सुनी जायगी। अत्यत अशुद्ध व्यक्तियोंकी प्रार्थना भी सुनी जायगी। यह मै अपने निजी अनुभवसे कहता हू। मै यातनाओमे से गुजर चुका हू। पहले स्वर्गीय राज्यकी खोज करो, फिर और सब कुछ तुम्हे मिल जायगा।

यंग अिडिया, ४–४–'२९

१८

मौनका महत्त्व

मुझे अक्सर खयाल होता है कि सत्यके शोधकको चुप रहना चाहिये। मुझे मौनकी विलक्षण क्षमताका ज्ञान है। मै दक्षिण अफ्रीकामे अेक ट्रेपिस्ट मठ देखने गया था। वह बडा सुन्दर स्थान था। वहाके अधिकाश निवासियोने मौनव्रत ले रखा था। मैने मठके मुख्य व्यवस्थापकसे पूछा कि अिसका हेतु क्या है। अुसने कहा कि हेतु तो प्रगट ही है 'हम सब दुर्बल मनुष्य है। अक्सर हम नही जानते कि हम क्या कहते है। अगर हमे अुस छोटीसी मूक आवाजको सुनना है, जो सदा हमारे भीतर बोलती रहती है, तो वह हमे सुनाअी नही देगी यदि हम लगातार बोलते रहेगे।' मैने वह कीमती पाठ समझ लिया। मुझे मौनका रहस्य मालूम है।

यग अिडिया, ६–८–'२५

अनुभवने मुझे सिखाया है कि सत्यके पुजारीके लिअे मौन अुसके आध्यात्मिक अनुशासनका अेक अग है। जाने अनजाने बढा-चढाकर कहनेकी, सत्यको दबा देनेकी या कम-ज्यादा कर देनेकी वृत्ति मनुष्यकी स्वाभाविक कमजोरी है और मौन अुस पर विजय प्राप्त करनेके लिअे जरूरी है। अल्पभाषी मनुष्य अपनी वाणीमे क्वचित् ही विचारहीन होता है, वह अेक अेक शब्दको तौलेगा। कितने ही आदमी बोलनेके लिअे अधीर दिखाअी देते है। किसी

सभाका अध्यक्ष अैसा नहीं होता जिसके पास बोलना चाहनेवालोंकी पर्चीका ढेर न आता हो। और जिसे भी बोलने दिया जाता है वह आम तौर पर समयकी मर्यादाका अुल्लंघन करता है, अधिक समय मांगता है और अिजाजतके बगैर बोलता चला जाता है। यह सब बोलना संसारके लिअे शायद ही लाभदायक होता होगा। स्पष्ट ही अुतना समय बरबाद अवश्य होता है।

आत्मकथा (अंग्रेजी) १९४८, पृ० ८८

जब हम अिस विषय पर विचार करते हैं तो यह महसूस किये बिना नहीं रह सकते कि अगर हम अुद्विग्न प्राणी मौनका महत्त्व समझ लें तो दुनियाका आधा दुःख खतम हो जायगा। हम पर आधुनिक सभ्यताका आक्रमण होनेसे पहले हमें चौबीसमें से कमसे कम छः से आठ घंटे मौनके मिलते थे। आधुनिक सभ्यताने हमें रातको दिनमें और मूल्यवान मौनको व्यर्थके शोरगुलमें बदलना सिखा दिया है। यह कितनी बड़ी बात होगी अगर हम अपने व्यस्त जीवनमें रोज कमसे कम दो घंटे अपने मनके अेकान्तमें चले जायं और हमारे भीतर जो महान मौनकी वाणी है अुसे सुननेकी तैयारी करें। अगर हम सुननेको तैयार हों तो अीश्वरीय रेडियो तो हमेशा गाता ही रहता है। परंतु मौनके बिना अुसे सुनना असंभव है। संत थेरेसाने मौनके मधुर परिणामका सार बताते हुअे अेक मोहक चित्र खींचा है:

> "आप तुरन्त महसूस करेंगे कि आपकी अिन्द्रियां सिमटकर अपनी जगह आ जाती हैं, जिस तरह मधुमक्खियां अपने छत्तेमें लौट आती हैं, अुसी तरह वे वापिस आ जाती हैं, काम करनेके लिअे अपनेको बन्द कर लेती हैं और अिसके लिअे आपको कोअी प्रयत्न या चिन्ता नहीं करनी पड़ती। आपकी आत्मा अपने प्रति जो हिंसा करती रही है अुसका बदला अीश्वर यों देता है; और अुसे अिन्द्रियों पर असा प्रभुत्व प्रदान करता है कि जब वह अन्तर्मुख होना चाहती है तब अिन्द्रियोंको सिमटकर अेक जगह आ जानेके लिअे केवल अिशारा ही काफी हो जाता है। ज्यों ही आदेश मिलता है त्यों ही वे पहलेसे अधिक जल्दी लौट आती हैं। अन्तमें अिस प्रकार बार-बार अभ्यास करनेके बाद अीश्वर अुन्हें संपूर्ण शांति और ध्यानकी अवस्थाकी ओर ले जाता है।"

हरिजन, २४–९–'३८

मेरे लिअे यह (मौन) अब शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकारकी आवश्यकता बन गया है। शुरू शुरूमें वह कामके दबावमें राहत पानेको लिया जाता था। अिसके सिवा मुझे लिखनेको समय चाहिये था। परतु थोड़े दिनके अभ्यासके बाद मुझे अुसका आध्यात्मिक मूल्य मालूम हो गया। मेरे मनमें अचानक यह विचार दौड़ गया कि यही समय है जब मैं अीश्वरसे अच्छी तरह लौ लगा सकता हू। और अब तो मुझे अैसा महसूस होता है मानो मेरी मनोरचना स्वभावत मौनके लिअे ही हुअी है।

हरिजन, १०–१२–'३८

मेरे जैसे सत्यके जिज्ञासुके लिअे मौन बडा सहायक है। मौनवृत्तिमें आत्माको अुसका मार्ग अधिक स्पष्ट दिखाअी देता है और जो कुछ पकड़में नहीं आता या जिसे समझनेमें भ्रमकी सभावना होती है वह स्फटिककी तरह स्पष्ट दिखाअी देने लगता है। हमारा जीवन सत्यकी अेक लबी और कठोर खोज है और आत्माको अपनी पूरी अूचाअी तक पहुचनेके लिअे भीतरी विश्राम और शांतिकी जरूरत होती है।

हरिजन, १०–१२–'३८

१९

धर्मोंकी समानता

सब धर्म अेक ही स्थान पर पहुचनेके अलग अलग रास्ते है। अगर हम अेक ही लक्ष्य पर पहुच जाते है, तो अलग अलग रास्ते अपनानेमें क्या हर्ज है? वास्तवमें जितने मनुष्य है अुतने ही धर्म है।

हिन्द स्वराज (१९०९), पृ० ३६

मैं मानता हू कि कम या अधिक संसारके सभी बडे बडे धर्म सच्चे है। 'कम या अधिक' मैं अिसलिअे कहता हू कि मेरा विश्वास है कि मानव-प्राणीके अपूर्ण होनेसे जहां अुसका हाथ लगता है वहीं अपूर्णता आ जाती है। पूर्णत्व तो केवल अीश्वरका ही गुण है। और वह अवर्णनीय है, भाषामें अुसका वर्णन नहीं हो सकता। हा, मेरा यह विश्वास जरूर है कि प्रत्येक मनुष्यके लिअे अीश्वरके बराबर ही पूर्ण हो जाना सभव है। हम सबके लिअे

पूर्णताकी आकाक्षा रखना जरूरी है, परतु जब वह सुखद स्थिति प्राप्त हो जाती है तब वह अवर्णनीय, अकथनीय हो जाती है। और अिसलिअे मैं अत्यत नम्र भावसे स्वीकार करता हू कि वेद, कुरान और बाअिबल भी औश्वरके अपूर्ण वचन हैं, और चूकि हम अनेक विचारोंमें अिधर-अुधर बह जानेवाले अपूर्ण प्राणी हैं, अिसलिअे औश्वरकी अिस वाणीको पूरी तरह समझना भी हमारे लिअे असभव है।

यग अिडिया, २२–९–'२७

अेक औश्वरमे विश्वास होना सभी धर्मोका मूल आधार है। परतु मै अैसे किसी समयकी कल्पना नही कर सकता जब पृथ्वी पर व्यवहारमें अेक ही धर्म होगा। सिद्धान्तरूपमे, चूकि औश्वर अेक है, अिसलिअे अेक ही धर्म हो सकता है। परतु व्यवहारमे मै अैसे कोअी दो आदमी नही जानता जिनकी औश्वर-सबधी कल्पना अेक ही हो। अिसलिअे शायद हमेशा ही अलग अलग प्रकृतियो और जलवायु-सबधी परिस्थितियोके अनुसार अलग अलग धर्म होगे।

हरिजन, २–२–'३४

तात्कालिक आवश्यकता यह नही है कि अेक धर्म हो, बल्कि यह है कि विभिन्न धर्मोके अनुयायियोमे परस्पर आदर और सहिष्णुता हो। हम निर्जीव समानता नही प्राप्त करना चाहते, परतु विविधतामें अेकता चाहते हैं। परम्पराओ, पैतृक सस्कारो, जलवायु और दूसरी परिस्थितियोको मिटानेका प्रयत्न किया जायगा तो वह असफल ही नही होगा, बल्कि अधर्म भी होगा। धर्मोकी आत्मा अेक है, परतु वह अनेक रूपोमे प्रगट हुअी है। ये रूप अनन्त काल तक रहेगे। ज्ञानी पुरुष अिस बाहरी आवरणकी परवाह न करके विभिन्न आवरणोके भीतर रहनेवाली अेक ही आत्माके दर्शन करेगे।

यग अिडिया, २५–९–'२५

हिन्दू धर्ममे औसा, मुहम्मद, जरथुस्त्र और मूसा सबके लिअे समान स्थान है। मेरे लिअे ये अेक ही बागके सुन्दर पुष्प हैं या अेक ही शानदार पेडकी शाखाअे हैं। अिसलिअे वे समान रूपमे सत्य हैं, यद्यपि अुनकी प्रेरणा ग्रहण करनेवाले और अुनका अर्थ लगानेवाले मनुष्य हैं, अिसलिअे वे सब समान रूपमे अपूर्ण भी हैं। जिस ढगसे धर्मपरिवर्तनकी प्रवृत्ति आज भारतमे और अन्यत्र चल रही है अुसे स्वीकार करना मेरे लिअे असभव है। यह अेक

अैसी भूल है जो शायद शांतिकी और संसारकी प्रगतिमें सबसे बड़ी रुकावट है। यह कहना कि 'धर्म परस्पर-विरोधी हैं' अीश्वरकी निन्दा करना है। फिर भी भारतकी हालतका यह ठीक ठीक वर्णन है। भारतभूमि धर्मकी या धर्मोंकी जननी है, अैसा मैं मानता हूं। अगर वह सचमुच धर्मोंकी जननी है तो अुसके जननीत्वकी परीक्षा हो रही है। अेक अीसाअीकी अिच्छा अेक हिन्दूको अीसाअी बनानेकी या हिन्दूकी अिच्छा अीसाअीको हिन्दू बनानेकी क्यों होनी चाहिये? यदि हिन्दू भला या अीश्वर-परायण मनुष्य है तो अुसे अिससे संतोष क्यों न होना चाहिये? अगर मनुष्यकी नीति-अनीतिका कोअी खयाल नहीं करना हो तो किसी गिरजे, मस्जिद या मंदिरमें विशेष प्रकारकी पूजा-विधि अेक थोथी चीज हो जाती है; और वह व्यक्तिगत या सामाजिक विकासके लिअे रुकावट भी हो सकती है। और अमुक रीतिसे अुपासना करने या अमुक ही मंत्र जपनेका आग्रह भयंकर झगड़ोंका प्रबल कारण बन सकता है और अुसका परिणाम हिंसक लड़ाअियोंमें और धर्म अर्थात् स्वयं अीश्वरमें घोर अविश्वास अुत्पन्न होनेके रूपमें आ सकता है।

हरिजन, ३०–१–'३७

परंतु दूसरे धर्मोंके शास्त्रोंकी आलोचना करना या अुनके दोष बताना मेरा काम नहीं है। अलबत्ता यह मेरा विशेष अधिकार है और होना चाहिये कि अुनमें जो सचाअियां हों अुनकी मैं घोषणा करूं और अुन पर अमल करूं। अिसलिअे मुझे कुरानकी या पैगम्बरके जीवनकी जो बातें समझमें न आयें अुनकी आलोचना या निन्दा नहीं करनी चाहिये। परंतु अुनके जीवनके जिन पहलुओंको मैं समझ सका हूं और जो मुझे अच्छे लगे हैं, अुनकी प्रशंसा करनेके हर मौकेका मैं स्वागत करता हूं। रहीं वे बातें जिनके बारेमें कठिनाअियां अुपस्थित होती हैं; अुन्हें मैं धर्मप्रेमी मुसलमान मित्रोंकी दृष्टिसे देखकर संतोष कर लेता हूं और साथ ही अिस्लामके प्रसिद्ध मुस्लिम प्रवक्ताओंकी रचनाओंकी सहायतासे अुन्हें समझनेकी कोशिश करता हूं। दूसरे धर्मोंके प्रति अैसा पूज्य भाव रखकर ही मैं सब धर्मोंकी समानताके सिद्धान्तका पालन कर सकता हूं। परंतु हिन्दू धर्मको शुद्ध करने और शुद्ध रखनेके लिअे अुसके दोष बताना मेरा अधिकार भी है और कर्तव्य भी। परंतु जब अहिन्दू लोग हिन्दू धर्मकी आलोचना करने लगते हैं और अुसके दोष गिनाने लगते हैं, तब वे हिन्दू धर्मके बारेमें अपने अज्ञानका ही ढिंढोरा पीटते हैं और अुसे हिन्दू

दृष्टिसे देखनेकी अपनी असमर्थता प्रगट करते हैं। अिससे अुनकी दृष्टि विकृत होती है और निर्णय दूषित बनता है। अिस प्रकार हिन्दू धर्मके अहिन्दू आलोचकोंका मेरा अपना अनुभव मुझे अपनी मर्यादाओंका ज्ञान कराता है और अिस्लाम या औसाओी धर्म तथा अुनके संस्थापकोंकी आलोचना करनेके बारेमें सावधानी रखना सिखाता है।

हरिजन, १३–३–'३७

अिस्लामका अल्लाह वही है जो औसाअियोंका गॉड और हिन्दुओंका औश्वर है। जैसे हिन्दू धर्ममें औश्वरके बहुतसे नाम हैं, वैसे ही अिस्लाममें भी औश्वरके अनेक नाम हैं। अिन नामोंसे व्यक्तित्वका नहीं, गुणोंका निर्देश होता है और अल्पज्ञ मानवने अपने नम्र ढंगसे सर्वशक्तिमान औश्वरका वर्णन अुसे अनेक गुणवाचक विशेषण देकर करनेकी कोशिश की है, यद्यपि औश्वर सब विशेषणोंसे परे, अवर्णनीय, अकल्पनीय और अज्ञेय है। अिस औश्वरमें सजीव श्रद्धा होनेका अर्थ है मानव-जातिका भ्रातृत्व स्वीकार करना। अिसका अर्थ सब धर्मोंके लिअे समान आदरभाव भी है।

हरिजन, १४–५–'३८

२०

सहिष्णुता

मुझे सहिष्णुता (टॉलरेशन) शब्द पसन्द नहीं है, परंतु अिससे अच्छा कोओी शब्द ध्यानमें नहीं आया। सहिष्णुतामें खामखाह यह मान लिया जाता है कि हमारे अपने धर्मसे दूसरे धर्म घटिया हैं, जब कि अहिंसा हमें यह सिखाती है कि हम दूसरोंके धर्मका अुतना ही आदर करें जितना हम अपने धर्मका करते हैं। अिस प्रकार हम अपने धर्मकी अपूर्णताको स्वीकार कर लेते हैं। जो सत्यका जिज्ञासु प्रेमधर्मका पालन करता है वह अिस बातको तुरंत स्वीकार कर लेगा। अगर हमें सत्यके संपूर्ण दर्शन हो जाय तो हम जिज्ञासु नहीं रहते, तब तो औश्वरके साथ हमारी अेकात्मता हो जाती है, क्योंकि सत्य ही औश्वर है। परंतु चूंकि हम केवल जिज्ञासु हैं, अिसलिअे हम अपनी खोज जारी रखते हैं और हमें अपनी अपूर्णताका भान होता है। और अगर

हम खुद अपूर्ण है तो धर्मकी हमारी कल्पना भी अपूर्ण ही होगी। जैसे हमने अीश्वरके दर्शन नही किये है, वैसे ही धर्मकी पूर्णताके दर्शन भी नही किये है। अिस प्रकार हमारी कल्पनाका धर्म अपूर्ण होता है और अुसमे सदा विकास और नये नये अर्थ करनेकी गुंजाअिश रहती है। अिस प्रकारके विकाससे ही सत्यकी ओर, अीश्वरकी ओर प्रगति संभव होती है। और यदि मनुष्यो द्वारा प्रतिपादित सभी धर्म अपूर्ण है तो अुनकी पारस्परिक तुलनाका प्रश्न ही नही अुठता। सभी धर्मोमे सत्य प्रगट हुआ है, परंतु सभी अपूर्ण है और अुनमे भूल हो सकती है। दूसरे धर्मोके प्रति पूज्यभाव रखनेका यह मतलब नही कि हम अुनके दोषोके प्रति अंधे बन जाय। अपने धर्मके दोषोके प्रति तो हमे बहुत जागरूक रहना चाहिये। लेकिन दोषोके कारण अुसे छोड़नेका विचार नही करना चाहिये, बल्कि अुन दोषो पर विजय प्राप्त करनेकी कोशिश करनी चाहिये। जब हम सब धर्मोको समान दृष्टिसे देखेंगे तब हमे अपने धर्ममे दूसरे धर्मोकी सभी ग्राह्य बाते अपना लेनेमे न केवल कोअी संकोच न होगा, बल्कि हम अुसे अपना फर्ज समझेंगे।

तब यह सवाल अुठता है—अितने सारे धर्म क्यो होने चाहिये? हम जानते है कि धर्म विविध और अनेक है। आत्मा अेक है, परंतु वह अनेक शरीरोको अनुप्राणित करती है। हम शरीरोकी संख्या कम नही कर सकते, फिर भी हम आत्माकी अेकता स्वीकार करते है। जैसे अेक पेड़के अेक ही तना होता है, परंतु शाखाअे और पत्ते अनेक होते है, वैसे ही धर्म अेक है, परंतु मत-पन्थ कअी है। ये सब अीश्वरकी देन है, परंतु अुनमे मानवकी अपूर्णताका पुट है, क्योकि वे मनुष्यकी बुद्धि और भाषाके माध्यममे गुजरते है। अीश्वर-प्रदत्त धर्म भाषातीत है। अपूर्ण मनुष्योके पास जैसी भी भाषा है अुसीमे वे अुसे रख देते है, और अुनके शब्दोका अर्थ अुतने ही अपूर्ण मनुष्य करते है। तब फिर किसका अर्थ सही माना जाय? अपने अपने दृष्टिकोणसे सभी सही है, परंतु यह असंभव नही है कि सभी गलत हो। अिसीलिअे सहिष्णुताकी जरूरत है। अिसका अर्थ यह नही कि हम अपने धर्मके प्रति अुदासीन हो जाय, परंतु यह है कि अुसके प्रति हमारा प्रेम अधिक बुद्धिपूर्ण और शुद्ध हो। सहिष्णुतासे हमे आध्यात्मिक परिज्ञान प्राप्त होता है और वह धार्मिक कट्टरतासे अुतना ही दूर है जितना अुत्तरी ध्रुव दक्षिणी ध्रुवसे दूर है। धर्मका सच्चा ज्ञान मत-पन्थोके बीचकी दी[illegible]ोंको

हटाकर सहिष्णुता अुत्पन्न करता है। दूसरे धर्मोंके लिअे सहिष्णुता रखनेसे हमें अपने धर्मको सही तौर पर समझनेमें मदद मिलेगी।

स्पष्ट है कि सहिष्णुतासे सही-गलत या भले-बुरेके भेदमें फर्क नहीं पड़ता। यहां शुरूसे आखिर तक धर्मोंसे मेरा आशय संसारके मुख्य धर्मोंका ही रहा है, जो सब अेक ही तरहके मौलिक सिद्धान्तों पर आधारित हैं और जिनमें अुन सिद्धान्तोंका पालन करनेवाले सन्त स्त्री-पुरुष हो गये हैं और हैं। भलाअी और बुराअीके बारेमें हमारा दृष्टिकोण यह होना चाहिये कि हम दुष्टता और पापके प्रति तो घोर द्वेष रखें, परंतु दुष्ट और सज्जन, पापी और पुण्यात्मा सबके लिअे समान रूपमें अुदारभाव रखें।

यंग अिंडिया (बुलेटिन), २-१०-'३०

अिसलिअे आचरणका सुनहरा नियम यह है कि आपसमें यह समझकर सहिष्णुता रखी जाय कि हम सबके विचार अेकसे कभी नहीं होंगे और हम सत्यको आंशिक रूपमें और विभिन्न दृष्टियोंसे ही देख सकते हैं। भले-बुरेकी आन्तरिक पहचान सबके लिअे अेक-जैसी नहीं होती। अिसलिअे जहां वह व्यक्तिगत आचरणके लिअे अच्छा मार्गदर्शन कर सकती है, वहां अुस आचरणको सब पर लादना प्रत्येककी अन्तरात्माकी स्वतंत्रतामें — भले-बुरेकी अपनी आन्तरिक पहचानके अनुसार चलनेके अधिकारमें — असह्य हस्तक्षेप होगा।

यंग अिंडिया, २३-९-'२६

२१

धर्म-परिवर्तन

[विदेशी धर्म-प्रचारकोंके सामने दिये गये प्रवचनसे ।]

आप धर्म-प्रचारक भारतमे यह सोचकर आते है कि यह धर्महीनो, मूर्तिपूजकों और अीश्वरको न जाननेवालोका देश है। अीसाअी पादरियोमे अेक बहुत बडे पादरी बिशप हेबरने ये दो पक्तिया लिखी है जो मुझे सदा डककी तरह चुभती रही है· 'जहा और सब चीजे सुखदायक है, लेकिन आदमी ही बुरा है।' काश वे ये पक्तिया न लिखते। भारत भरकी मेरी यात्राओमे मेरा अपना अनुभव अिससे अुल्टा रहा है। मै देशके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक कोअी पूर्वग्रह न रखकर सत्यकी सतत खोजमे घूमा हू, परतु मै यह नही कह सकता कि अिस सुन्दर भूमि पर — जहा महान गगा, ब्रह्मपुत्रा और यमुना बहती है — बुरे आदमी रहते है। वे बुरे नही है। वे अुतने ही सत्यके जिज्ञासु है जितने मै और आप है, शायद हमसे अधिक हो। अिस पर मुझे अेक फ्रासीसी पुस्तककी याद आती है जिसका अेक फ्रासीसी मित्रने मेरे लिअे अनुवाद किया था। अुसमे ज्ञानकी खोजकी अेक काल्पनिक यात्राका वर्णन है। अेक दल भारतमे अुतरा और अुसे अेक अछूतकी छोटीसी झोपडीमे सत्य और अीश्वरके दर्शन हुअे। मै आपसे कहता हू कि अछूतोकी अैसी अनेक झोपडिया है जहां आपको अीश्वर अवश्य मिलेगा। वे तर्क नही करते परतु अिस विश्वास पर जमे रहते है कि अीश्वर है। वे अीश्वर पर अुसकी सहायताके लिअे निर्भर रहते है। और सहायता अुन्हे मिल भी जाती है। अिन अुदात्त अछूतोके बारेमे भारतके कोने-कोनेमे कअी कथाये कही जाती है। अुनमे से कुछ बुरे हो सकते है, फिर भी अुनमे मानवताके अत्यत अुदात्त नमूने मौजूद है। परतु क्या मेरा अनुभव केवल अछूतों पर ही समाप्त हो जाता है? नही। मै दावेसे कहता हू कि अब्राह्मण और ब्राह्मण भी अैसे है जो मानवताके अुतने ही बढिया नमूने है जितने दुनियाके पर्दे पर कही भी मिल सकते है। भारतमे आज भी अैसे ब्राह्मण है जो त्याग, अीश्वर-परायणता और नम्रताकी मूर्ति है। अैसे ब्राह्मण भी है जो तन-मन लगाकर अछूतोकी सेवा कर रहे

है; अुन्हें अछूतोंसे किसी पुरस्कारकी आशा नहीं है, परन्तु कट्टरपंथियोंसे बहिष्कारकी जरूर है। अुन्हें अिसकी परवाह नहीं, क्योंकि वे अछूतोंकी सेवा करके अीश्वरकी ही सेवा कर रहे हैं। मैं अपने अनुभवमें अिसका ठीक प्रमाण दे सकता हूं। मैं अत्यंत नम्रतापूर्वक ये सब बातें आपके सामने सिर्फ अिस-लिअे रख रहा हूं कि आप अिस देशको, जिसकी सेवा करने आप यहां आये हैं, अधिक अच्छी तरह जान लें। आप यहां भारतके लोगोंका कष्ट जानकर अुसे मिटाने आये हैं। परंतु मुझे आशा है कि आप यहां ग्रहण करनेकी वृत्ति भी लेकर आये हैं। और अगर भारतमें आपको देने लायक कोअी चीज है, तो आप अपने कान बन्द नहीं कर लेंगे, अपनी आंखें बन्द नहीं कर लेंगे, और अपने हृदय बन्द नहीं कर लेंगे, बल्कि अिस देशमें जो भी अच्छी बात होगी अुसे ग्रहण करनेको अपने कान, आंखें और सबसे अधिक अपने दिल खुले रखेंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि भारतमें बहुत कुछ अच्छाअी है। आप यह न मान लीजिये कि सन्त जॉनकी प्रसिद्ध प्रार्थनाका पाठ कर लेनेसे ही कोअी आदमी अीसाअी बन जाता है। अगर मैंने बाअिबल ठीक ठीक पढ़ी है तो मुझे असे अनेक मनुष्य ज्ञात हैं, जिन्होंने कभी अीसा-मसीहका नाम तक नहीं सुना, बल्कि अीसाअी धर्मके प्रमाणभूत अर्थको अस्वी-कार तक किया है। परंतु अगर अीसा मसीह हमारे बीच फिरसे अवतार लें तो वे अिन लोगोंको हममें से बहुतोंसे ज्यादा अपनायेंगे। अिसलिअे मैं आपसे कहता हूं कि अिस समस्या पर आप खुले दिल और नम्रताके साथ विचार कीजिये।

मैं आपको अुस बातचीतकी याद दिलाये बिना नहीं रह सकता, जिसका वर्णन मैंने दार्जिलिंगके मिशनरी लैंग्वेज स्कूलमें किया था। चीनके बारेमें अीसाअी प्रचारकोंका अेक शिष्ट-मंडल लॉर्ड सालिस्बरीकी सेवामें अुपस्थित हुआ और अुसने रक्षाकी मांग की। मुझे ठीक शब्द तो याद नहीं हैं, परंतु लॉर्ड सालिस्बरीने जो अुत्तर दिया अुसका सार बता सकता हूं। अुन्होंने कहा, "महाशयो, अगर आप अीसाअी धर्मका सन्देश प्रचारित करने चीन जा रहे हैं तो पार्थिव सत्ताकी सहायता मत मांगिये। अपने प्राण हथेली पर रखकर जाअिये और चीनके लोग आपको मारना चाहें तो असा मानिये कि आपने अीश्वरकी सेवामें अपने प्राण दे दिये हैं।' लॉर्ड सालिस्बरीने ठीक कहा था। अीसाअी धर्म-प्रचारक भारतमें अेक सांसारिक शक्तिकी छायामें

या यों कहिये कि अुसके सरक्षणमे आते है और अिससे अेक अैसी रुकावट खडी हो जाती है जिसे पार नही किया जा सकता।

अगर आप मुझे आकडे दे कि आपने जितने अनाथोंको अपनाकर अीसाअी धर्मकी दीक्षा दी है तो मैं अुन्हे मान लूगा, परतु अिससे मुझे यह विश्वास नही हो जायगा कि यह आपका मिशन है। मेरी रायमे आपका मिशन अिससे कही श्रेष्ठ है। आप भारतमे मनुष्य ढूढना चाहते है। और अगर आप यह चाहते है तो आपको गरीबोंकी झोपडियोमे जाना होगा और वह भी अुन्हे कुछ देनेको नही, बल्कि अुनसे लेनेको। चूकि मैं भारतके अीसाअी धर्म-प्रचारको और युरोपियनोका हितैषी होनेका दावा करता हू, अिसलिअे आपसे वही बात कहता हू जो मुझे दिलकी गहराअीमे महसूस होती है। मुझे आप लोगोमे ग्रहणशील वृत्ति, नम्रता और भारतके जन-साधारणसे तादात्म्य स्थापित करनेकी अिच्छाका अभाव मालूम होता है। मैंने दिलकी साफ बाते कही है। आशा है आपके हृदयोंसे वैसा ही अुत्तर मिलेगा।

यग अिडिया, ६–८–'२५

मेरी रायमे मानव-दयाके कार्योंकी आडमे धर्म-परिवर्तन करना कमसे कम अहितकर तो है ही। अवश्य ही यहाके लोग अिसे नाराजीकी दृष्टिसे देखते है। आखिर तो धर्म अेक गहरा व्यक्तिगत मामला है, अुसका सबध दिलसे है। कोअी अीसाअी डॉक्टर मुझे किसी बीमारीसे अच्छा कर दे तो मैं अपना धर्म क्यों बदल लू या जिस समय मैं अुसके असरमे हू तब वह डॉक्टर मुझसे अिस तरहके परिवर्तनकी आशा क्यो रखे या अैसा सुझाव क्यो दे? क्या डॉक्टरी सेवा अपने आपमे ही अेक पारितोषिक और सतोष नही है? या जब मैं किसी अीसाअी शिक्षा-संस्थामे शिक्षा लेता होअू तब मुझ पर अीसाअी शिक्षा क्यों थोपी जाय? मेरी रायमे ये बाते अूपर अुठानेवाली नही है, और अगर भीतर ही भीतर शत्रुता पैदा नही करती तो भी सदेह तो अुत्पन्न करती ही है। धर्म-परिवर्तनके तरीके अैसे होने चाहिये जिन पर सीजरकी पत्नीकी तरह किसीको कोअी शक न हो सके। धर्मकी शिक्षा लौकिक विषयोकी तरह नही दी जाती। वह हृदयकी भाषामे दी जाती है। अगर किसी आदमीमे जीता जागता धर्म है तो अुसकी सुगध गुलाबके फूलकी तरह अपने आप फैलती है। सुगध दिखाअी नही देती, अिसलिअे

फूलकी पखुडियोंके रंगकी प्रत्यक्ष सुन्दरतासे अुनकी सुगन्धका प्रभाव अधिक व्यापक होता है।

मैं धर्म-परिवर्तनके विरुद्ध नहीं हू, परन्तु मैं अुसके आधुनिक अुपायोंके विरुद्ध हू। आजकल और बातोंकी तरह धर्म-परिवर्तनने भी अेक व्यापारका रूप ले लिया है। मुझे अीसाअी धर्म-प्रचारकोंकी अेक रिपोर्ट पढी हुअी याद है, जिसमें बताया गया था कि प्रत्येक व्यक्तिका धर्म बदलनेमें कितना खर्च हुआ, और फिर 'अगली फसल' के लिअे बजट पेश किया गया था।

हा, मेरी यह राय जरूर है कि भारतके महान धर्म अुसके लिअे सब तरहसे काफी है। अीसाअी और यहूदी धर्मके अलावा हिन्दू धर्म और अुसकी शाखाअे, अिस्लाम और पारसी धर्म सब सजीव धर्म है। दुनियामें कोअी भी अेक धर्म पूर्ण नहीं है। सभी धर्म अुनके माननेवालोंके लिअे समान रूपसे प्रिय है। अिसलिअे जरूरत ससारके महान धर्मोंके अनुयायियोंमें सजीव और मित्रतापूर्ण सपर्क स्थापित करनेकी है, न कि हर सम्प्रदाय द्वारा दूसरे धर्मोंकी अपेक्षा अपने धर्मकी श्रेष्ठता जतानेकी व्यर्थ कोशिश करके आपसमें सघर्ष पैदा करनेकी। अैसे मित्रतापूर्ण संबंधके द्वारा हमारे लिअे अपने अपने धर्मोंकी कमिया और बुराअिया दूर करना सभव होगा।

मैंने अूपर जो कुछ कहा है अुससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जिस प्रकारका धर्म-परिवर्तन मेरी दृष्टिमें है अुसकी हिन्दुस्तानमें जरूरत नहीं है। आजकी सबसे बडी आवश्यकता यह है कि आत्मशुद्धि, आत्म-साक्षात्कारके अर्थमें धर्म-परिवर्तन किया जाय। परतु धर्म-परिवर्तन करनेवालोंका यह हेतु कभी नहीं होता। जो भारतका धर्म-परिवर्तन करना चाहते है, अुनसे क्या यह नहीं कहा जा सकता कि 'वैद्यजी, आप अपना ही अिलाज कीजिये?'

यग अिंडिया, २३-४-'३१

जब मैं जवान था अुस समयकी अेक हिन्दूके अीसाअी हो जानेकी बात मुझे याद है। सारे नगरने समझ लिया था कि अेक अच्छे कुलके हिन्दूने अीसा मसीहके नाम पर गोमास और मदिराका सेवन शुरू कर दिया है और अपनी राष्ट्रीय पोशाक छोड दी है। बादमें मुझे मालूम हुआ और मेरे अनेक पादरी मित्रोंने भी बताया कि धर्म बदलनेवाले लोग बधनके जीवनसे निकल-कर आजादीके जीवनमें, गरीबीसे निकलकर आरामके जीवनमें प्रवेश करते

हैं। जब मैं भारतवर्षके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक घूमता हूं तो मुझे अैसे बहुतसे भारतीय अीसाअी मिलते हैं जिन्हें अपने जन्मसे और अपने बाप-दादाओंके धर्मसे शर्म आती है। अेंग्लो-अिंडियन लोग युरोपियनोंकी जो नकल करते हैं वही काफी बुरी है, परंतु भारतीय अीसाअी जिस तरह अुनकी नकल करते हैं वह तो अपने देशके प्रति और मैं यहां तक कहूंगा कि अपने नये धर्मके प्रति भी द्रोह है। 'न्यू टेस्टामेंट' में अेक वचन है जिसमें अीसाअीको यह आदेश दिया गया है कि मांसाहारसे तुम्हारे पड़ोसियोंको बुरा लगे तो अुसे छोड़ दिया जाय। मेरा खयाल है कि यहां मांसमें मदिरापान और पोशाक भी आ जाती है। पुराने रिवाजोंमें जितनी भी बुराअियां हैं अुन सबका कठोर बनकर त्याग कर दिया जाय तो मैं अुसे समझ सकता हूं। परंतु जहां किसी बुराअीका प्रश्न ही न हो बल्कि प्राचीन रिवाज अिष्ट हो वहां तो अुसे छोड़ना पाप ही है, क्योंकि हमें निश्चित रूपसे मालूम रहता है कि अुसके त्यागसे अिष्ट मित्रोंको गहरी चोट पहुंचेगी। धर्म-परिवर्तनका अर्थ राष्ट्रीयताका त्याग कभी नहीं होता। धर्म-परिवर्तनका अर्थ निश्चित रूपसे यह होना चाहिये कि पुराने धर्मकी बुराअी छोड़ दी जाय, नये धर्मकी सारी अच्छाअी ले ली जाय और नयेमें जो भी बुराअी हो अुससे पूरी तरह बचा जाय। अिसलिअे धर्म-परिवर्तनका यह नतीजा होना चाहिये कि हम अपने देशके प्रति अधिक भक्तिका, अीश्वरके सामने अधिक समर्पणका और अधिक आत्मशुद्धिका जीवन व्यतीत करें। . . . क्या यह सचमुच दुःखद बात नहीं है कि बहुतसे भारतीय अीसाअी अपनी मातृभाषाको छोड़कर अपने बच्चोंको अंग्रेजीमें ही बोलनेकी शिक्षा देते हैं? क्या अैसा करके वे अपने बच्चोंको जिस प्रजाके बीचमें अुन्हें रहना है अुससे पूरी तरह अलग नहीं कर लेते?

यंग अिंडिया, २०-८-'२५

अीसाके अुपदेशोंके अनुसार जीवन जीना शुरूमें, बीचमें और अखीरमें सबसे कारगर रास्ता है। . . . पादरियोंका धर्मोपदेश मेरे कानोंको खटकता है; वह मुझे नहीं जंचता। जो धर्म-प्रचारक भाषणों द्वारा अुपदेश देते हैं अुन पर मुझे सन्देह होने लगता है। परंतु जो लोग कभी धर्मका अुपदेश न देकर अपने-अपने ज्ञानके अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं अुनसे मैं प्रेम करता हूं। अुनके जीवन शान्त होते हैं, परंतु सबसे प्रभावकारी प्रमाण भी होते

हैं। अिसलिये मैं यह तो नही कह सकता कि क्या अुपदेश दिया जाय, परन्तु यह जरूर कह सकता हू कि सेवा और अत्यन्त सादगीका जीवन अुत्तम अुपदेश है। गुलावके फूलको कोअी अुपदेश देनेकी जरूरत नही पड़ती, वह सिर्फ़ अपनी सुगन्ध फैलाता है। यह सुगन्ध ही अुसका अपना अुपदेश है। अगर अुसमे मनुष्यकी-सी समझ हो और वह कुछ अुपदेशकोको नौकर रख ले, तो जितने फूलोकी विक्री अुनकी सुगन्धसे हो सकती है अुससे अधिक प्रचारकोके अुपदेशसे नही हो सकती। धार्मिक और आध्यात्मिक जीवनकी सुगन्ध गुलावके फूलसे अधिक मधुर और सूक्ष्म होती है।

हरिजन, २९–३–'३५

जैसे मै अपना धर्म वदलनेकी कल्पना नही कर सकता, वैसे ही किसी ओसाअी या मुसलमान या पारसी या यहूदीको अपना धर्म वदलनेके लिअे कहनेकी कल्पना भी नही कर सकता। अिसलिअे मुझे जितना अपने धर्मके अनुयायियोकी गंभीर मर्यादाओका ध्यान है, अुतना ही दूसरे धर्मोके अनुयायियोकी मर्यादाओका ध्यान है। और जव मैं यह देखता हू कि मुझे अपने आचरणको अपने धर्मके अनुसार वनानेमें और अुसे अपने सहधर्मियोंको समझानेमे अपनी सारी शक्ति खर्च कर देनी पड़ती है, तव मुझे दूसरे धर्मोके अनुयायियोंको अुपदेश देनेका तो खयाल भी नही आता। मनुष्यके आचरणके लिअे यह सुन्दर नियम है: 'दूसरोंके काजी न वनो, नही तो दूसरे तुम्हारे काजी वनेंगे।' मेरे मन पर यह विश्वास दिनोदिन जमता जा रहा है कि महान और सम्पन्न ओसाअी मिशन भारतकी सच्ची सेवा करेंगे, यदि वे अपनेको अिस वातके लिअे तैयार कर ले कि वे दयाके कामों तक ही अपनेको सीमित रखेंगे और अुसमें भारतको या कमसे कम अुसके भोले-भाले ग्रामीणोको ओसाअी वनानेकी भावना न रखेंगे तथा अिस तरह अुनकी सामाजिक रचनाको नष्ट न करेंगे। क्योंकि अुसमे अनेक दोष होते हुअे भी वह वाहरी और भीतरी हमलोके सामने अनन्त कालसे टिकी हुअी है। ओसाअी धर्म-प्रचारक और हम चाहे या न चाहे, तो भी हिन्दू धर्ममे जो सत्य है वह टिका रहेगा और जो असत्य है वह नष्ट हो जायगा। किसी भी सजीव धर्मको यदि जीवित रहना है तो स्वय अुसके भीतर जीवन-शक्ति होनी चाहिये।

हरिजन, २८–९–'३५

शुद्धि और तबलीग

मेरी रायमे ओसाअियोमे और अुससे कुछ कम मुसलमानोंमे जिस अर्थमें धर्म-परिवर्तनको समझा जाता है वैसी कोअी चीज हिन्दू धर्ममे नही है। मेरे खयालसे आर्यसमाजने अपने धर्म-प्रचारकी योजना बनानेमे ओसाअियोकी नकल की है। यह आजकलकी पद्धति मुझे नही जचती। अिससे लाभकी अपेक्षा हानि अधिक हुअी है। यद्यपि धर्म-परिवर्तन सर्वथा हृदयकी और अपने तथा ओश्वरके बीचकी वस्तु समझी जाती है, फिर भी अुसे अितना बाजारू बना दिया गया है कि अुसमे मुख्यत स्वार्थवृत्तिको ही जगानेकी कोशिश की जाती है। . . मेरी हिन्दू धर्मवृत्ति मुझे सिखाती है कि थोडे या बहुत सभी धर्म सच्चे है। सबकी अुत्पत्ति अेक ही ओश्वरसे हुअी है, परतु सब धर्म अपूर्ण है, क्योकि वे अपूर्ण मानव-माध्यमके द्वारा हम तक पहुचे है। सच्चा शुद्धिका आन्दोलन यह होना चाहिये कि हम सब अपने अपने धर्ममे रहकर पूर्णता प्राप्त करनेका प्रयत्न करे। अिस प्रकारकी योजनामे अेकमात्र चरित्र ही मनुष्यकी कसौटी होगा। अगर अेक वाडेसे निकलकर दूसरेमे चले जानेसे कोअी नैतिक अुत्थान न होता हो तो जानेसे क्या लाभ? शुद्धि या तबलीगका फलितार्थ ओश्वरकी सेवा ही होना चाहिये। अिसलिअे मै ओश्वरकी सेवाके खातिर यदि किसीका धर्म बदलनेकी कोशिश करू तो अुसका क्या अर्थ होगा, जब मेरे ही धर्मको माननेवाले रोज अपने कर्मोसे ओश्वरका अिनकार करते है? दुनियावी बातोके बनिस्बत धर्मके मामलोमे यह कहावत अधिक लागू होती है कि 'वैद्यजी, पहले अपना अिलाज कीजिये'।

यंग अिंडिया, २९-५-'२४

२२

मैं हिन्दू क्यों हूं ?

चूंकि मैं पैतृक संस्कारोंको मानता हूं और अेक हिन्दू परिवारमें पैदा हुआ हू, अिसलिअे मैं हिन्दू रहा हू। अगर मुझे मालूम हो जाय कि हिन्दू धर्मका मेरे नैतिक विचारों या आध्यात्मिक विकासके साथ मेल नहीं बैठता, तो मैं अुसे छोड दूगा। मगर जाच करके मैंने पाया है कि मैं जितने धर्मोंको जानता हू अुन सबमे हिन्दू धर्म सबसे अधिक सहिष्णु है। अिसमें कट्टरताका जो अभाव है वह मुझे बहुत पसन्द आता है, क्योंकि अिससे अुसके अनुयायीको आत्माभिव्यक्तिके लिअे अधिकसे अधिक अवसर मिलता है। हिन्दू धर्म अेकागी धर्म न होनेके कारण अुसके अनुयायी न सिर्फ अन्य सब धर्मोका आदर कर सकते है, परतु दूसरे धर्मोमे जो कुछ अच्छाअी हो अुसकी प्रशसा भी कर सकते है और अुसे हजम भी कर सकते है। अहिंसा सब धर्मोमें समान है। परतु हिन्दू धर्ममे वह सर्वोच्च रूपमे प्रगट हुअी है और अुसका प्रयोग भी हुआ है। (मैं जैन धर्म या बौद्ध धर्मको हिन्दू धर्मसे अलग नहीं मानता।) हिन्दू धर्म न केवल मनुष्यमात्रकी, बल्कि प्राणीमात्रकी अेकतामे विश्वास रखता है। मेरी रायमे गायकी पूजा करके अुसने दयाधर्मके विकासमे अद्भुत सहायता की है। यह प्राणीमात्रकी अेकतामे और अिसलिअे पवित्रतामे विश्वास रखनेका व्यावहारिक प्रयोग है। पुनर्जन्मकी महान धारणा अिस विश्वासका सीधा परिणाम है। अन्तमे वर्णाश्रम धर्मका आविष्कार सत्यकी निरन्तर शोधका भव्य परिणाम है।

यंग अिंडिया, २०-१०-'२७

मैं अपने आपको सनातनी हिन्दू कहता हू, क्योंकि .

(१) मेरा वेदो, अुपनिषदो, पुराणो और जिन्हे हिन्दू धर्मशास्त्र कहा जाता है अुन सबमे और अिसलिअे अवतारों तथा पुनर्जन्ममे भी विश्वास है;

(२) वर्णाश्रम धर्ममे मेरा विश्वास शुद्ध वैदिक अर्थमे है, न कि अुसके वर्तमान प्रचलित और भद्दे अर्थमे;

(३) गोरक्षामें मेरा विश्वास प्रचलित अर्थसे कहीं अधिक विशाल अर्थमें है,

(४) मूर्तिपूजामें मेरा अविश्वास नहीं है।

पाठक देखेंगे कि वेदों अथवा अन्य धर्मशास्त्रोंके संबंधमें मैंने अपौरुषेय या ओीश्वर-प्रणीत शब्दका प्रयोग जानबूझ कर नहीं किया है। कारण, मैं नहीं मानता कि केवल वेद ही अपौरुषेय या ओीश्वर-प्रणीत हैं। मैं मानता हूं कि वेदोंमें जितनी दैवी प्रेरणा है अुतनी ही बाअिबल, कुरान और जेन्दावस्तामें भी है। हिन्दू धर्मशास्त्रोंमें मेरी श्रद्धा है, अिसलिये यह जरूरी नहीं कि मैं अुनके प्रत्येक शब्द और प्रत्येक श्लोकको ओीश्वर-प्रेरित मान लूं। मेरा यह दावा भी नहीं है कि मुझे अिन अद्भुत ग्रंथोंका कोओी प्रत्यक्ष ज्ञान है। मगर मेरा यह दावा जरूर है कि मैं धर्मशास्त्रोंके मूल अुपदेशकी सचाओीको जानता और अनुभव करता हूं। अुनका कोओी अर्थ कितना ही पांडित्यपूर्ण क्यों न हो, यदि वह मेरी बुद्धि या नैतिक शुद्धिको अग्राह्य है तो मैं अुससे बंधनेसे अिनकार करता हूं। अगर वर्तमान शंकराचार्यों और शास्त्रियोंका यह दावा हो कि वे हिन्दू धर्मशास्त्रोंका जो अर्थ करते हैं वही अेकमात्र सच्चा अर्थ है तो मैं अुसका जोरोंसे खंडन करता हूं। अिसके विपरीत मैं मानता हूं कि अिन धर्मग्रंथोंका हमारा वर्तमान ज्ञान अत्यंत अव्यवस्थित स्थितिमें है। अिस धर्मसूत्र पर मेरी अटूट श्रद्धा है कि जिसने अहिंसा, सत्य और ब्रह्मचर्यमें पूर्णता प्राप्त नहीं की हो और जिसने समस्त परिग्रह छोड न दिया हो, अुसे शास्त्रोंका सच्चा ज्ञान नहीं होता। गुरु-प्रणालीमें मेरा विश्वास है। परंतु अिस युगमें लाखों मनुष्योंको गुरु नहीं मिलते, क्योंकि विरलोंमें ही पूर्ण शुद्धता और पांडित्यका सामंजस्य होता है। परंतु अपने धर्मकी सचाओी जाननेमें हमें निराश होनेकी आवश्यकता नहीं, क्योंकि प्रत्येक महान धर्मकी तरह हिन्दू धर्मके मूलभूत सिद्धान्त सनातन और समझनेमें सुगम हैं। हर हिन्दू ओीश्वरमें, अुसके 'अेकमेवाद्वितीयम्' होनेमें, पुनर्जन्ममें और मोक्षमें विश्वास रखता है। . मैं शुरूमें ही सुधारक रहा हूं। परंतु मेरा अुत्साह मुझे हिन्दू धर्मकी किसी मूलभूत बातको अस्वीकार करनेके लिअे नहीं कहता। मैंने कहा है कि मूर्तिपूजामें मेरा अविश्वास नहीं है। मूर्तिको देखकर मुझमें कोओी पूजाका भाव अुदय नहीं होता। परंतु मेरा विचार है कि मूर्तिपूजा मनुष्यके स्वभावका ही अेक अंग है। हमें बाह्य प्रतीकोंकी लालसा होती ही है। अन्यथा

हमे जो शाति देवालयमे मिलती है वह अन्यत्र क्यो नही मिलती? मूर्तियां अीश्वरकी अुपासनामे सहायक होती है। कोअी भी हिन्दू किसी मूर्तिको अीश्वर नही समझता। मैं मूर्तिपूजाको पाप नही मानता।

अिन बातोंसे स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म कोअी अेकागी धर्म नहीं है। अुसमें ससारके सब पैगम्बरो या विभूतियोंकी पूजाके लिअे स्थान है। साधारण अर्थमे वह प्रचारक धर्म नही है। बेशक, अुसने अनेक जातियोको अपनेमें समा लिया है। परन्तु यह क्रिया विकासक्रमके न्यायसे अदृश्य रूपमें हुअी है। हिन्दू धर्म कहता है कि सब अपने ही विश्वास या धर्मके अनुसार अीश्वरकी पूजा करे, अिसलिअे वह सब धर्मोके साथ शान्तिसे रहता है।

यग अिडिया, ६–१०–'२१

२३

बौद्ध धर्म, अीसाअी धर्म और अिस्लाम

मैंने असख्य बार यह सुना है और बौद्ध धर्मकी भावनाको प्रगट करनेका दावा करनेवाली पुस्तकोंमे पढा है कि बुद्ध अीश्वरको नही मानते थे। मेरे नम्र मतमे अैसा मानना बुद्धके मुख्य अुपदेशके विरुद्ध है। . . . यह गडबड अिसलिअे पैदा हुअी है कि अुन्होने अपने युगमे अीश्वरके नाम पर चलनेवाली सभी हीन वस्तुओंको अस्वीकार कर दिया था, और वह ठीक भी था। बेशक, अुन्होने अिस धारणाको अस्वीकार कर दिया था कि अीश्वर नामधारी कोअी प्राणी द्वेषवश काम करता है, अपने कर्मो पर पश्चात्ताप कर सकता है, पार्थिव राजाओंकी तरह वह भी प्रलोभनो और रिश्वतोमे फस सकता है और अुसका कृपापात्र बना जा सकता है। अुनकी सारी आत्माने अिस विश्वासके विरुद्ध प्रबल विद्रोह किया था कि अीश्वर नामधारी प्राणीको अपने ही पैदा किये हुअे जीवित प्राणियोका ताजा खून अच्छा लगता है और अिससे वह प्रसन्न होता है। अिसलिअे बुद्धने अीश्वरको फिरसे अुचित स्थान पर बैठा दिया और जिस अनधिकारीने अुस सिंहासनको हस्तगत कर लिया था अुसे पदभ्रष्ट कर दिया। अुन्होंने जोर

देकर पुन. अिन बातकी घोषणा की कि अिस विश्वका नैतिक शासन शाश्वत और अपरिवर्तनीय है। अुन्होंने नि.संकोच कहा कि नियम ही ओश्वर है।

यंग अिंडिया, २४–११–'२७

ओश्वरके नियम शाश्वत और अपरिवर्तनीय है और स्वयं ओश्वरसे भी अलग नही किये जा सकते। ओश्वरकी पूर्णताकी यह अनिवार्य शर्त है। अिसीलिअे यह भारी गडबड पैदा हुअी कि बुद्ध ओश्वरको नही मानते थे और केवल नैतिक नियमोंमें विश्वास रखते थे। और ओश्वर-संबंधी अिस गड-बडके कारण ही अुस महान शब्द 'निर्वाण' को ठीक तरहसे समझनेके बारेमे भी गडबड़ पैदा हुअी। नि.सन्देह निर्वाणका अर्थ सर्वथा नाश नही है। जहा तक मै बुद्धके जीवनका केन्द्रीय तथ्य समझ पाया हू, निर्वाणका अर्थ है हममें जो कुछ हीन है, जो कुछ बुरा है, जो कुछ विकारमय और विकारके वश होने जैसा है अुसका संपूर्ण नाश। निर्वाण श्मशानकी-सी कालिमापूर्ण जड शांति नही, किन्तु सजीव शान्ति है। वह अैसी आत्माका सजीव आनंद है, जिसे अपना भान है और शाश्वत तत्त्वके हृदयमें अपना स्थान प्राप्त कर चुकनेका ज्ञान है।

यंग अिंडिया, २४–११–'२७

मानव-जातिको बुद्धकी यह बड़ी देन तो थी ही कि अुन्होंने ओश्वरको अुसके शाश्वत स्थान पर फिरसे प्रस्थापित किया, परंतु मेरी नम्र रायमे मनुष्य-जातिको अुनकी अिससे भी बडी देन थी सभी प्राणियोंके लिअे, चाहे वे कितने ही छोटे हों प्रेम तथा आदरभाव रखनेका आग्रह।

यंग अिंडिया, २०–१–'२७

मैं कह सकता हूं कि किसी अैतिहासिक ओसामे मेरी कभी दिलचस्पी नही रही। अगर कोअी यह साबित कर दे कि ओसा नामधारी मनुष्य कभी हुआ ही नही और बाअिबलका वर्णन कपोलकल्पित है, तो मुझे अुसकी परवाह नही होगी, क्योंकि अुस सूरतमे भी ओसाका महान अुपदेश मेरे लिअे सत्य ही रहेगा।

यंग अिंडिया, ३१–१२–'३१

मैं यह नही मान सकता कि केवल अीसामें ही देवांश था। अुनमें अुतना ही दिव्यांश था जितना कृष्ण, राम, मुहम्मद या जरथुस्त्रमें था। अिसी तरह मैं जैसे वेदों या कुरानके प्रत्येक शब्दको अीश्वर-प्रेरित नही मानता, वैसे ही बाअिबलके प्रत्येक शब्दको भी अीश्वर-प्रेरित नही मानता। बेशक, अिन पुस्तकोंकी समस्त वाणी अीश्वर-प्रेरित है, परतु अलग अलग वस्तुओंको देखने पर अुनमें से अनेकोंमें मुझे अीश्वर-प्रेरणा नही मिलती। मेरे लिअे बाअिबल अुतनी ही आदरणीय धर्म-पुस्तक है, जितनी गीता और कुरान हैं।

हरिजन, ६–३–'३७

मेरे लिअे अीसाका क्या . . . अर्थ है? मेरे खयालसे वे मानव-जातिके महानतम गुरुओंमें से अेक थे। अुनके अनुयायियोंके लिअे वे अीश्वरके अेकमात्र पुत्र थे। मैं अिस विश्वासको मानूं या न मानूं, लेकिन क्या अिससे मेरे जीवन पर अीसाका प्रभाव कम या ज्यादा हो सकता है? क्या अुनके अुपदेश और सिद्धान्तका सारा गौरव मेरे लिअे निषिद्ध हो जायगा? मैं यह नही मान सकता।

'दि मॉडर्न रिव्यू', अक्तूबर, १९४१

मैं मानता हूं कि संसारके विभिन्न धर्मोंके गुण-दोषोंका अंदाजा लगाना असंभव है और मेरा यह भी विश्वास है कि अैसी कोशिश करना अनावश्यक और हानिकारक भी है। परतु मेरी रायमें अुनमें से प्रत्येकके मूलमें अेक ही प्रेरक हेतु है — मानवके जीवनको अूंचा अुठाने और अुसे अुद्देश्य प्रदान करनेकी अिच्छा। और चूंकि अीसाके जीवनमें अुपरोक्त महत्त्व और श्रेष्ठता है, अिसलिअे मैं मानता हूं कि वे केवल अीसाअी धर्मके ही नही हैं, परंतु सारे जगतके और तमाम जातियों और लोगोंके भी हैं, भले ही वे किसी भी झंडे, नाम या सिद्धान्तके मातहत काम करें, किसी भी धर्मको मानें या अपने बापदादोंसे पाये हुअे देवताकी पूजा करें।

'दि मॉडर्न रिव्यू', अक्तूबर, १९४१

मैं अीसाके 'पर्वतीय अुपदेश' और भगवद्गीतामें कोअी अन्तर नही देख पाया हूं। जो बात अुस अुपदेशमें विशद ढंगसे वर्णन की गअी है, अुसीको भगवद्गीतामें अेक वैज्ञानिक सूत्रका रूप दे दिया गया है। वह माने

हुअे अर्थमे वैज्ञानिक ग्रंथ भले न हो, परन्तु अुसमे प्रेमधर्मको — या जैसा मैं कहूगा, समर्पण-धर्मको — तर्क द्वारा शास्त्रीय ढगसे सिद्ध करनेकी कोशिश की गअी है। 'पर्वतीय अुपदेश' अद्भुत भाषामे अुसी धर्मका वर्णन करता है। 'न्यू टेस्टामेण्ट' से मुझे अपार सात्वना और असीम आनद मिला, क्योंकि वह 'ओल्ड टेस्टामेण्ट' के कुछ भागोंसे हुअी विरक्तिके बाद मेरे पढनेमें आया। मान लीजिये कि आज मुझे गीतासे वचित कर दिया जाय और मैं अुसकी सारी बातें भूल जाअूं, परन्तु मेरे पास पर्वतीय अुपदेशकी पुस्तिका हो तो मुझे अुससे अुतना ही आनन्द प्राप्त होगा जितना गीतासे होता है।

यग अिडिया, २२–१२–'२७

अवश्य ही मैं अिस्लामको अुसी अर्थमें शातिका धर्म मानता हू, जिस अर्थमें अीसाअी, बौद्ध और हिन्दू धर्म शातिके धर्म हैं। बेशक मात्राका फर्क है, परन्तु अिन धर्मोंका अुद्देश्य शांति है।

यग अिडिया, २०–१–'२७

भारतकी राष्ट्रीय संस्कृतिके लिअे अिस्लामकी विशेष देन तो यह है कि वह अेक अीश्वरमें खालिस विश्वास रखता है और जो लोग अुसके दायरेके भीतर हैं अुनके लिअे व्यवहारमे वह मानव-भ्रातृत्वके सत्यको लागू करता है। अिन्हें मैं अिस्लामकी दो विशेष देनें मानता हू, क्योंकि हिन्दू धर्ममे भ्रातृभाव बहुत अधिक दार्शनिक बन गया है। अिसी तरह दार्शनिक हिन्दू धर्ममे अीश्वरके सिवा और कोअी देवता नही है, फिर भी अिससे अिनकार नही किया जा सकता कि व्यवहारमे हिन्दू धर्म अिस मामलेमे अितना कट्टर और जोरदार रवैया नही रखता जितना अिस्लाम रखता है।

यंग अिडिया, २१–३–'२९

२४

ओिश्वर और देवता

पादरीने सुझाया, 'अगर हिन्दू धर्म ओकेश्वरवादी बन जाय तो ओीसाओी धर्म और हिन्दू धर्म मिलकर भारतकी सेवा कर सकते हैं।'

गांधीजीने कहा, 'सहयोग हो तो मुझे बड़ी खुशी होगी। परंतु वह हो नहीं सकता, अगर ओीसाओी मिशन हिन्दू धर्मकी खिल्ली अुड़ाते रहें और यह कहते रहें कि जब तक कोओी हिन्दू धर्मको छोड़ न दे और अुसकी निन्दा न करे तब तक वह स्वर्गको नहीं जा सकता। परंतु मैं ओक ओैसे भले ओीसाओीकी कल्पना कर सकता हूं, जो चुपचाप अपना काम करता रहे और जैसे गुलाबके फूलको अपनी सुगन्ध फैलानेके लिओे किसी भाषणकी जरूरत नहीं होती और वह सुगन्ध फैलाता रहता है — क्योंकि सुगन्ध फैलाये बगैर वह रह नहीं सकता — अुसी तरह वह ओीसाओी हिन्दू जातियोंको अपने जीवनकी मधुर सुगन्धसे प्रभावित करता रहे। सच्चे आध्यात्मिक जीवनमें यही बात होती है। ओैसा हो तो अवश्य ही पृथ्वी पर शांति और मनुष्योंमें सद्‌भावना स्थापित होगी। परतु वह तब तक नहीं होगी जब तक ओीसाओी धर्ममें आक्रामकता या बलवाद रहेगा। बाअिबलमें तो यह बात नहीं पाओी जाती, परंतु जर्मनी और दूसरे देशोंमें आपको यह बात मिलेगी।'

'परंतु यदि भारतवासी ओक ओीश्वरमें विश्वास रखने लगें और मूर्तिपूजा छोड़ दें, तो क्या आपके खयालसे सारी मुश्किल हल नहीं हो जायगी?'

'क्या अिससे ओीसाअियोंको सन्तोष हो जायगा? वे सब ओकमत हैं?'

कैथलिक पादरीने कहा, 'बेशक सारे ओीसाओी सम्प्रदाय आपसमें ओक-मत नहीं हैं।'

'तब तो आप केवल सैद्धान्तिक प्रश्न पूछ रहे हैं। और मैं आपसे पूछता हूं कि यद्यपि अिस्लाम और ओीसाओी धर्म ओक ही ओीश्वरमें माननेवाले कहे जाते हैं फिर भी क्या अुन दोनोंमें मेल हो गया है? अगर अिन दोनोंमें मेल नहीं हुआ तो आपके सुझाये हुओे ढंग पर ओीसाअियों और हिन्दुओंके मिल जानेकी तो और भी कम आशा है। मेरे पास अपना ही हल है; परन्तु पहले तो मैं अिस वर्णनको ही नहीं मानता कि हिन्दू अनेक ओीश्वरोंको मानते हैं और मूर्तिपूजक हैं। वे यह जरूर कहते हैं कि अनेक देवता हैं,

परंतु वे यह घोषणा भी असदिग्ध रूपमे करते है कि अीश्वर अेक है और वह देवताओंका भी अीश्वर है। अिसलिअे यह कहना अनुचित है कि हिन्दू अनेक अीश्वरोको मानते है। वेशक, वे अनेक लोकोको मानते है। जैसे अेक मनुष्योका लोक है और दूसरा जानवरोका, ठीक वैसे ही अेक अैसा लोक भी है जिसमे देवता नामधारी श्रेष्ठ प्राणी रहते है, जो हमे दिखाअी तो नही देते फिर भी है अवश्य। सारी बुराअी देव या देवता शब्दके अग्रेजी अनुवादसे पैदा हुअी है। अुसके लिअे आपको 'गॉड' से अच्छा शब्द नही मिला है। परंतु 'गॉड' अीश्वर है, देवाधिदेव है, देवताओंका अीश्वर है। अिस प्रकार आप देखेगे कि विभिन्न दैवी प्राणियोंका वर्णन करनेके लिअे 'गॉड' शब्दके प्रयोगने ही यह गडवड पैदा की है। मै मानता हू कि मै पक्का हिन्दू हू, परतु मैने कभी अनेक अीश्वर नही माने। मैने अपने वचपनमे भी यह विश्वास नही रखा और किसीने मुझे कभी अैसा सिखाया भी नही।

मूर्तिपूजा

'रही वात मूर्तिपूजाकी, सो किसी न किसी रूपमे अिसे माने विना आपका काम नही चल सकता। अेक मस्जिदकी, जिसे अेक मुसलमान खुदाका घर कहता है, रक्षा करनेके लिअे वह अपनी जान क्यो दे देता है? और अेक अीसाअी गिरजेमे क्यो जाता है, और जव अुससे शपथ लिवानेकी जरूरत होती है तव वह वाअिवलकी शपथ क्यो लेता है? यह वात नही कि मुझे अिसमे कोअी आपत्ति है। और मस्जिद तथा मकवरे वनानेके लिअे अपार धनका दान करना मूर्तिपूजा नही तो क्या है? और जव रोमन कैथलिक लोग पत्थरसे वनायी गयी या कपड़े अथवा काच पर चित्रित की गयी कुमारी मेरी और सतोकी विलकुल काल्पनिक मूर्तियों या चित्रोके सामने घुटने टेकते है, तव वे क्या करते है?'

कैथलिक पादरीने आपत्ति की, 'मै अपनी माताका चित्र रखता हू और भक्तिभावसे अुसका चुम्वन करता हू, लेकिन मै न अुसकी पूजा करता हू, न सन्तोकी। जव मै अीश्वरकी पूजा करता हू तव मै अुसे स्रष्टा और किसी भी मानव-प्राणीसे महान मानता हू।'

'ठीक अिसी तरह हम पत्थरकी पूजा नही करते, परतु पत्थर या धातुकी मूर्तिमे अीश्वरकी पूजा करते है, भले ही वे भद्दी हों।'

'परतु देहाती लोग पत्थरोको अीश्वर मानकर पूजते है।'

'नहीं, मैं आपसे कहता हूं कि वे ओीश्वरसे कम किसी चीजकी पूजा नहीं करते। जब आप कुमारी मेरीके सामने घुटने टेकते हैं और अपने पक्षमें अुनका हस्तक्षेप चाहते हैं, तब आप क्या करते हैं? आप अुनके द्वारा औीश्वरके साथ संबंध जोड़ना चाहते हैं। अिसी तरह अेक हिन्दू पत्थरकी मूर्तिके द्वारा औीश्वरसे संबंध जोड़नेकी कोशिश करता है। कुमारी मेरीका हस्तक्षेप चाहनेकी आपकी बातको मैं समझ सकता हूं। जब मुसलमान किसी मस्जिदमें प्रवेश करते हैं, तब अुनके हृदय आदर और आनन्दसे क्यों भर जाते हैं? क्या सारा विश्व ही मस्जिद नहीं है? आपके सिर पर आकाशका जो शानदार शामियाना फैला हुआ है अुसे क्या कहेंगे? क्या वह मस्जिदसे कम है? परंतु मैं मुसलमानोंकी बात समझता हूं और अुनके साथ हमदर्दी रखता हूं। औीश्वर तक पहुंचनेका यह अुनका अपना तरीका है। अुसी नित्य सत्ता तक पहुंचनेका हिन्दुओंका अपना तरीका है। हमारे पहुंचनेके तरीके अलग अलग हैं, परंतु अिससे औीश्वर अलग अलग नहीं हो जाता।'

'परंतु कैथलिकोंका विश्वास है कि औीश्वरने अुनके लिअे सत्य मार्ग प्रगट किया है।'

'परंतु आप यह क्यों कहते हैं कि औीश्वरकी अिच्छा बाअिबल नामक अेक ही पुस्तकमें प्रगट हुअी है और दूसरी पुस्तकोंमें प्रगट नहीं हुअी? आप औीश्वरकी सत्ताको सीमित क्यों करते हैं?'

'परंतु औीसाने चमत्कारों द्वारा सिद्ध कर दिया कि अुन्हें औीश्वरका सन्देश प्राप्त हुआ था।'

'परंतु यही दावा मुहम्मदका भी है। अगर आप औीसाअी प्रमाणको मानते हैं तो आपको मुस्लिम प्रमाण और हिन्दू प्रमाणको भी मानना होगा।'

'परंतु मुहम्मदने तो यह कहा था कि मैं चमत्कार नहीं कर सकता।'

'नहीं। वे चमत्कारों द्वारा औीश्वरका अस्तित्व साबित नहीं करना चाहते थे। परंतु अुनका दावा था कि अुन पर खुदाके पैगाम आते हैं।'

हरिजन, १३–३–'३७

अवतार

औीश्वर कोअी व्यक्ति नहीं है। यह कहना कि वह मनुष्यके रूपमें समय समय पर पृथ्वी पर अुतरता है आंशिक सत्य है और अुसका अितना ही अर्थ है कि अिस प्रकारका मनुष्य औीश्वरके निकट रहता है। चूंकि औीश्वर

सर्वव्यापी है, अिसलिअे वह प्रत्येक मानव-प्राणीके भीतर निवास करता है और अिसलिअे सभीको अुसके अवतार कहा जा सकता है। परंतु अिससे हम किसी नतीजे पर नही पहुचते। राम, कृष्ण आदि अीश्वरके अवतार अिसलिअे कहे जाते हैं कि हम अुनमे दैवी गुणोंका आरोपण करते हैं। वास्तवमे वे मानव कल्पनाकी सृष्टि है। वे सचमुच हुअे हैं या नही, अिससे मनुष्योंके दिमागमे अुनके चित्र पर कोअी असर नही पडता। अैतिहासिक राम और कृष्ण अक्सर अैसी कठिनाअिया अुपस्थित करते है, जिनका तरह तरहकी दलीलोंसे निवारण करना पडता है।

सच तो यह है कि अीश्वर अेक शक्ति है। वह जीवनका तत्त्व है। वह शुद्ध और दोषरहित ज्ञान है। वह शाश्वत है। फिर भी अचभेकी बात है कि सब अुसके सर्वव्यापक और सजीव अस्तित्वसे लाभ नही अुठा पाते और न अुसकी शरणमें जा सकते हैं।

बिजली अेक जबर्दस्त शक्ति है। मगर सब अुससे फायदा नही अुठा सकते। वह कुछ नियमोका पालन करके ही पैदा की जा सकती है। वह अेक निर्जीव शक्ति है। मनुष्य अुसका अुपयोग कर सकता है, अगर वह अुसके नियमोंका ज्ञान प्राप्त करनेके लिअे पर्याप्त परिश्रम करे।

अिसी प्रकार जिस चेतन शक्तिको हम अीश्वर कहते है अुसका भी पता लग सकता है, यदि हम अुसके नियमोंको जाने और अुनका पालन करें। तब पता लगेगा कि वह हमारे भीतर ही है।

हरिजन, २२–६–'४७

हिन्दू धर्म अनन्त महासागरकी भाति है, जिसमे अमूल्य रत्न भरे पडे हैं। अुसमे आप जितना गहरा गोता लगायेंगे अुतने ही ज्यादा रत्न आपको मिलेंगे। हिन्दू धर्ममे अीश्वर अनेक नामोंसे जाना जाता है। बेशक हजारो लोग राम और कृष्णको अैतिहासिक व्यक्ति मानते है और यह विश्वास करते हैं कि सचमुच अीश्वर दशरथपुत्र रामके रूपमे सशरीर पृथ्वी पर आये और यह कि अुनकी पूजा करनेसे मोक्ष प्राप्त होता है। यही बात कृष्णके बारेमे है। अितिहास, कल्पना और सत्य अेक-दूसरेसे अिस तरह मिल गये है कि अेकको दूसरेसे अलग नही किया जा सकता। अुन्हे अलग अलग करना असभव हो गया है। मैंने अीश्वरमे आरोपित सब नामो और रूपोंको अेक रूपरहित सर्वव्यापक रामके प्रतीकोंके तौर पर मान लिया है।

अिसलिअे मेरी नजरमे सीतापति दशरथपुत्र राम वह सर्वशक्तिमान तत्त्व है, जिसका नाम हृदयांकित होकर मानसिक, नैतिक और शारीरिक सब प्रकारके कष्ट मिटा देता है।

हरिजन, २–६–'४६

२५

मंदिर और मूर्तियां

मैं किसी मंदिरका होना पाप या अंधविश्वास नहीं मानता। किसी न किसी रूपमें सर्वसामान्य पूजा और सर्वसामान्य पूजास्थान मनुष्यके लिअे जरूरी है। मंदिरोंमें मूर्तियां हों या न हों, यह अपने अपने स्वभाव और रुचिकी बात है। मूर्तियां होनेके कारण मैं किसी हिन्दू या रोमन कैथलिक पूजा-स्थानको बुरा या अंधविश्वासपूर्ण नहीं मानता और न यही मानता हूं कि मूर्तियां न होनेसे कोअी मस्जिद या प्रोटेस्टेंट गिरजा अच्छा या अंध-विश्वास-मुक्त है। सूली (क्रास) या पुस्तक जैसा प्रतीक आसानीसे मूर्तिपूजाका विषय बन सकता है और अिसलिअे अंधविश्वासका निमित्त हो सकता है। और बालकृष्ण या कुमारी मेरीकी मूर्तिकी पूजा अूंचा अुठानेवाली और सर्वथा अंधविश्वास-रहित हो सकती है। अिसका आधार पूजा करनेवालेके हृदयकी वृत्ति पर है।

यंग अिंडिया, ५–११–'२५

हम मानव-परिवारके सभी लोग तत्त्ववेत्ता नहीं हैं। हम दुनियाके सामान्य जीव हैं और हमें अदृश्य अीश्वरका ध्यान करनेसे संतोष नहीं होता। कारण कुछ भी हो, हमें अैसी कोअी चीज चाहिये जिसे हम छू सकें, जिसे हम देख सकें, जिसे हम प्रणाम कर सकें और अपना भक्तिभाव अर्पित कर सकें। अिस बातका कोअी महत्त्व नहीं कि वह वस्तु कोअी ग्रंथ है या कोअी पत्थरकी खाली अिमारत है या अनेक मूर्तियोंवाली कोअी पत्थरकी अिमारत है। किसीको पुस्तकसे संतोष हो जायगा, किसीको खाली अिमारतसे हो जायगा और बहुतोंको तब तक संतोष नहीं होगा जब तक वे अिन खाली अिमारतोंमें रहनेवाली कोअी चीज नहीं देखेंगे। अिसलिअे मैं कहता हूं कि

आप अिन मंदिरोंको यह न समझिये कि वे अंधविश्वासके प्रतीक हैं। अगर आप अिन मंदिरोंमें श्रद्धा लेकर जायें तो आपको पता लगेगा कि आप जब जब वहां जायेंगे तब तब आप वहांसे शुद्ध होकर और चेतन अीश्वरमें अधिक श्रद्धा लेकर लौटेंगे।

हरिजन, २३-१-'३७

मंदिर जाना आत्माकी शुद्धिके लिअे है। पूजा करनेवाला पूजा करनेमें अपने अुत्तम गुणोंको बाहर लाता है। किसी सजीव व्यक्तिको प्रणाम किया जाय और प्रणाम निःस्वार्थ हो, तो प्रणाम करनेवाला जिसे प्रणाम किया गया है अुसके अुत्तम गुणोंको खींच सकता और ग्रहण कर सकता है। सभी सजीव व्यक्ति हमारी ही तरह भूल करनेवाले हो सकते हैं। परंतु मंदिरमें हम अैसे चेतन अीश्वरकी पूजा करते हैं जिसकी पूर्णता कल्पनासे परे है। सजीव व्यक्तियोंको लिखे पत्रोंका अुत्तर मिलने पर भी अक्सर वे अन्तमें हृदय-विदारक सिद्ध होते हैं और यह भी निश्चय नहीं कि अुनका जवाब हमेशा मिलेगा ही। अीश्वरके नाम लिखे गये पत्रोंमें, जो भक्तकी कल्पनाके अनुसार मंदिरोंमें रहता है, न दवात-कलमकी जरूरत होती है, न कागजकी। वाणीकी भी आवश्यकता नहीं। मूक पूजा ही पत्र बन जाती है और अुसका अुत्तर मिले बिना नहीं रहता। सारी क्रिया श्रद्धाका अेक सुन्दर व्यायाम है। अिसमें कोअी प्रयत्न व्यर्थ नहीं जाता, दिलके टूटनेका कोअी सवाल नहीं रहता और गलतफहमी होनेका कोअी खतरा नहीं होता। पत्रलेखकको मंदिर, मस्जिद या गिरजेमें पूजा करनेके पीछे जो सरल तत्त्वज्ञान है अुसे समझनेकी कोशिश करनी चाहिये। अगर वह यह समझ लेगा कि मैं अीश्वरके अिन भिन्न भिन्न निवासस्थानोंमें कोअी भेद नहीं करता तो मेरी बात अुसकी समझमें ज्यादा अच्छी तरह आ जायगी। वे स्थान तो मनुष्यकी श्रद्धाने खड़े किये हैं। वे अदृश्य शक्ति तक किसी न किसी तरह पहुंचनेकी मानवकी लालसाके परिणाम हैं।

हरिजन, १८-३-'३३

मेरे खयालसे मूर्तिपूजक और मूर्तिभंजक शब्दोंका जो सच्चा अर्थ है अुस अर्थमें मैं दोनों ही हूं। मैं मूर्तिपूजाकी भावनाकी कद्र करता हूं। अिसका मानव-जातिके अुत्थानमें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग रहता है। और मैं चाहूंगा

कि मुझने हमारे देशको पवित्र करनेवाले हजारों पावन देवालयोंकी रक्षा अपने प्राणोंकी बाजी लगाकर भी करनेका सामर्थ्य हो।

यंग ऑिडिया, २८–८–'२४

मूर्तिभंजक मैं अिस अर्थमें हूं कि कट्टरताके रूपमें मूर्तिपूजाका जो सूक्ष्म रूप प्रचलित है अुसे मैं तोड़ता हूं। अैसी कट्टरता रखनेवालेको अपने ही ढंगके सिवा और किसी भी रूपमें ओश्वरकी पूजा करनेमें कोओ अच्छाओ नजर नहीं आती। मूर्तिपूजाका यह रूप अधिक सूक्ष्म होनेके कारण पूजाके अुस ठोस और स्थूल रूपसे अधिक घातक है जिसमें ओश्वरको पत्थरके अेक छोटेसे टुकड़ेके साथ या सोनेकी मूर्तिके साथ अेक समझ लिया जाता है।

यंग ऑिडिया, २८–८–'२४

मंदिरों, गिरजाघरों और मस्जिदोंमें बहुधा भ्रष्टाचारके और अुससे भी अधिक ह्रासके चिह्न दिखाओ देते हैं। फिर भी यह साबित करना असंभव होगा कि सभी पुजारी बुरे हैं या बुरे रहे हैं और सभी गिरजाघर, मंदिर और मस्जिद भ्रष्टाचार और अंधविश्वासके अड्डे हैं। अिस दलीलमें अिस बुनियादी बातका भी ध्यान नहीं रखा जाता कि किसी भी धर्मका किसी धामके बिना काम नहीं चला; और मैं तो यहां तक कहूंगा कि जब तक मनुष्यकी रचना आजके जैसी बनी रहेगी तब तक स्वभावतः कोओ धर्म किसी धामके बिना रह ही नहीं सकता। मनुष्यके शरीरको भी देवमंदिर कहा गया है और ठीक ही कहा गया है, यद्यपि अैसे असंख्य मंदिर अिस बातको झूठ साबित करते हैं; वे भ्रष्टाचारके अैसे अड्डे हैं जिन्हें दुराचरणके लिअे काममें लिया जाता है। चूंकि अिन शरीरोंमें से बहुतसे भ्रष्ट हैं अिसलिअे सारे शरीर नष्ट कर दिये जाने चाहिये — अिस दलीलके खिलाफ अिस जवाबको, मैं समझता हूं, पर्याप्त मान लिया जायगा कि अिनमें से कुछ शरीर सचमुच ओश्वरके निवासस्थान भी हैं। बहुतसे शरीरोंकी भ्रष्टताका कारण और कहीं ढूंढना पड़ेगा। ओंट-पत्थरके मंदिर अिन मानव-मंदिरोंका ही स्वाभाविक विस्तार हैं और यद्यपि कल्पना यही की गओी थी कि मानव-मंदिरोंकी तरह ये भी ओश्वरके निवासस्थान हों, फिर भी ह्रासके नियम दोनों पर ही अेकसे काम करते रहे हैं।

हरिजन, ११–३–'३३

मुझे अैसा कोअी धर्म या सम्प्रदाय मालूम नही है जिसका अपने देवालयके विना काम चला हो या चल रहा है, चाहे अुसे मंदिरके नामसे पुकारा जाय, चाहे मस्जिद, गिरजे या अगियारीके नामसे पुकारा जाय। यह भी निश्चित नही है कि अीसा आदि महान सुधारकोंमे से किसीने मंदिरोको बिल्कुल नष्ट ही कर दिया हो या अस्वीकार किया हो। अुन सबने समाजकी तरह देवालयोंमे से भी भ्रष्टाचारको दूर करनेकी कोशिश की। अुनमे से सबने नही तो कुछने जरूर मंदिरोमे अुपदेश दिया मालूम होता है। मैंने वर्षोंसे मंदिर जाना छोड़ दिया है, परंतु अुससे मैं यह नही समझता कि मैं पहलेकी अपेक्षा अच्छा आदमी बन गया हू। मंदिर जानेकी हालत होती तब मेरी मा कभी मन्दिर जाना चूकती नही थी। मैं मंदिर नही जाता, फिर भी शायद अुसकी श्रद्धा मुझसे कही अधिक थी। अैसे लाखो लोग है जिनकी श्रद्धा अिन मंदिरो, गिरजाघरो और मस्जिदोके द्वारा बनी रहती है। वे सब न तो अंधविश्वासके अनुयायी है और न कट्टरपंथी है। अंधविश्वास और कट्टरताका ठेका अुन्होंने नही ले रखा है। अिन बुराअियोकी जड हमारे दिलो और दिमागोमे है।

हरिजन, ११–३–'३३

२६

वृक्ष-पूजा

अेक भाअी लिखते हैं

"अिस देशमें स्त्री-पुरुषोका और और पूजाओके साथ पत्थरों और पेडोंकी पूजा करते दिखाअी देना अेक सामान्य बात है। परंतु यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि अुत्साही सामाजिक कार्यकर्ताओके घरोकी शिक्षित महिलाये भी अिस रिवाजसे दूर नही है। अिन बहिनो और भाअियोमे से कुछ अिस प्रथाका यह कहकर समर्थन करते हैं कि अुसका आधार प्रकृतिमे निवास करनेवाले अीश्वरके प्रति शुद्ध पूजाभाव है, न कि कोअी झूठा विश्वास, अिसलिअे अिसे अंधविश्वासकी श्रेणीमे नही गिना जा सकता। और वे अिस सिलसिलेमे सत्यवान और सावित्रीके नाम लेते हैं और कहते है कि अिस रिवाजका पालन

करके वे अुनका स्मरण करते है। मुझे यह दलील जचती नही। क्या आप अिस मामले पर कुछ प्रकाश डालनेकी कृपा करेगे?"

मुझे यह प्रश्न अच्छा लगा है। अिसमे मूर्तिपूजाका बहुत पुराना सवाल अुठाया गया है। मै मूर्तिपूजाका समर्थक और विरोधी दोनो हू। जब मूर्तिपूजा बिगड कर पत्थर-पूजा हो जाती है और अुस पर झूठे विश्वासो और सिद्धान्तोंकी काओी चढ जाती है तब अुसे घोर सामाजिक बुराओी समझकर अुसके साथ लडना जरूरी हो जाता है। दूसरी ओर, अपने आदर्शको कोओी ठोस रूप देनेके अर्थमे मूर्तिपूजा मानव स्वभावका अभिन्न अग रही है, और भक्तिके लिअे वह अेक मूल्यवान सहायता भी है। जब हम किसी पुस्तकको पवित्र समझकर अुसका आदर करते है तो हम मूर्तिकी पूजा ही करते है। पवित्रता या पूजाके भावसे मदिरो या मस्जिदोमे जानेका भी वही अर्थ है। लेकिन अिन सब बातोमे मुझे कोओी हानि दिखाओी नही देती। अुलटे, मनुष्यकी बुद्धि सीमित है, अिसलिअे वह और कर ही क्या सकता है? अैसी हालतमे वृक्ष-पूजामे कोओी मौलिक बुराओी या हानि दिखाओी देनेके बजाय मुझे तो अिसमे अेक गहरी भावना और काव्यमय सौन्दर्य ही दिखाओी देता है। वह समस्त वनस्पति-जगतके लिअे सच्चे पूजाभावका प्रतीक है। वनस्पति-जगत तो सुन्दर रूपो और आकृतियोका अनन्त भण्डार है, अुनके द्वारा वह मानो असख्य जिह्वाओसे अीश्वरकी महानता और गौरवकी घोषणा करता है। वनस्पतिके बिना अिस पृथ्वी पर जीवधारी अेक क्षणके लिअे भी नही रह सकते। अिसलिअे अैसे देशमे, जहा खास तौर पर पेडोकी कमी है, वृक्ष-पूजाका अेक गहरा आर्थिक महत्त्व हो जाता है।

अिस कारण मुझे वृक्ष-पूजाके विरुद्ध कोओी धर्मयुद्ध छेड़नेकी जरूरत नही दिखाओी देती। यह सच है कि जो गरीब और सीधी-सादी स्त्रिया वृक्षोकी पूजा करती है वे अपने कार्यके गूढार्थोको बुद्धिपूर्वक नही समझती। अगर अुनसे पूछा जाय कि वे यह पूजा क्यो करती है तो बहुत सभव है कि अिसका वे कोओी अुत्तर न दे सके। वे शुद्ध और अत्यन्त सरल श्रद्धासे यह काम करती है। अिस प्रकारकी श्रद्धा तिरस्कारकी वस्तु नही है, वह अेक महान और जबरदस्त ताकत है, जिसका हमे सचय करना चाहिये।

किन्तु अुन व्रतो और प्रार्थनाओकी, जो भक्त लोग वृक्षोंके आगे करते है, बात बिलकुल अलग है। स्वार्थसिद्धिके लिअे जो व्रत और प्रार्थनाअे की

जाती है वे चाहे गिरजाघरों, मस्जिदो और मंदिरोंमे की जायं या वृक्षों और देवालयोंके सामने की जाय, असी चीज है जिन्हे प्रोत्साहन नहीं देना चाहिये। स्वार्थपूर्ण प्रार्थनाअे करने या व्रत लेनेका मूर्तिपूजाके साथ कार्य-कारण जैसा संबंध नही है। व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ण प्रार्थना बुरी ही है, चाहे वह किसी मूर्तिके सामने की जाय या अदृश्य अीश्वरके सामने।

परंतु अुससे कोअी यह न समझे कि मै आम तौर पर वृक्ष-पूजाका पक्षपाती हू। मै वृक्ष-पूजाका समर्थन अिसलिअे नही करता कि मै अुसे भक्तिका कोअी आवश्यक साधन समझता हूं। मै तो सिर्फ अितना ही मानता हू कि अीश्वर अिस विश्वमे असख्य रूपोमे प्रगट होता है। असे हरअेक स्वरूपके सामने मेरा सिर अपने आप झुक जाता है।

यंग अिंडिया, २६–९–'२९

२७

बुद्धि और श्रद्धा

अनुभवने मुझे अितना नम्र बना दिया है कि मै बुद्धिकी विशेष मर्यादाअे समझने लगा हू। जैसे गलत जगह पर रखे हुअे पदार्थ ही कचरा बन जाते हैं, ठीक वैसे ही बुद्धिका दुरुपयोग किया जाय तो वह पागलपन बन जाती है।

यंग अिंडिया, १४–१०–'२६

बुद्धिवादी लोग बडे अच्छे होते है। लेकिन बुद्धिवाद जब अपने लिअे सर्वशक्तिमान होनेका दावा करता है, तब वह कुरूप राक्षस हो जाता है। बुद्धिको सर्वशक्तिमान मानना अुतनी ही बुरी मूर्तिपूजा है, जितनी किसी वृक्ष या पत्थरको अीश्वर मानकर अुसकी पूजा करना। मै बुद्धिके दमनका समर्थन नही करता, परंतु मै हमारे भीतरकी अुस वस्तुको, जो बुद्धिको पवित्र बनाती है, अुचित मान्यता दिलवाना चाहता हू।

यंग अिंडिया, १४–१०–'२६

असे विषय भी है जिनमे बुद्धि हमे दूर तक नही ले जा सकती और हमे श्रद्धासे ही कुछ वस्तुओंको स्वीकार करना पडता है। अुस समय श्रद्धा

बुद्धिका खडन नही करती, परतु अुसका अतिक्रमण करती है। श्रद्धा अेक तरहकी छठी अिन्द्रिय है, जो अुन मामलोमे काम देती है जो बुद्धिके क्षेत्रसे बाहर है।

हरिजन, ६–३–'३७

श्रद्धा ही हमे तूफानी समुद्रोमे से पार ले जाती है, श्रद्धा ही पर्वतोको हिला देती है और श्रद्धा ही महासागर पार करा देती है। यह श्रद्धा और कुछ नही, केवल अन्तर्यामी प्रभुका सजीव, जाग्रत भान ही है। जिसे यह श्रद्धा प्राप्त हो गअी अुसे और कुछ नही चाहिये। शरीरसे रोगी होकर भी वह आध्यात्मिक दृष्टिसे नीरोग है, भौतिक दृष्टिसे चाहे वह निर्धन हो पर अुसके पैरोमे आध्यात्मिक दौलत लोटती है।

यग अिडिया, २४–९–'२५

श्रद्धाके बिना यह ससार क्षणभरमे नष्ट हो जायगा। जिन लोगोंके बारेमे हमे विश्वास है कि अुन्होने प्रार्थना और प्रायश्चित्तसे पुनीत बना हुआ जीवन व्यतीत किया है अुनके युक्तियुक्त अनुभवको स्वीकार कर लिया जाय, यही सच्ची श्रद्धा है। अिसलिअे जो पैगम्बर या अवतार प्राचीन कालमे हो गये है अुनमे विश्वास रखना कोअी व्यर्थका अधविश्वास नही, परतु अेक आन्तरिक आध्यात्मिक आवश्यकताकी पूर्ति है।

यग अिडिया, १४–४–'२७

यद्यपि सबको अिसका ज्ञान नही, फिर भी अीश्वरमे श्रद्धा सभीको है। कारण, सभीको अपनेमे विश्वास है और वही अनन्त गुना होने पर अीश्वर बन जाता है। जगतमे दिखाअी देनेवाला सारा जीवन ही अीश्वर है। हम अीश्वर न हो तो भी अीश्वरके तो है ही, जैसे पानीकी छोटीसी बूंद महासागरकी होती है। कल्पना कीजिये कि वह समुद्रसे अलग करके लाखो मील दूर फेंक दी जाती है। तब वह अपने स्थानसे विच्छिन्न होकर निःसहाय बन जाती है और महासागरकी ताकत और शानको महसूस नही कर सकती। परतु कोअी अुसे यह बता दे कि वह महासागरका अग है तो अुसकी श्रद्धा पुनर्जीवित हो जायगी, वह खुशीके मारे नाचने लगेगी और महासागरकी सारी ताकत और शान अुसमे प्रतिबिम्बित होगी।

हरिजन, ३–६–'३९

अीश्वरके साक्षात्कारका अर्थ यह अनुभव करना है कि वह हमारे हृदयोंमे विराजमान है, जैसे बच्चेको किसी प्रत्यक्ष प्रमाणकी आवश्यकताके बिना ही अपनी माताका स्नेह अनुभव होता है। क्या बालक माके प्रेमका अस्तित्व तर्कसे सिद्ध करता है? क्या वह अुसे दूसरोके लिअे साबित कर सकता है? वह विजयके गर्वके साथ कहता है, "वह तो है ही।" यही बात अीश्वरके अस्तित्वके बारेमे होना चाहिये। वहा बुद्धिका गुजर नही है। परतु वह अनुभवसे जाना जाता है। जैसे हम सासारिक गुरुओके अनुभवको अस्वीकार नही करते, वैसे ही हमे तुलसीदास, चैतन्य, रामदास और अनेक आध्यात्मिक गुरुओके अनुभवको भी अस्वीकार नही करना चाहिये।

यग अिडिया, ९–७–'२५

२८

धर्मग्रंथ

श्री बेसिल मैथ्यूज धर्मका प्रमाण आप किसमे मानते है?

गाधीजी (छाती पर हाथ रखकर) वह यहा है। मै गीता-सहित प्रत्येक धर्मग्रथके बारेमे अपने विवेकसे काम लेता हू। मै धर्मशास्त्रके किसी भी वचनको अपनी बुद्धिकी अुपेक्षा नही करने दे सकता। मेरा यह विश्वास तो है कि मुख्य धर्म-पुस्तके अीश्वर-प्रेरित है, लेकिन अुनमे दोहरी छनाअीका दोष भी है। पहले तो वे किसी मानव सन्देशवाहकके द्वारा आती है और फिर अुन पर टीकाअे लिखी जाती है। अुनमे से कोअी भी बात अीश्वरसे सीधी नही आती। अेक ही वचनका मैथ्यू अेक अर्थ करेगा तो जॉन दूसरा करेगा। अीश्वरीय प्रेरणाको स्वीकार करते हुअे भी मै अपने विवेकको तिलाजलि नही दे सकता। और सबसे बडी बात यह है कि 'शब्द जीवनका नाश करते है, जब कि अुनके पीछे रहा हुआ अर्थ और भावना जीवन देती है।' परतु आपको मेरी स्थितिके बारेमे गलतफहमी हरगिज न होनी चाहिये। मै श्रद्धाको भी मानता हू, अैसी चीजोमे जहा बुद्धिको कोअी स्थान नही होता, —जैसे अीश्वरका अस्तित्व—अुस श्रद्धासे मुझे कोअी दलील नही हटा सकती। और अुस छोटी लडकीकी तरह, जो सब दलीलोके बावजूद भी

यही कहती रही कि 'हम मात हैं', मैं भी अपनेसे श्रेष्ठ बुद्धिशालीके तर्कसे हारकर भी बार बार यह कहूंगा कि 'तब भी अीश्वर है'।

हरिजन, ५–१२–'३६

अीश्वरीय ज्ञान पुस्तकोंसे अुधार नहीं लिया जाता। अुसे अपने ही भीतर अनुभव करना पड़ता है। अधिकसे अधिक पुस्तकोंसे मदद मिल जाती है; अक्सर वे रुकावट ही होती हैं।

यंग अिंडिया, १७–७–'२४

बार बार प्रचार करनेसे कोअी भूल सत्य नहीं बन जाती और न सत्य अिसलिअे भूल बन जाता है कि अुसे कोअी देखता नहीं।

यंग अिंडिया, २६–२–'२५

कोअी भी शास्त्र-प्रमाण हो, यदि वह सम्यक् बुद्धि या हृदयके आदेशके विरुद्ध है तो मैं अुसे अस्वीकार कर दूंगा। शास्त्र-प्रमाण जब बुद्धि द्वारा समर्थन प्राप्त करता है, तब वह दुर्बलोंका सहारा और अुत्थानकर्ता होता है। परंतु जब वह अन्तःकरणकी आवाजसे समर्थित बुद्धिका स्थान ले लेता है तब अुनका पतन करता है।

यंग अिंडिया, ८–१२–'२०

मैं लकीरका फकीर नहीं हूं। अिसलिअे संसारके विभिन्न धर्मग्रंथोंके शब्दोंके पीछे रहे आशयको समझनेकी कोशिश करता हूं। अर्थ करनेमें मैं अुन्हीं ग्रंथोंकी बतायी हुअी सत्य और अहिंसाकी कसौटीसे काम लेता हूं। जो चीज अिस कसौटी पर ठीक नहीं अुतरती अुसे अस्वीकार कर देता हूं और जो ठीक अुतरती है अुसे अपना लेता हूं। रामचंद्रने अेक शूद्रको वेद पढ़ने पर दण्ड दिया, अिस कहानीको मैं क्षेपक मानकर अस्वीकार करता हूं। कुछ भी हो, मैं रामकी पूजा अपनी कल्पनाके पूर्ण पुरुषके रूपमें करता हूं, न कि अुनको अैतिहासिक व्यक्ति मानकर; क्योंकि नअी नअी अैतिहासिक खोजों और अनुसंधानोंकी प्रगतिके साथ साथ अुनके जीवन-संबंधी तथ्य बदलते रह सकते हैं। अैतिहासिक रामसे तुलसीदासका कोअी वास्ता नहीं था। अैतिहासिक कसौटी पर रखकर देखें तो अुनकी रामायण रद्दीकी टोकरीमें फेंकने लायक होगी। आध्यात्मिक अनुभवके रूपमें अुनकी पुस्तक कमसे कम मेरे नजदीक

तो लगभग अद्वितीय है। और फिर तुलसीकृत रामायणके जितने जो संस्करण प्रकाशित हुअे हैं अुनका अक्षर अक्षर सत्य है, यह भी मैं नहीं मानता। अिस ग्रंथमें शुरूसे आखिर तक जो भावना है वह मुझे मंत्रमुग्ध कर देती है।

यंग अिंडिया, २७–८–'२५

महाभारतके कृष्ण सचमुच कभी हुअे थे, अिसकी मुझे कोअी जानकारी नहीं है। मेरे कृष्णका किसी अैतिहासिक व्यक्तिसे कोअी वास्ता नहीं। मैं अैसे कृष्णके सामने अपना सिर नहीं झुकाअूंगा जो अपने अहंकारको चोट पहुंचने पर किसीको मार डाले या जिसे गैर-हिन्दू लोग दुराचारी युवक बताते हैं। मैं अपनी कल्पनाके अुस कृष्णको मानता हूं जो पूर्ण अवतार है, प्रत्येक अर्थमें निष्कलंक है, गीताका प्रेरक है और लाखों मानव-प्राणियोंके जीवनको प्रेरणा देता है। परंतु यदि मुझे यह साबित कर दिया जाय कि महाभारत अुसी अर्थमें अितिहास है जिसमें आजकलकी अितिहासकी पुस्तकें हैं, महाभारतका प्रत्येक शब्द सही है और महाभारतके कृष्णके साथ जिन कृत्योंका संबंध बताया जाता है अुनमें से कुछ तो अुसने सचमुच किये थे, तो हिन्दू धर्मसे निकाल दिये जानेका खतरा अुठाकर भी मैं अुस कृष्णको अीश्वरका अवतार माननेसे अिनकार करनेमें संकोच नहीं करूंगा। परंतु मेरे लिअे महाभारत अेक गहन धार्मिक ग्रंथ है जो बहुत कुछ रूपकके प्रकारका है और अैतिहासिक लेखकी तरह नहीं लिखा गया था। वह हमारे भीतर सतत चलनेवाले द्वंद्वका वर्णन है और वह अितने सजीव ढंगसे किया गया है कि हम थोड़ी देरके लिअे यह समझने लगते हैं कि अुसमें जिन कार्योंका वर्णन किया गया है वे सचमुच मानव-प्राणियों द्वारा किये गये हैं। मैं यह भी नहीं समझता कि जो महाभारत आजकल हमें मिलता है वह मूल पुस्तककी निर्दोष प्रतिलिपि है। अिसके विपरीत मेरा खयाल है कि अुसमें अनेक परिवर्तन हुअे हैं।

यंग अिंडिया, १–१०–'२५

धर्मग्रंथोंका सही अर्थ समझनेके लिअे भक्तिपूर्ण अध्ययन और अनुभव अत्यन्त आवश्यक है। यह आदेश कि शूद्र धर्मशास्त्रोंका अध्ययन न करे बिलकुल निरर्थक नहीं है। शूद्रका अर्थ आध्यात्मिक दृष्टिसे असंस्कृत और अज्ञानी मनुष्य है। बहुत संभव है कि वह वेदों और दूसरे धर्मशास्त्रोंका गलत अर्थ लगाये। हरअेक आदमी बीजगणितके सवाल नहीं कर सकता। पहले कुछ

अध्ययन करना अनिवार्य है। पापमे डूबे हुअे मनुष्यके मुखमे 'अहं ब्रह्मास्मि' का महान सत्य कितना बुरा लगेगा! वह अिसका अुपयोग कितने नीच कार्योंके लिअे करेगा! अुसके हाथों अिसकी कैसी विकृति होगी!

अिसलिअे जो आदमी धर्मशास्त्रोंका अर्थ करे अुसमे आध्यात्मिक अनुशासन होना ही चाहिये। अुसे यम-नियम आदि आचरणके शाश्वत सिद्धान्तोंका पालन अवश्य करना चाहिये। अिन नियमोंका अूपरी अभ्यास बिलकुल व्यर्थ होता है। शास्त्रोंने गुरुकी आवश्यकता पर जोर दिया है। परन्तु चूंकि आजकल गुरु दुर्लभ होते हैं अिसलिअे ऋषियोंने भक्ति सिखानेवाली आधुनिक पुस्तकोंका अध्ययन सुझाया है। जिनमे भक्ति नही है, श्रद्धाका अभाव है, वे धर्मशास्त्रोंका अर्थ करनेके अयोग्य है। पंडित लोग अुनमे से लंबे-चौडे विद्वत्ता-पूर्ण अर्थ निकाल सकते हैं। परन्तु वह सच्चा अर्थ नही होगा। धर्मशास्त्रोंका सच्चा अर्थ अनुभवी लोग ही कर सकेंगे।

परंतु अनुभवहीन लोगोंके लिअे भी कुछ नियम है। जो अर्थ सत्यके विपरीत हो, वह सही नही होता। जो सत्य पर भी शंका करता है, अुसके लिअे धर्मशास्त्रोंका कोअी अर्थ नही है। अुससे कोअी बहस नही कर सकता।

यंग अिण्डिया, १२–११–'२५

२९

गीताका संदेश

१ सन् १८८८–८९ मे भी जब मेरा गीतासे प्रथम परिचय हुआ, मुझे लगा कि यह कोअी अैतिहासिक ग्रंथ नही है, परंतु भौतिक युद्धके बहाने अुसमे अुस द्वन्द्वका वर्णन किया गया है जो मानव-जातिके हृदयमे सतत होता रहता है। और भौतिक युद्ध केवल अिसीलिअे खडा किया गया है कि भीतरी द्वन्द्वका वर्णन अधिक आकर्षक हो जाय। यह आरंभिक स्फुरणा धर्म और गीताके अधिक गहरे अध्ययनसे और भी पक्की हो गअी। महाभारतके अध्ययनसे अुसकी और अधिक पुष्टि हुअी। महाभारतको माने हुअे अर्थमे मैं कोअी अैतिहासिक ग्रंथ नही मानता। आदिपर्वने मेरे मतके समर्थनमे सबल प्रमाण मिल जाता है। प्रधान पात्रोंकी अमानुषी और अतिमानुषी अुत्पत्ति बताकर व्यास भगवानने राजा-प्रजाके अितिहासका काम खतम कर दिया है।

अुसमें वर्णित व्यक्ति अैतिहासिक हो सकते हैं, परंतु महाभारतकारने अुनका अुपयोग अपने धार्मिक विषयको समझानेके लिअे ही किया है।

२. महाभारतकारने भौतिक युद्धकी आवश्यकताको सिद्ध नहीं किया है, अिसके विपरीत अुसने अुसकी व्यर्थताको प्रमाणित किया है। अुसने विजेताओंको शोक और पश्चात्तापसे रुलाया है और अुनके लिअे दुःखोंके सिवा और कुछ नहीं छोड़ा है।

३ अिस महान रचनामें गीता मुकुटके समान है। अुसके दूसरे अध्यायमें भौतिक युद्धके नियम सिखानेके बजाय स्थितप्रज्ञके लक्षण बताये गये हैं। गीताके स्थितप्रज्ञके लक्षणोंमें मुझे तो भौतिक युद्धसे मेल खानेवाली कोअी बात दिखाअी नहीं देती। सारी रचना अैसी है कि युद्ध करनेवाले दलोंके लिअे लागू होनेवाले आचरणके नियमोंका अुससे कोअी मेल नहीं बैठता।

४. गीताके कृष्ण पूर्णता और सम्यक् ज्ञानकी मूर्ति हैं, परंतु यह चित्र काल्पनिक है। अिसका यह अर्थ नहीं है कि प्रजाका प्यारा कृष्ण कभी हुआ ही नहीं। परंतु अुसकी पूर्णता काल्पनिक है। संपूर्ण अवतारका विचार बादमें बना है।

५ हिन्दू धर्ममें अवतार अुस आदमीको माना गया है, जिसने मानव-जातिकी कोअी असाधारण सेवा की हो। वास्तवमें सभी शरीरधारी प्राणी अीश्वरके अवतार हैं। परंतु प्रत्येक प्राणीको आम तौर पर अवतार नहीं माना जाता। जिसने अपने समयमें अपने आचरण द्वारा असाधारण धार्मिकता दिखाअी हो, अुसे आगे आनेवाली पीढ़ियां अवतार मानकर अपनी श्रद्धा-जलि अर्पित करती हैं। अिसमें मुझे कोअी बुराअी नजर नहीं आती, अिसमें अीश्वरकी महानता कम नहीं होती और सत्यकी भी कोअी हानि नहीं होती। अुर्दूमें अेक कहावत है— 'आदम खुदा नहीं, लेकिन खुदाके नूरसे आदम जुदा नहीं'। और अिसलिअे जिसका आचरण सबसे अधिक धार्मिक रहा हो अुसमें वह नूर सबसे अधिक होता है। अिसी विचारधाराके अनुसार कृष्णको हिन्दू धर्ममें संपूर्ण अवतारका पद प्राप्त है।

६. अवतारोंमें यह विश्वास मनुष्यकी अूंची आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षाका प्रमाण है। मनुष्य जब तक अीश्वरके समान नहीं बन जाता तब तक अुसे भीतरी शांति नहीं मिलती। अिस स्थितिको पहुंचनेका प्रयत्न ही सर्वोपरि और अेकमात्र अिष्ट महत्त्वाकांक्षा है। और यही आत्म-साक्षात्कार है। तमाम धर्म-ग्रंथोंकी तरह गीताका विषय भी यही आत्म-साक्षात्कार है। परंतु गीताकारने

अिस सिद्धान्तकी स्थापनाके लिअे अुसे नही लिखा है। गीताका अुद्देश्य मुझे आत्मार्थीको आत्म-साक्षात्कार करनेका श्रेष्ठ मार्ग बताना मालूम होता है। जो वस्तु थोडी या बहुत स्पष्टताके साथ हिन्दू धर्मग्रथोमे अिधर अुधर बिखरी हुअी पाअी जाती है, अुसे गीताने पुनरुक्तिका खतरा अुठाकर भी अधिकसे अधिक साफ भाषामे स्थापित किया है।

७. वह अद्वितीय अुपाय कर्मके फलका त्याग है।

८ अिसी मध्यबिंदुके चारो ओर गीताकी रचना हुअी है। यह त्याग केन्द्रीय सूर्य है और अुसके चारो ओर भक्ति, ज्ञान आदि ग्रहोकी तरह घूमते है। अिस शरीरको कारागारकी अुपमा दी गअी है। जहा शरीर है वहा कर्म अवश्य है। किसी भी शरीरधारीको कर्मसे मुक्त नही किया गया है। फिर भी सारे धर्म यह घोषणा करते है कि मनुष्य अपने शरीरको देवमदिर समझे और तदनुसार आचरण करे तो मुक्ति प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक कर्म, चाहे कितना ही तुच्छ हो, दूषित होता है। तब शरीरको देवमदिर कैसे बनाया जा सकता है, दूसरे शब्दोमे मनुष्य कर्मके बधनसे अर्थात् पापके दोषसे मुक्त कैसे हो सकता है? गीताने अिस प्रश्नका अुत्तर निश्चित भाषामे दिया है "निष्काम कर्मसे, कर्मफलका त्याग करके, सब कर्मोको अीश्वरार्पण करनेसे अर्थात् अपने आपको शरीर और आत्माके साथ अीश्वरको अर्पण कर देनेसे।"

९. परतु निष्कामता या त्याग सिर्फ अुसकी बात करनेसे नही आता। वह बुद्धिबलसे प्राप्त नही होता। वह सतत हृदय-मथनसे ही सिद्ध हो सकता है। त्यागकी प्राप्तिके लिअे सम्यक् ज्ञान जरूरी है। विद्वान लोगोंके पास अेक तरहका ज्ञान होता है। अुन्हे वेद कण्ठस्थ हो सकते है, फिर भी वे भोग-विलासमे डूबे रह सकते है। ज्ञान शुष्क पाण्डित्यका रूप न ले ले, अिसके लिअे गीताकारने आग्रह किया है कि ज्ञानके साथ भक्ति होनी चाहिये और अुसे प्रथम स्थान दिया है। भक्तिके बिना ज्ञान व्यर्थ है। अिसलिअे गीता कहती है, 'भक्ति होगी तो ज्ञान अपने आप आ जायगा।' यह भक्ति शाब्दिक पूजा मात्र नही है, यह तो 'सिरका सौदा' है। अिसीलिअे गीता-कारने भक्तके लक्षण स्थितप्रज्ञ जैसे ही बताये है।

१० अिस प्रकार गीतामे जिस भक्तिकी अपेक्षा रखी गअी है वह कोअी कोमल हृदयका अुच्छ्वास नही है। अन्धश्रद्धा तो वह है ही नही। गीताकी भक्तिका बाह्याचारसे कमसे कम सबध है। भक्त चाहे तो माला,

तिलक और अर्घ्यादिका अुपयोग कर सकता है, परंतु ये वस्तुअें अुसकी भक्तिकी कसौटी नहीं है। भक्त वह है जो किसीसे अीर्ष्या नही रखता, जो दयाका भंडार है, जो अहंकारसे रहित है, जो निःस्वार्थ है, जो गर्मी-सर्दी और सुख-दुःखको समान समझता है, जो सदा क्षमाशील है, जो सदा संतुष्ट रहता है, जिसके निश्चय दृढ होते है, जिसने मन और आत्माको अीश्वरके अर्पण कर दिया है, जो न दूसरोको डराता है, न दूसरोंसे डरता है, जो हर्ष, शोक और भयसे मुक्त है, जो शुद्ध है, जो कर्ममे कुशल है फिर भी अुससे प्रभावित नही होता, जो शुभाशुभ सभी कर्मफलोका त्याग करता है, जो शत्रु-मित्र सबको समान समझता है, जो मान-अपमानसे अछूता है, जो प्रशंसासे फूल नही जाता और निन्दासे जिसे ग्लानि नही होती, जिसे मौन और अेकान्तसे प्रेम है और जिसकी बुद्धि स्थिर है। अिस प्रकारकी भक्तिका प्रबल आसक्तियोंसे मेल नही बैठ सकता।

११. अिस प्रकार हम देखते है कि सच्चा भक्त होना आत्म-साक्षात्कार करना है। आत्म-साक्षात्कार कोअी अलग वस्तु नही है। अेक रुपयेसे हम विष भी खरीद सकते हैं और अमृत भी, परंतु ज्ञान या भक्तिसे न मुक्ति खरीदी जा सकती है, न बंधन। वे विनिमयके साधन नही हैं। वे स्वयं अिष्ट वस्तुअें है। दूसरे शब्दोमे यदि साधन और साध्य अेक नही है, तो लगभग अेक अवश्य है। साधनकी पराकाष्ठा ही मुक्ति है। गीताकी मुक्ति परम शांति है।

१२. परंतु अिस ज्ञान और भक्तिको कर्मफल-त्यागकी कसौटी पर खरा अुतरना पड़ता है। भले-बुरेके ज्ञानसे ही कोअी मोक्षका अधिकारी नही बनता। सामान्य कल्पनामे कोरा पंडित भी ज्ञानी मान लिया जाता है। अुसे कोअी काम करनेकी जरूरत नही होती। छोटेसे लोटेको अुठाना भी वह बंधन समझेगा। जहां ज्ञानकी अेक कसौटी यह हो कि सेवा न करनी पडे, वहां लोटा अुठाने जैसी लौकिक क्रियाकी गुंजाअिश कैसे हो सकती है?

१३. या भक्तिको लीजिये। भक्तिकी आम कल्पना यह है कि भक्तका हृदय कोमल होना चाहिये, अुसे माला जपते रहना चाहिये, आदि। प्रेमपूर्ण सेवाकर्म करनेसे भी अुसकी मालामे विक्षेप आता है। अिसलिअे यह भक्त खाने-पीने आदिके लिअे ही माला छोडता है, आटा पीसने या बीमारोंकी सेवाके लिअे कभी नही छोडता।

१४ परतु गीता कहती है 'कर्मके बिना किसीको सिद्धि प्राप्त नहीं हुआी है। जनक जैसे पुरुषोंको भी कर्मसे ही मोक्ष प्राप्त हुआ था। अगर मैं आलस्यवश काम करना छोड दू तो ससारका नाश हो जावे।' तब फिर साधारण लोगोंके लिअे कर्ममे लगे रहना कितना ज्यादा जरूरी है?

१५ जहा अेक ओर यह निर्विवाद है कि सभी कर्म बधनकारी होते है, वहा दूसरी ओर यह भी अुतना ही सही है कि वे चाहे या न चाहे सभी प्राणियोंको कुछ न कुछ कर्म करना पडता है। यहा मानसिक हो या शारीरिक, सभी प्रवृत्तिया कर्म शब्दमे शामिल है। तब फिर कर्म करते हुअे भी मनुष्य कर्मके बधनसे कैसे मुक्त हो सकता है? गीताने जिस समस्याको जिस ढगसे हल किया है वह मेरी जानकारीमे अनोखा है। गीता कहती है 'नियत कर्म करो, परतु अुसके फलका त्याग करो—अनासक्त होकर काम करो—फलकी अिच्छा छोडकर कर्म करो।'

यह है गीताका असदिग्ध अुपदेश। जो कर्म छोडता है अुसका पतन होता है। जो केवल फलको छोडता है अुसका अुत्कर्ष होता है। परतु फलके त्यागका मतलब अैसा हर्गिज नही कि हम परिणामके प्रति अुदासीन हो जाय। प्रत्येक कर्मके बारेमे मनुष्यको यह मालूम होना चाहिये कि वह अुससे किस परिणामकी आशा रखता है, अुसका साधन क्या है और अुसके लिअे कैसी क्षमता चाहिये। जिसकी जितनी तैयारी होगी पर फलकी अिच्छा नही होगी और फिर भी जो अपने नियत कर्मको अच्छी तरह पूरा करनेमे पूरी तरह सलग्न होगा, अुसके लिअे यह कहा जायगा कि अुसने कर्मफलका त्याग कर दिया है।

१६ साथ ही कोअी त्यागका यह अर्थ न समझे कि त्यागीको फल नही मिलता। गीताके वचनोंसे अैसा अर्थ नही निकलता। त्यागका अर्थ है फलकी लालसा न रखना। सच तो यह है कि जो छोडता है अुसे सहस्र-गुना मिलता है। गीताका त्याग श्रद्धाकी चरम परीक्षा है। जो सदा फलकी चिन्ता करता रहता है वह कअी बार कर्तव्य-भ्रष्ट होता है। वह अधीर हो जाता है और फिर क्रोध प्रगट करता और अयोग्य कार्य करने लगता है, वह अेकसे दूसरेमे और दूसरेसे तीसरे कर्ममे पडता है और किसी अेक कर्मके प्रति वफादार नही रहता। जो फलकी चिन्ता करता है अुसकी स्थिति

विषयोमे आसक्त मनुष्य जैसी हो जाती है, वह सदा अुद्विग्न रहता है, सब सिद्धान्तोंको तिलाजलि दे डालता है। अुसे नीति-अनीतिका विवेक नही रहता और अिसलिअे वह अपने अुद्देश्यकी पूर्तिके लिअे अच्छे-बुरे सभी साधनोका आश्रय लेता है।

१७. फलेच्छाके अैसे कटु परिणामोंसे गीताकारने फलत्यागका मार्ग खोज निकाला और अुसे अतिशय आकर्षक भाषामे ससारके सामने रखा है। सामान्य मान्यता यह है कि धर्म और अर्थ अेक-दूसरेके विरोधी है। हम अनेक दुनियादार लोगोको यह कहते सुनते है कि "मनुष्य व्यापार आदि लौकिक व्यवहारमे धर्माचरण नही कर सकता। अैसे कामोमे धर्मका स्थान नही होता, धर्म तो केवल मोक्षकी प्राप्तिके लिअे है।" मेरी रायमे गीताकारने अिस भ्रमको मिटा दिया है। अुसने मोक्षमे और सासारिक कामोमे कोअी भेद नही रखा है। अिसके विपरीत अुसने सिद्ध किया है कि हमारे सासारिक कर्मोमे भी धर्मकी प्रधानता रहनी चाहिये। मै तो अिस निश्चय पर पहुचा हूं कि गीता हमे यह सिखाती है कि जो वस्तु व्यवहारमे नही अुतारी जा सकती अुसे धर्म नही कहा जा सकता। अिस प्रकार गीताके अनुसार अैसे सब कर्म, जो आसक्तिके विना नही किये जा सकते, निषिद्ध है। यह स्वर्ण-नियम मनुष्य-जातिको अनेक प्रकारके पतनसे बचाता है। अिस अर्थके अनुसार हत्या, झूठ, व्यभिचार आदि कर्म सहज ही त्याज्य और अिसलिअे निषिद्ध हो जाते है। फिर मनुष्यका जीवन सरल बन जाता है और अुस सरलतामे से शान्ति अुत्पन्न होती है।

१८ अिस विचारश्रेणीका अनुसरण करते हुअे मुझे महसूस हुआ है कि गीताके केन्द्रीय अुपदेशको अपने जीवनमे कार्यान्वित करनेका प्रयत्न करते हुअे हमे सत्य और अहिंसाका पालन करना ही होगा। जब फलकी कोअी अिच्छा नही है, तब असत्य या हिंसाका कोअी प्रलोभन नही हो सकता। असत्य या हिंसाका कोअी भी अुदाहरण लीजिये तो पता चलेगा कि अुसके पीछे वाछित फल प्राप्त करनेकी अिच्छा रही है। परतु यह मुक्तकठसे स्वीकार किया जा सकता है कि गीता अहिंसाकी स्थापनाके लिअे नही लिखी गअी। गीता-कालके पहले ही अहिंसा परमधर्मकी तरह स्वीकार कर ली गयी थी। गीताको तो अनासक्तिका सिद्धान्त बताना था। यह बात दूसरे अध्यायमे ही स्पष्ट हो जाती है।

१९ परन्तु यदि गीताको अहिंसा मान्य थी अथवा अनासक्तिमें अहिंसा सहज ही आ जाती है, तो फिर गीताकारने भौतिक युद्धका उदाहरण क्यों लिया? जब गीता लिखी गअी थी, अुस समय अहिंसा धर्म तो मानी जाती थी, परन्तु युद्धोंका निषेध नहीं था। अितना ही नहीं, किसीको युद्धों और अहिंसामें विरोध दिखाओ भी नहीं देता था।

२० फलत्यागके महत्त्वका हिसाब लगाते समय हमें गीताकारके मनकी खोज करके यह जाननेकी जरूरत नहीं कि अुनकी अहिंसा आदिके विषयमें क्या मर्यादाअें थीं। कवि संसारके सामने अमुक सत्य पेश करता है, अिससे यह निष्कर्ष निकालना जरूरी नहीं कि वह अुसके महत्त्वको संपूर्ण रूपसे पहचानता ही है, या पहचानता हो तो अुसे भाषामें हमेशा पूरी तरह अभि-व्यक्त कर सकता है। शायद अिसीमें अुस काव्यकी और कविकी महिमा है। कविके अर्थका कोअी पार ही नहीं है। मनुष्यकी भांति महान रचनाओंके अर्थका भी विकास होता है। भाषाओंके अितिहासकी पड़ताल करने पर हम देखते हैं कि महत्त्वपूर्ण शब्दोंके अर्थ नित्य नये होते रहते हैं या अुनका विस्तार होता जाता है। यही बात गीताकी है। स्वयं ग्रंथकारने कुछ प्रचलित शब्दोंके अर्थोंका विस्तार कर दिया है। अूपर अूपरसे देखने पर भी हमें अिस बातका पता चल जाता है। यह संभव है कि गीतासे पहलेके युगमें यज्ञमें पशुबलि विहित थी। परन्तु गीताके यज्ञके अर्थमें अिसका चिह्न भी नहीं है। गीतामें जपयज्ञ यज्ञोंका राजा कहा गया है। तीसरे अध्यायसे सूचित होता है कि यज्ञका अर्थ मुख्यतः सेवाके लिअे शरीर-श्रम है। तीसरे और चौथे अध्यायको अेकसाथ पढ़नेसे हमें यज्ञके और और अर्थ तो मिलेंगे, परन्तु पशुबलिका अर्थ हरगिज नहीं मिलेगा। अिसी प्रकार गीतामें संन्यास शब्दकी भी कायापलट हो गअी है। गीताका संन्यास सभी कर्मोंका सर्वथा त्याग सहन नहीं करता। गीताका संन्यास तो कर्ममय है और फिर भी अकर्म है। अिस प्रकार गीताकारने शब्दोंके अर्थका विस्तार करके हमें सिखाया है कि गीताकी भाषाका भी व्यापक अर्थ किया जाय। मान लीजिये कि गीताके शब्दार्थके अनुसार यह कहा जा सके कि युद्धका फलत्यागसे मेल खाता है। परन्तु ४० वर्ष तक गीताके अुपदेश पर अपने जीवनमें अमल करनेके लगातार प्रयत्नके बाद मुझे पूर्ण नम्रतासे अनुभव हुआ है कि सत्य और अहिंसाके पूर्ण पालनके बिना पूर्ण कर्मफल-त्याग मनुष्यके लिअे असंभव है। गीता सूत्र-ग्रंथ नहीं है, वह अेक

महान धर्म-काव्य है। अुसमे जितनी गहरी डुबकी लगाअिये अुतने ही नये और सुन्दर अर्थ मिलेगे। सर्वसाधारणके लिअे होनेके कारण अुसमे सुखद पुनरुक्ति है। अिसलिअे गीतामे आये हुअे महाशब्दोके अर्थ युग-युगमे बदलते और विस्तृत होते रहेगे। परंतु अुसके केन्द्रीय अर्थमे कभी फर्क नही पडेगा। शोधकको स्वतत्रता है कि अिस भडारमे से वह जैसा चाहे अर्थ निकाल ले, ताकि वह अपने जीवनमे अिस केन्द्रीय अुपदेश पर अमल कर सके।

२१. गीता कोअी विधि-निषेधोका सग्रह भी नही है। जो वस्तु अेक आदमीके लिअे विहित है वह दूसरेके लिअे निषिद्ध हो सकती है। जो चीज अेक समय या अेक स्थानके लिअे मान्य हो वह दूसरे समय और दूसरे स्थानके लिअे मान्य न भी हो। लेकिन फलासक्तिका सर्वत्र निषेध है। अनासक्ति सर्वत्र अनिवार्य है।

२२. गीताने ज्ञानका गुणगान किया है, परतु वह निरी बुद्धिसे परे है। वह हृदयको लक्ष्यमे रखकर कही गयी है और हृदयगम्य ही है। अिसलिअे गीता अुनके लिअे नही है जिनमे श्रद्धा नही है। स्वयं ग्रथकारने कृष्णसे कहलवाया है:

> "जो तपस्वी नही है, जो सुननेकी अिच्छा नही रखता और जो मेरा द्वेष करता है, अुससे तू यह ज्ञान कभी न कहना। परंतु जो यह परम गुह्य ज्ञान मेरे भक्तोको प्रदान करेगे, वे अवश्य ही अिस सेवा द्वारा मुझे प्राप्त करेगे। और जो द्वेषमुक्त होकर श्रद्धापूर्वक अिस अुपदेशको मात्र सुनेगे वे भी मोक्ष प्राप्त करके वहा रहेगे जहा सच्चे पुण्यवान लोग मृत्युके बाद रहते है।"

यग अिंडिया, ६–८–'३१

३०

सत्यमें सौन्दर्य

वस्तुओंके दो पक्ष होते हैं — बाहरी और भीतरी। सवाल यह है कि हम ज्यादा जोर किस पक्ष पर देते हैं। मेरे लिअे बाह्य पक्षका अुतना ही महत्त्व है, जितना वह आन्तरिकके लिअे सहायक होता है। अिस प्रकार प्रत्येक सच्ची कलामें आत्माकी अभिव्यक्ति होनी चाहिये। मनुष्यकी आत्माकी जितनी अभिव्यक्ति बाह्य रूपमें हो, अुतनी ही अुसकी कीमत है। अिस प्रकारकी कला मुझे बहुत प्रभावित करती है। परन्तु मैं जानता हूं कि बहुत लोग अपनेको कलाकार कहते हैं और माने भी जाते हैं, फिर भी अुनकी कृतियोंमें आत्माकी अुन्नतिकी आकांक्षा और व्याकुलताका जरा भी चिह्न नहीं होता।

प्रत्येक सच्ची कलाको अपना भीतरी रूप पहचाननेमें आत्माकी सहायक होना ही चाहिये। मेरी ही बात लीजिये। मैं देखता हूं कि मैं अपनी आत्माको पहचाननेके काममें बाह्य रूपोंके बिना पूरी तरह काम चला सकता हूं। अिस-लिअे मैं दावा कर सकता हूं कि मेरे जीवनमें सचमुच सफल कला है, भले आप जिन्हें कलाकी कृतियां कहते हैं वे मेरे आसपास न हों। मेरे कमरेकी दीवारें कोरी हों, और सिर पर छप्पर भी न हो, तो मैं कलाका ज्यादा अुपभोग कर सकता हूं। मैं अुस तारोंभरे आकाशको निहार सकता हूं जिसका सौंदर्य अनन्त तक फैला हुआ है। मानवकी कौनसी कला-कृति मेरे लिअे वे रमणीय दृश्य अुपस्थित कर सकती है, जो अुस समय मेरे सामने आते हैं जब मैं चमकते हुअे तारोंवाले आकाशको देखता हूं? परंतु अिसका यह अर्थ नहीं है कि मैं जिन्हें सामान्य तौर पर कलाकी कृतियां कहा जाता है अुनके महत्त्वको स्वीकार नहीं करता। मेरा मतलब अितना ही है कि मैं खुद यह महसूस करता हूं कि प्रकृतिमें सौन्दर्यके जो शाश्वत प्रतीक हैं अुनकी तुलनामें ये कृतियां बहुत अल्प हैं। मानवकी अिन कला-कृतियोंका मूल्य अुतना ही है, जितनी वे आत्म-साक्षात्कारमें सहायक होती हैं।

मैं सत्यमें या सत्यके द्वारा सौन्दर्यको देखता और पाता हूं। सभी सत्य, अर्थात् न केवल सत्य विचार किन्तु जिनमें सत्य प्रतिबिम्बित होता हो अैसी मुखाकृतियां, चित्र या गीत अति सुन्दर होते हैं। लोगोंको आम तौर पर

सत्यमे सौन्दर्य नही दिखाअी देता। साधारण मनुष्य अुसके सौन्दर्यसे दूर भागता है, वह अुसे देख ही नही सकता। जब कभी मनुष्यको सत्यमे सौन्दर्य दिखाअी देने लगेगा तब सच्ची कला जन्म लेगी।

सच्चे कलाकारके लिअे वही मुख सुन्दर है जिसमे, अुसका बाहरी रूप कैसा भी हो, आत्माके भीतरका सत्य प्रकाशित होता है। सत्यसे अलग सौन्दर्य है ही नही। अिसके विपरीत, सत्य अैसे रूपमे प्रगट हो सकता है जो बाहरसे बिलकुल सुन्दर न हो। हमे बताया गया है कि सुकरात अपने जमानेका सबसे सच्चा आदमी था, पर अुसका चेहरा यूनानमे सबसे कुरूप था। मेरे खयालसे वह सुन्दर था, क्योंकि अुसका सारा जीवन सत्यका अेक प्रयत्न था। और आपको याद होगा कि अुसके अिस बाहरी रूपसे फीडियसको अुसके भीतरी सत्यके सौन्दर्यकी कद्र करनेमे बाधा नही हुअी, यद्यपि अेक कलाकारकी तरह अुसे बाह्य रूपमे भी सौन्दर्य देखनेका अभ्यास था।

सत्य और असत्य अक्सर साथ साथ रहते है, भलाअी और बुराअी बहुधा अेकसाथ पाअी जाती है। कलाकारमे भी अक्सर वस्तुओंकी सही और गलत कल्पनाअे अेकसाथ रहती है। सच्ची सौन्दर्यपूर्ण कृतिया तब जन्म लेती है जब सही कल्पना काम करती है। अगर ये अवसर जीवनमे दुर्लभ होते है तो कलामे भी दुर्लभ होते है।

ये सौन्दर्य ('सूर्यास्त अथवा दूजका चाद जो रातको तारोंके बीच चमकता है') सत्यपूर्ण है, क्योंकि अुनसे मुझे अुनके पीछे जो स्रष्टा है अुसका खयाल होता है। सृष्टिके केन्द्रमे सत्य न होता तो ये वस्तुअे सुन्दर कैसे होती? जब मैं सूर्यास्तकी विलक्षणता अथवा चन्द्रमाकी सुन्दरताकी प्रशसा करता हू तब मेरा हृदय प्रभुकी पूजामे लीन हो जाता है। मै अिस सारी सृष्टिमे अुसे और अुसकी करुणाको देखनेकी कोशिश करता हू। परतु सूर्यास्त और सूर्योदय भी मेरे बाधक बन जायेगे, अगर मुझे अुनसे प्रभुका ध्यान करनेमे मदद न मिले। कोअी भी चीज, जो आत्माकी अुडानमे बाधक होती है, माया है, जाल है, शरीरकी भी यही बात है, क्योंकि वह कअी बार मोक्षके मार्गमे सचमुच रुकावट पैदा करता है।

यग अिंडिया, १३-११-'२४

सत्य ही मूल वस्तु है; पहले सत्यको पाना चाहिये। लेकिन सत्य 'शिव' और 'सुन्दर' होता है, अत सत्यको प्राप्त कर लेने पर कल्याण और

सौंदर्य तुम्हे मिल ही जायेंगे। ओीसाने अपने गिरि-प्रवचनमे यही सिखाया है। ओीसाको मै महान कलाकार मानता हू, क्योंकि अुन्होंने सत्यकी अुपासना की, अुसे ढूढा और अपने जीवनमे प्रगट किया। अिसी तरह मुहम्मद भी अेक बडे कलाकार थे—कुरान अरबी साहित्यकी सर्वश्रेष्ठ रचना है; पण्डितजन अैसा ही कहते है। दोनोंने पहले सत्यकी प्राप्तिका प्रयत्न किया; यही कारण है कि अुनकी वाणियोमे अभिव्यक्तिका सौंदर्य अपने-आप आ गया। लेकिन ओीसा या मुहम्मद, किसीने भी कला पर कुछ लिखा नही। अैसे ही सत्य और सौंदर्यकी आकाक्षा मै करता हू; मै अुसीके लिअे जी रहा हू और जरूरत हो तो अपने प्राण भी दे दूगा।

यग अिडिया, २०–११–'२४

दूसरी वस्तुओंकी तरह यहा भी मै तो करोडोंकी ही दृष्टिसे सोचता हूं। करोडोंको हम सौंदर्यका दर्शन अिस तरह करनेकी तालीम नही दे सकते कि वे अुसमे सत्यको देख सके। अिसलिअे पहले अुन्हे सत्यका दर्शन करना सिखाओ, सौंदर्यका दर्शन वे बादमे कर लेगे। भूखे मर रहे करोडोंके लिअे जो चीज अुपयोगी हो सकती हो, मुझे वह सुन्दर ही दिखाओी देती है। अुन्हे पहले हम प्राणपोषक वस्तुअे तो दे, जीवनको शोभा और सुन्दरता प्रदान करनेवाली वस्तुअे बादमे आ जायेगी।

यग अिडिया, २०–११–'२४

सच्ची कला केवल रूप और आकृतिका ही नही, रूप और आकृतिके पीछे अन्तर्हित सत्यका भी विचार करती है। अेक कला अैसी है जो मारती है, अेक कला अैसी भी है जो जिलाती है। सच्ची कलामे कलाकारकी आन्तरिक पवित्रता, सतोष और आनन्दका परिचय मिलना चाहिये।

यग अिडिया, ११–८–'२१

हम किसी न किसी तरह अिस विश्वासके आदी हो गये है कि कलाकारका शुद्ध जीवनसे कोओी सबध नही। मै अपने सारे अनुभवके बल पर कह सकता हू कि अिससे अधिक असत्य कुछ नही हो सकता। जब मै अपने पार्थिव जीवनके अन्तके निकट पहुच रहा हू, तब मै कह सकता हू कि जीवनकी पवित्रता सबसे अूची और सबसे अच्छी कला है। सधे हुअे स्वरसे अच्छा

संगीत पैदा करनेकी कला बहुतोंको प्राप्त हो सकती है, परंतु शुद्ध जीवनकी संवादितासे अुस संगीतको पैदा करनेकी कला बहुत कम लोगोंको प्राप्त होती है।

हरिजन, १९–२–'३८

३१

रामनाम

यद्यपि मेरी बुद्धि और मेरे हृदयने बहुत समय पहले यह अनुभव कर लिया था कि औश्वरका सर्वोच्च गुण और नाम सत्य है, फिर भी मैं सत्यको रामके नामसे स्वीकार करता हूं। मेरी परीक्षाकी अत्यन्त अंधेरी घडियोंमें अिसी अेक नामने मुझे बचाया है और अब भी वह मुझे बचा रहा है। संभव है अिसका कारण मेरे बचपनके संस्कार हों या मुझ पर तुलसीदासका जादू हो गया हो। कारण जो भी हो, यह मेरे जीवनकी सबसे महत्त्वपूर्ण हकीकत है। और जिस समय मैं ये पंक्तियां लिख रहा हूं तब मुझे मेरे बचपनके दृश्य याद आते हैं। अुस समय मैं अपने पैतृक घरसे लगे हुअे रामजीके मंदिरमें रोज जाया करता था। अुस समय मेरा राम वहां रहता था। अुसने अनेक खतरों और पापोंसे मेरी रक्षा की थी। मेरे लिअे वह कोअी अन्धविश्वास नहीं था। हो सकता है मूर्तिका पुजारी बुरा आदमी रहा हो। मैं अुसके विरुद्ध कुछ नहीं जानता। मंदिरमें दुष्कर्म हुअे होंगे, अुनकी भी मुझे कोअी जानकारी नहीं है। अिसलिअे अुनका मुझ पर कोअी असर नहीं होता। जो बात पर मुझ लागू थी और है, वही लाखों हिन्दुओं पर लागू होती है।

हरिजन, १८–३–'३३

जब कोअी यह आपत्ति करता है कि राम या रामका नाम लेना तो हिन्दुओंके ही लिअे है, मुसलमान अुसमें कैसे भाग ले सकते हैं, तब मुझे अपने मनमें हंसी आती है। क्या मुसलमानोंके लिअे अेक औश्वर है और हिन्दुओं, पारसियों और अीसाअियोंके लिअे दूसरा है? नहीं, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी औश्वर तो अेक ही है, अुसके नाम अलग अलग हैं; और जो नाम हमारे लिअे सबसे सुपरिचित है, अुसीसे हम अुसे याद करते हैं।

मेरा राम, हमारी प्रार्थनाका राम, ऐतिहासिक राम नहीं है, जो दशरथका पुत्र और अयोध्याका राजा था। वह तो नित्य, अजन्मा और अद्वितीय परमेश्वर है। मैं अुसीकी पूजा करता हू। मैं अुसीकी सहायता चाहता हू और आप भी अैसा ही कीजिये। वह समान रूपसे सबका है। अिसलिअे मुझे कोअी कारण दिखाअी नहीं देता कि किसी मुसलमानको या और किसीको भी अुसका नाम लेनेमें अेतराज क्यों हो। लेकिन रामनामके रूपमें अीश्वरको पहचाननेके लिअे वह बंधा हुआ नहीं है। वह अपने मनमें अिस तरहसे खुदा या अल्लाहका नाम ले सकता है, जिससे स्वरोंका सामंजस्य भंग न हो।

हरिजन, २८-४-'४६

मैं स्वयं तो बचपनसे ही तुलसीदासका भक्त रहा हू और अिसलिअे मैंने अीश्वरकी पूजा सदा रामके रूपमें की है। परन्तु मैं जानता हू कि ओंकारसे लेकर सब देशोंसे और सब भाषाओंमें प्रचलित अीश्वरके समस्त नामोंको देख जाय तो भी परिणाम अेक ही निकलेगा। अीश्वर और अुसका नियम अेक ही वस्तु है। अिसलिअे अुसके नियमका पालन करना पूजाका सबसे अच्छा रूप है। जो अुस नियमके साथ अेक हो जाता है अुसे जबानसे अुसका नाम लेनेकी जरूरत नहीं रहती। दूसरे शब्दोंमें, जिस व्यक्तिके लिअे अीश्वरका ध्यान सांस लेने जैसा स्वाभाविक बन जाता है, अुसमें अीश्वरकी भावना अितनी भर जाती है कि अुसके नियमका ज्ञान या पालन भी अेक प्रकारसे अुसके लिअे स्वाभाविक हो जाता है। अैसे मनुष्यके लिअे और किसी अिलाजकी जरूरत नहीं है।

तब यह प्रश्न अुत्पन्न होता है कि हमारे हाथमें यह श्रेष्ठ अुपाय होते हुअे भी हमें अिसका अितना थोडा ज्ञान क्यों है और जिन्हें ज्ञान है वे भी अीश्वरको याद क्यों नहीं रखते या हृदयके बजाय केवल वाणीसे क्यों याद करते हैं? तोतेकी तरह अीश्वरका नाम रट लेनेका अर्थ है कि हम अुसे सब रोगोंकी अेक रामबाण औषधके रूपमें नहीं पहचान सके हैं।

हरिजन, २४-३-'४६

यह कहा जा सकता है कि रामका भक्त और गीताका स्थितप्रज्ञ अेक ही हैं। अगर हम थोडी गहराअीमें जायं तो पता लगेगा कि अीश्वरका सच्चा भक्त प्रकृतिके पंचतत्त्वोंका अीमानदारीसे आज्ञापालन करता है। अगर

वह अुनका आज्ञापालन करता है तो बीमार नही पडेगा। यदि सयोगवश बीमार पड़ गया तो अुन तत्त्वोकी सहायतासे अपना अिलाज खुद कर लेगा। जो शरीरको अपना वस्त्र या आवरण मानता है वह शरीरका चाहे जिस तरहसे अिलाज नही करना चाहेगा;—हा, जो यह मानता है कि वह शरीरके सिवा कुछ नही है अुसके लिअे शरीरके रोगोका अिलाज करनेके लिअे दुनिया भरमे भटकना स्वाभाविक होगा। परतु जो अच्छी तरह समझता है कि शरीरमे रहते हुअे भी आत्मा अुससे कोअी भिन्न वस्तु है और नाशवान शरीरके मुकाबलेमे अविनाशी है, अुसे पचतत्त्वोके काम न आने पर कोअी अुद्वेग या शोक नही होगा। अिसके विपरीत वह मृत्युको मित्र समझकर अुसका स्वागत करेगा। वह डॉक्टरोकी खोज न करके अपना अिलाज स्वय ही कर लेगा। वह आत्माका भान रखकर जियेगा और आरभसे अन्त तक अन्तर्वासी आत्माके ही कल्याणकी चिन्ता करेगा।

अैसा आदमी हर सासके साथ अीश्वरका नाम लेगा। जब शरीर सोता होगा तब भी अुसका राम जागता रहेगा। वह जो कुछ करेगा अुसमे राम सदा अुसके साथ होगा। अैसा भक्त मनुष्य तो अिस पवित्र साथके छूट जानेको ही मृत्यु मानेगा।

अपने रामको अपने साथ रखनेके लिअे वह पचतत्त्वोसे जो सहायता मिल सकती है वही लेगा। अर्थात् पृथ्वी, वायु, जल, तेज और आकाशसे जो भी लाभ अुठाया जा सकता है अुसके लिअे सबसे सादा और सरल अुपाय काममे लेगा। यह सहायता रामनामकी पूर्ति करनेवाली नही है। यह तो अुसके साक्षात्कारका अेक साधन-मात्र है। वास्तवमे रामनामको किसी सहायककी जरूरत नही होती। परतु रामनामके विश्वासका दावा करना और साथ ही डॉक्टरोके पास दौडना, ये दोनो साथ साथ नही चल सकते।

जैसे शरीर रक्तके बिना नही रह सकता, ठीक अुसी तरह आत्माको श्रद्धाकी अद्वितीय और शुद्ध शक्तिकी जरूरत है। यह शक्ति मनुष्यके शारीरिक अगोकी दुर्बलतामे फिरसे बलका सचार कर सकती है। अिसीलिअे यह कहा गया है कि जब रामनाम हृदयमे अकित हो जाता है तो मनुष्यका पुनर्जन्म हो जाता है। यह नियम युवा और वृद्ध, स्त्री और पुरुष सब पर समान रूपसे लागू होता है।

हरिजन, २९–६–'४७

३२

प्राकृतिक चिकित्सा

प्राकृतिक चिकित्साका अर्थ वह अिलाज है जो मनुष्यके अनुकूल है— अुसकी मनुष्यताके अनुरूप है। मनुष्यसे अभिप्राय अुस नामसे परिचित केवल शरीरधारीसे नही, परतु अैसे प्राणीसे है जिसके पास मन और आत्मा भी है। अैसे प्राणीके लिअे रामनाम सबसे सच्चा कुदरती अिलाज है। यह अचूक अुपाय है। अिसीलिअे तो अचूक औषधिको रामबाण कहते है। प्रकृति भी बताती है कि मनुष्यके लिअे यही योग्य अिलाज है। मनुष्य किसी भी रोगसे पीडित हो, अगर वह हृदयसे रामनाम ले तो रोग अवश्य नष्ट होगा। अीश्वरके अनेक नाम है। प्रत्येक व्यक्ति वह नाम चुन सकता है जो अुसे ठीक लगे। अीश्वर, अल्लाह, खुदा और गॉड सबका अेक ही अर्थ है। परतु नाम-स्मरण तोतेकी भाति नही होना चाहिये। वह श्रद्धासे पैदा होना चाहिये और हमारे प्रयत्नमे अुस श्रद्धाका परिचय मिलना चाहिये। तब अिस प्रयत्नका रूप क्या होगा? मनुष्यको जिन पाच तत्त्वोंसे अुसका शरीर बना है—अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु—अुनमे ही अपने अिलाजकी खोज करनी चाहिये और अुन्ही तक सीमित रहकर सतोष करना चाहिये। अवश्य रामनाम तो सदा साथ रहना ही चाहिये। अितना होने पर भी मौत आ ही जाय तो हमे परवाह नही होनी चाहिये, बल्कि अुसका स्वागत करना चाहिये। विज्ञान अभी शरीरको अमर करनेका कोअी नुस्खा नही निकाल सका है। अमरत्व तो आत्माका गुण है। अुसके लिअे सब शुद्ध शरीर पैदा करनेका प्रयत्न करे।

हरिजन, ३–३–'४६

अगर हमे अूपरका तर्क मजूर हो तो प्राकृतिक चिकित्साके साधन अपने आप मर्यादित हो जायेगे। और अिससे मनुष्य बडे बड़े अस्पतालों और मशहूर डॉक्टरो वगैराके लवाजमेसे बच जायगा। ससारके अधिकाश मनुष्य कभी अितना खर्च बर्दाश्त नही कर सकते। तब फिर जो बात बहुतोको नही मिल सकती अुसे थोडे लोग क्यो चाहे?

हरिजन, ३–३–'४६

परन्तु रामनामकी शक्तिकी अपनी कुछ मर्यादाओं हैं और अुसके कारगर होनेके लिओ कुछ शर्तोंका पूरा होना जरूरी है। रामनाम जादू-टोनेकी तरह नहीं है। अगर कोओ आदमी अति भोजनके रोगसे पीडित है और अुसके परिणामोंसे अिसलिओ बचना चाहता है कि वह फिर बदपरहेजी करे तो अुसके लिओ रामनाम नहीं है। रामनाम किसी अच्छे अुद्देश्यके लिओ ही काममें लिया जा सकता है, न कि बुरेके लिओ। अन्यथा चोर-डाकू सबसे बडे भक्त हो जायेंगे। रामनाम शुद्ध हृदयवालोंके लिओ है और अुन लोगोंके लिओ है जो शुद्धता प्राप्त करना और शुद्ध रहना चाहते हैं। वह कभी भोगका साधन नहीं बन सकता। अधिक खानेका अिलाज अुपवास है, न कि प्रार्थना। प्रार्थना तभी आ सकती है जब अुपवास अपना काम कर चुका हो। वह अुपवासको आसान और सही बना सकती है। अिसी तरह रामनाम लेनेके साथ आप अपने शरीरमें दवाअियां ठूंसते रहे तो रामनाम अेक व्यर्थका ढकोसला हो जायगा। जो डॉक्टर अपने मरीजकी बुराअियोंको संतुष्ट करनेके लिओ अपनी बुद्धिका अुपयोग करता है वह अपना और अपने बीमारका पतन करता है। मनुष्यके लिओ अिससे बुरा पतन और क्या हो सकता है कि अपने शरीरको प्रभुकी पूजाका साधन समझनेके बजाय वह अुसीको पूजाकी वस्तु बना ले और अुसे टिकाये रखनेके लिओ पानीकी तरह रुपया बहाये? अिसके विपरीत रामनाम रोग मिटानेके साथ साथ आदमीको शुद्ध भी बनाता है और अिसलिओ अूंचा अुठाता है। यही रामनामका अुपयोग है और यही अुसकी मर्यादा।

हरिजन, ७–४–'४६

यह अेक योग्य प्रश्न है कि जो आदमी नियमित रूपसे रामनाम लेता है और शुद्ध जीवन बिताता करता है, अुसे कभी बीमार क्यों पडना चाहिये। प्रकृतिसे मनुष्य अपूर्ण है। विचारशील मनुष्य पूर्णताका प्रयत्न करता है; परंतु अुसे कभी प्राप्त नहीं करता। अनजाने ही सही, वह रास्तेमें ठोकरें खाता है। अीश्वरका सारा कानून शुद्ध सदाचारी जीवनमें मूर्तिमान होता है। पहली चीज अपनी मर्यादाओं अच्छी तरह समझ लेना है। यह तो स्पष्ट जान पडता है कि ज्यों ही मनुष्य अुन मर्यादाओंका अुल्लंघन करता है त्यों ही बीमार पडता है। जरूरतके अनुसार संतुलित भोजन करनेसे हमें बीमारीसे छुटकारा मिलता है। लेकिन यह कैसे जाने कि हमारे लिओ ठीक खुराक क्या है? अैसी कओ

गूढ समस्याओंकी कल्पना की जा सकती है। अिन सारी बातोंका मतलब यह है कि हरअेकको खुद अपना डॉक्टर बन जाना चाहिये और अपनी मर्यादाओंका पता लगा लेना चाहिये। जो मनुष्य अैसा करेगा वह अवश्य १२५ वर्ष जियेगा।

हरिजन, १९–५–'४६

प्राकृतिक चिकित्सा और अिस जैसी पद्धतियोंके लिये मुझे प्रेम है। लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि पश्चिमके लोगोंने डॉक्टरी विद्यामें जो तरक्की की है अुसे मैं देख नहीं सकता, यद्यपि मैंने कड़े शब्दोंमें अुनकी टीका की है और अुनकी पद्धतिको 'जादू-टोने' का नाम दिया है। मैंने यह कठोर शब्द कामने लिया है और मैं अुसे वापस नहीं लेता, क्योंकि अेक तो अुन्होंने अपने अिलाजमें जीवित प्राणियोंकी चीरफाड़ और अुसके साथ लगी हुआी सारी क्रूरताओंको जगह दी है। दूसरे वे अिन्सानकी जिन्दगीको बढानेके लिअे सब तरहके काम, फिर वे कितने ही बुरे क्यों न हों, करनेके लिअे तैयार रहते हैं और शरीरके अन्दर रहनेवाली आत्माको बिलकुल भूल गये हैं। प्राकृतिक चिकित्साकी बड़ी मर्यादाओं और प्राकृतिक चिकित्सकोंके निकम्मे दावोंके बावजूद मैं अुसे कभी छोड़ नहीं सकता। सबसे बड़ी बात यह है कि प्राकृतिक चिकित्सामें हरअेक आदमी स्वयं अपना डॉक्टर बन सकता है। दूसरी चिकित्सा-प्रणालियोंमें यह बात नहीं है।

हरिजन, ११–८–'४६

मनुष्यके पास दूसरी शक्तियोंकी भांति आध्यात्मिक बल भी है, जिसका अुपयोग वह अपने लाभके लिअे कर सकता है। युगोंसे अुसका अुपयोग शारीरिक व्याधियोंके अिलाजके लिअे किया जाता रहा है और अुसमें थोड़ी या बहुत सफलता भी मिली है, अिस बातको छोड़ दें तो भी अगर अुसे शारीरिक व्याधियोंको अच्छा करनेके लिअे सफलतापूर्वक काममें लिया जा सकता हो तो काममें न लेना बुनियादी गलती होगी। कारण, मनुष्य जड़ और चेतन दोनों है और अेकका दूसरे पर असर होता है। अगर आप जिन लाखों लोगोंको कुनैन नहीं मिलती अुनका विचार किये बिना कुनैन लेकर मलेरियासे छुटकारा पा लेते हैं, तो महज अिसलिअे कि लाखों लोग अपने अज्ञानवश अुसे काममें नहीं लेंगे आप अुस अिलाजका अिस्तेमाल

करनेसे क्यों अिनकार करते हैं जो आपके भीतर मौजूद है? दूसरे लाखों लोग अज्ञान या आलस्यवश साफ और स्वस्थ न रहे, तो क्या आपको भी साफ और स्वस्थ नही रहना चाहिये? अगर परोपकारकी झूठी धारणाओके कारण आप स्वच्छ न रहेगे तो आप मैले और बीमार रहकर अुन्ही लाखों लोगोकी सेवाके कर्तव्यसे वंचित रहेगे। वेशक, आध्यात्मिक दृष्टिसे स्वस्थ या स्वच्छ न रहना शारीरिक दृष्टिसे स्वस्थ और स्वच्छ न रहनेसे ज्यादा बुरा है।

हरिजन, १–९–'४६

मोक्षका अर्थ हर प्रकारसे स्वस्थ होना ही है। आप अपनेको अिससे वंचित क्यो करे, अगर अिससे आप दूसरोका मार्गदर्शन कर सकते हो और मार्गदर्शनके अलावा अपनी तन्दुरुस्तीके कारण अुनकी सेवा भी कर सकते हो?

हरिजन, १–९–'४६

३३

प्राणीमात्रकी अेकता

मेरा नीतिशास्त्र न सिर्फ मुझे यह दावा करनेकी अिजाजत देता है, वल्कि चाहता भी है कि मै केवल बन्दरको ही नही परतु घोडे और भेड़को, शेर और चीतेको, साप और विच्छू तकको अपना कुटुम्वी समझू। (यह जरूरी नही कि ये प्राणी भी अपनेको अैसा ही समझे।) मेरे जीवन पर जिस कठोर नीतिशास्त्रका नियत्रण है और मेरी रायमे प्रत्येक स्त्री-पुरुषके जीवन पर भी होना चाहिये, अुससे हम पर यह अिकतरफा जिम्मेदारी आती है। और वह अिसलिअे आती है कि केवल मनुष्य ही अीश्वरके स्वरूपके अनुसार वनाया गया है। अगर हममे से कुछ लोग अपनी यह स्थिति नही पहचानते तो अिससे कोअी फर्क नही पड़ता। सिर्फ अितना ही होता है कि अुस स्थितिका लाभ हमे नही मिलता, जैसे किसी सिहका भेडोंके साथ साथ लालन-पालन हुआ हो और वह अपनी खुदकी स्थितिको न जानता हो तो अुसे सिह होनेका लाभ नही मिलता। परन्तु वह सिह तो रहता ही है। और ज्यो ही वह अपने सिहत्वको पहचान लेता है, त्यो ही भेडो पर शासन करने लगता

है। परन्तु शेरकी खाल पहन कर कोओी भेड़ शेरकी स्थिति कभी प्राप्त नहीं कर सकती। और अिस बातको सिद्ध करनेके लिओ कि मनुष्य ओश्वरके स्वरूपके अनुसार बनाया गया है यह जरूरी नहीं है कि हम सब मनुष्योंमें अुस स्वरूपका प्रगट होना दिखायें। अगर हम किसी ओक मनुष्यमें भी अुस स्वरूपकी अभिव्यक्ति दिखा दें तो हमारी बात सिद्ध हो जाती है। क्या अिस बातसे कोओी अिनकार करेगा कि मानव-जातिके महान धर्म-गुरुओंने अपने जीवनसे यह सिद्ध किया है कि वे परमात्माके स्वरूपके अनुसार बने हुओ थे?

यंग अिंडिया, ८–७–'२६

मैं ओक सापकी जीवनहानि करके भी जिन्दा नहीं रहना चाहता। मुझे अुसके काटनेसे मर जाना मंजूर है, मगर अुसे मारना मंजूर नहीं। परन्तु संभव है कि ओश्वर मेरी ऐसी निर्दय परीक्षा ले और सापको मुझ पर हमला करने दे तब मुझमें मरनेका साहस प्रगट न हो, बल्कि मेरे भीतरका पशुत्व जोर करे और मैं अिस नाशवान शरीरकी रक्षा करनेमें सापको मारनेका प्रयत्न करूं। मैं स्वीकार करता हूं कि मेरा विश्वास अभी तक अितना पूर्ण नहीं बना है कि मैं जोरके साथ यह कह सकूं कि मैंने सापोंका भय छोड दिया है और मैं, जैसा कि मैं चाहता हूं, अुनसे मित्रताका व्यवहार कर सकता हूं। यह मेरा असंदिग्ध विश्वास है कि साप, चीते वगैरा हमारे विषैले, दुष्ट और बुरे विचारोंका जवाब है। . . मैं मानता हूं कि प्राणीमात्र ओक हैं। विचार निश्चित रूप ग्रहण करते हैं। शेरों और सापोंका हमारे साथ पारिवारिक संबंध है। वे हमारे लिओ अिस बातकी चेतावनी है कि हम बुरे, दुष्टतापूर्ण और वासनायुक्त विचार न रखें। अगर मैं जहरीले पशुओं और रेंगनेवाले कीडे-मकोड़ोंसे छुटकारा पाना चाहता हूं तो मुझे सभी विषैले विचारोंसे मुक्त हो जाना चाहिये। मैं ऐसा नहीं कर सकूंगा, यदि अपने अधीरतापूर्ण अज्ञानसे और शरीरकी आयु बढानेकी अिच्छासे मैं कथित जहरीले पशुओं और कीडे-मकोड़ोंको मारनेकी कोशिश करूंगा। यदि ऐसे हानिकारक जानवरोंसे अपनी रक्षा करनेकी कोशिश न करके मैं मर जाता हूं, तो मैं अधिक अच्छा और पूर्ण मनुष्य बनकर फिर जन्म लूंगा। अपने भीतर ऐसी श्रद्धा रखकर मैं सापरूपी साथी प्राणीको मारनेकी अिच्छा कैसे कर सकता हूं?

यंग अिंडिया, १४–४–'२७

हम मृत्युके बीचमे रहते हुअे टटोल-टटोल कर सत्यका मार्ग खोजनेकी कोशिश कर रहे है। शायद यह अच्छा भी है कि हम अपने जीवनमे हर कदम पर खतरेसे घिरे हुअे है, क्योकि खतरेकी जानकारी और जीवनकी अरक्षित हालतका ज्ञान होते हुअे भी प्राणीमात्रके मूल स्रोतके प्रति हमारी जितनी अुदासीनता है अुतना ही हमारा अहकार आश्चर्यकारक है।

यग अिडिया, ७–७–'२७

प्राणीमात्रका शरीर किसी न किसी हिसासे कायम रहता है। अिस-लिअे सर्वोच्च धर्मकी व्याख्या अहिसा जैसे निषेधात्मक शब्द द्वारा की गअी है। ससार विनाशकी जजीरमे बधा हुआ है। दूसरे शब्दोंमे, शरीरमे प्राण रहनेके लिअे हिसा स्वाभाविक रूपमे आवश्यक है। अिसी कारण अहिसाका पुजारी सदा शरीरके बधनसे मुक्त होनेकी प्रार्थना करता है।

यग अिडिया, ४–१०–'२८

मुझे अिस हकीकतका दु खपूर्ण भान है कि शरीरमे प्राण बनाये रखनेकी मेरी अिच्छा मुझसे सतत हिसा कराती है। यही कारण है कि मै अपने अिस भौतिक शरीरके प्रति दिन-दिन अुदासीन होता जा रहा हू। अुदाहरणके लिअे, मै जानता हू कि सास लेने और निकालनेकी क्रियामे मै हवामे अुडने-वाले असंख्य अदृश्य कीटाणुओको नष्ट करता हू। परतु मै श्वासोच्छ्वास नही छोडता। साग-भाजियोको काममे लेनेसे हिसा होती है, परतु मै देखता कि मै अुन्हे नही छोड सकता। अिसी तरह कृमिनाशक औषधियोके अुप-योगमे हिसा है, फिर भी मै मच्छरो वगैरासे छुटकारा पानेके लिअे मिट्टीके तेल आदि रोगका सक्रमण रोकनेवाले पदार्थोका अुपयोग छोडनेके लिअे अपनेको तैयार नही कर पा रहा हू। जब आश्रममे सापोको पकडकर निरापद स्थानों पर छोडना सभव नही होता तो मै अुनका मारा जाना सहन कर लेता हूं। मै आश्रममे बैलोको हाकनेके लिअे लकडीका प्रयोग भी बर्दाश्त कर लेता हू। अिस प्रकार जो हिसा मै प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमे करता हू अुसका कोअी अन्त नही। अगर मेरी अिस नम्र स्वीकारोक्तिके कारण मित्र लोग मुझे गया-बीता समझकर छोड देगे तो मुझे दु ख होगा, परतु अिससे मै अहिसाके पालनमे अपनी अपूर्णताओको छिपानेकी कोशिश नही करूगा। अपने लिअे मेरा दावा अितना ही है कि मै अहिसा आदि महान आदर्शोके गूढार्थ

समझने और अुनका मन, कर्म तथा वचनसे पालन करनेका सतत प्रयत्न कर रहा हू। और अुसमें मुझे अपनी समझके अनुसार कुछ सफलता भी मिल रही है। परतु मुझे मालूम है कि अभी अिस दिशामें मुझे बहुत ज्यादा काम करना है।

यग अिडिया, १–११–'२८

मै मानता हू कि मै अहिंसासे ओतप्रोत हू। अहिंसा और सत्य मेरे दो फेफडे है। मै अुनके बिना जी नही सकता। परतु मै हर क्षण अधिकाधिक स्पष्ट रूपमे अहिंसाकी जबरदस्त ताकत और मनुष्यकी क्षुद्रता देख रहा हू। वनवासी भी, अुसमे असीम दया हो तब भी, हिंसासे सर्वथा मुक्त नही हो सकता। हर सासके साथ वह कुछ न कुछ हिंसा करता ही है। शरीर स्वय अेक कसाओी-घर है। और अिसलिअे मोक्ष और नित्य आनन्द शरीरसे पूरी तरह मुक्त होनेमे है और अिसलिअे मोक्षके आनन्दके सिवा और सब सुख क्षणभगुर है, अपूर्ण है। अैसी हालतमे हमे दैनिक जीवनमें हिंसाकी अनेक कडवी घूटे पीनी पडती है।

यग अिडिया, २१–१०–'२६

मै सचमुच मानता हू कि जरा-जरासे बहाने पर मनुष्यको मनुष्यको मारनेकी आदतने अुसकी बुद्धिको धुधला कर दिया है। मनुष्य दूसरोंके प्राण लेनेमे जितनी अुच्छृखलतासे काम लेता है अुससे वह बाज आता, यदि वास्तवमे अुसका यह विश्वास होता कि अीश्वर प्रेम और दयाकी मूर्ति है। कुछ भी हो, मौतके डरसे मै शेरो, सांपो, पिस्सुओ और मच्छरों आदिको मार भी डालू तो भी मै सदा अुस ज्ञानके लिअे प्रार्थना करता हू, जो मृत्युका सारा भय मिटा दे और जिसे पाकर मै किसी भी प्राणीकी हिंसा करनेसे अिनकार कर दू।

हरिजन, ९–१–'३७

गाय

पशु-जगतमें गाय शुद्धतम प्राणी है। वह हमारे सामने सारी पशु-जातिके लिअे मनुष्यके हाथो न्याय प्राप्त करनेकी वकालत करती है, क्योंकि मनुष्य सृष्टिका श्रेष्ठ प्राणी है। वह अपनी आखोके द्वारा हमे यह कहती

दिखाओी देती है: 'तुम्हे हमे मारने और हमारा मांस खाने या अन्य दुर्व्यवहार करनेके लिअे हमारे अूपर नही रखा गया है, परतु हमारा मित्र और संरक्षक बननेके लिअे।'

यंग अिंडिया, २६–६–'२४

गाय मेरे लिअे करुणाका काव्य है। मैं अुसकी पूजा करता हू और सारी दुनियाका मुकाबला करके भी मैं अुसकी पूजाकी रक्षा करूगा।

यंग अिंडिया, १–१–'२५

३४

ब्रह्मचर्य क्या है?

अेक भाअी पूछते हैं: 'ब्रह्मचर्य क्या है? क्या अुसका पूर्ण पालन सभव है? है तो क्या आप करते है?'

ब्रह्मचर्यका पूरा और ठीक अर्थ तो ब्रह्मकी खोज है। ब्रह्म सर्वव्यापी है और अिसलिअे अपनी आत्मामे डुबकी लगाने और अुसे पहचाननेसे अुसकी खोज हो सकती है। यह साक्षात्कार अिंद्रियोके सपूर्ण सयमके विना असभव है। अिस प्रकार ब्रह्मचर्यका अर्थ है सब अिंद्रियोका हर समय और हर जगह मन, वचन और कर्मसे सयम।

जो व्यक्ति—पुरुप या स्त्री—पूर्ण ब्रह्मचर्यका पालन करता है वह सर्वथा विकार-रहित होता है। अिसलिअे अैसा व्यक्ति अीश्वरके निकट रहता है, अीश्वर जैसा होता है।

मुझे जरा भी शका नही कि अिस प्रकारके ब्रह्मचर्यका मन, वचन और कर्मसे पूरी तरह पालन करना सभव है।

यंग अिंडिया, ५–६–'२४

जिस मनुष्यका सत्यके साथ अटूट नाता है और जो केवल सत्यकी ही पूजा करता है, वह अगर अपनी बुद्धि और किसी काममे लगाता है तो सत्यके प्रति वेवफा साबित होता है। तब फिर वह अिंद्रियोका पोषण कैसे कर सकता है? जिस मनुष्यकी प्रवृत्तिया पूरी तरह सत्यके साक्षात्कारके

लिअे ही अर्पित है, वह प्रजोत्पत्तिके कार्यमें या गृहस्थी चलानेमें कैसे पड सकता है? भोग-विलास द्वारा आज तक किसीको सत्यका साक्षात्कार हुआ हो, अैसा अेक भी अुदाहरण हमारे पास नहीं है। भोग-विलास और सत्यका साक्षात्कार तो परस्पर-विरोधी वस्तुअे हैं।

अगर हम अिसको अहिंसाकी दृष्टिसे देखें तो हमें पता चलता है कि ब्रह्मचर्यके बिना अहिंसाका पालन असंभव है। अहिंसाका अर्थ है विश्वप्रेम। अगर कोअी पुरुष अेक स्त्रीको या कोअी स्त्री अेक पुरुषको अपना प्रेम प्रदान कर देती है, तो फिर बाकी सारी दुनियाके लिअे रह ही क्या जाता है? अिसका अर्थ तो यह हुआ कि 'हम दोनों पहले और बाकी सब जायं जहन्नुममें।' चूंकि पतिव्रता स्त्रीको अपने पतिके खातिर और अेक वफादार पतिको अपनी पत्नीके खातिर सब कुछ कुर्बान करनेके लिअे तैयार रहना पड़ता है, अिस-लिअे स्पष्ट है कि अैसे व्यक्ति न विश्वप्रेमकी अूंचाअी तक पहुंच सकते हैं और न तमाम मानव-जातिको अपना परिवार समझ सकते हैं। कारण, वे अपने प्रेमके चारों ओर अेक दीवार खडी कर देते हैं। अुनका परिवार जितना बडा होगा अुतने ही वे विश्वप्रेमसे दूर होंगे। अिसलिअे जो अहिंसा-धर्मका पालन करना चाहते हैं वे विवाह नहीं कर सकते; विवाह-बंधनके बाहर वासना-तृप्तिकी तो बात ही क्या?

तब फिर अुन लोगोंका क्या हो जो पहले ही विवाह कर चुके हैं? क्या वे कभी सत्यका साक्षात्कार नहीं कर सकेंगे? क्या वे मानवताकी वेदी पर कभी अपना सर्वस्व बलिदान नहीं कर सकते? अुनके लिअे भी अेक रास्ता है। वे अैसा आचरण कर सकते हैं, मानो अुनका विवाह ही न हुआ हो। जिन लोगोंने अिस सुखद स्थितिका अुपभोग किया है वे मेरी बातका समर्थन कर सकते हैं। जहां तक मैं जानता हूं, कअियोंने अिस प्रयोगको सफलता-पूर्वक किया है। यदि विवाहित दंपति अेक-दूसरेको भाअी-बहन समझ सकें तो वे विश्वकी सेवाके लिअे स्वतंत्र हो जायं। अिस विचार-मात्रसे कि संसारकी सब स्त्रियां हमारी बहनें, माताअें या पुत्रियां हैं, मनुष्य तुरन्त अूंचा अुठ जायगा और अुसके बंधन टूट जायेंगे। यहां पति और पत्नी कुछ खो नहीं देते, परंतु अपने साधनों और अपने परिवारमें भी वृद्धि ही करते हैं। अुनका प्रेम वासनाकी मलिनतासे मुक्त हो कर पहलेसे प्रबल हो जाता है। अिस मलिनताके दूर हो जानेसे वे अेक-दूसरेकी अधिक सेवा कर सकते

है और झगडेके अवसर कम हो जाते है। जहा प्रेममे स्वार्थ और बंधन होता है, वहा झगडेके लिअे अवसर अधिक होते हे।

अगर ये दलीले मान ली जाती है, तो ब्रह्मचर्यके शारीरिक लाभोके विचारका महत्त्व गौण हो जाता है। अिन्द्रियोके भोगमे जानबूझ कर वीर्य-हानि करना कितनी बेवकूफी है! जो चीज हमे अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियोका विकास करनेके लिअे दी गयी है, असे शारीरिक सुख-भोगके लिअे व्यय करना अुनका घोर दुरुपयोग है। और यह दुरुपयोग कअी रोगोका मूल कारण होता हे।

अन्य व्रतोकी भांति ब्रह्मचर्यका पालन भी मन, कर्म और वचनसे होना चाहिये। गीतामे हमें बताया गया है और अनुभवसे अिसका समर्थन होता है कि जो मूर्ख आदमी अपने शरीरको तो काबूमे रखता दिखाअी देता है, मगर मनमे बुरे विचारोका पोषण करता रहता है, वह मिथ्याचारी है, अुसका प्रयत्न व्यर्थ है। अगर शरीरका दमन करते हुअे साथ साथ मनको भटकने दिया जायगा तो अुससे हानि ही होगी। जहा मन भटकता है वहा शरीर भी आगे-पीछे जायगा ही।

यहां अेक भेद समझ लेनेकी जरूरत है। मनको अपवित्र विचारोका सेवन करने देना अेक बात है, और हमारे प्रयत्नोके होते हुअे भी वह अुनमे भटकता रहे, यह बिल्कुल दूसरी बात है। अगर बुरे विचारोमे भटकनेमे हम अपने मनका साथ न दे तो अन्तमे जीत हमारी ही होगी।

हम अपने जीवनके हर क्षणमें अनुभव करते है कि अक्सर हमारा शरीर तो हमारे नियत्रणमें रहता है, परंतु मन नही रहता। अिस शारीरिक नियत्रणको हरगिज ढीला नही करना चाहिये और साथ ही मनको काबूमे लानेका सतत प्रयत्न करना चाहिये। हम अिससे न ज्यादा कर सकते है, न कम। अगर हम मनका नियत्रण नही करेगे तो शरीर और मन भिन्न भिन्न दिशाओमे खीचतान करेंगे और मिथ्याचारका आरभ होगा। जब तक हम प्रत्येक बुरे विचारको पास फटकनेसे रोकते रहेंगे, तब तक यह कहा जा सकता है कि शरीर और मन साथ साथ चल रहे हैं।

ब्रह्मचर्यका पालन अति कठिन, लगभग असभव माना गया है। अिस मान्यताका कारण ढूढने पर हम देखते है कि ब्रह्मचर्य शब्दका सकीर्ण अर्थ किया गया है। केवल काम-विकारको वशमें रखना ही ब्रह्मचर्य-पालनके बराबर

मान लिया गया है। मै महसूस करता हू कि यह कल्पना अपूर्ण और गलत है। ब्रह्मचर्यका अर्थ है सभी अिन्द्रियोको वशमें रखना। जो केवल अेक अिन्द्रियको ही कावूमे रखनेकी कोशिश करता है और दूसरी सब अिन्द्रियोको खुला छोड देता हैं, अुसका प्रयत्न निष्फल होगा ही। कानोसे अुत्तेजक बातें सुनना, आखोसे अुत्तेजक दृश्य देखना, जबानसे अुत्तेजक भोजन चखना, हाथोसे अुत्तेजक पदार्थ छूना और साथ ही यह आशा रखना कि जो अेकमात्र अिन्द्रिय बच गअी वह वशमे रहेगी, अैसा ही है जैसे आगमे हाथ डालकर जलनेसे बचनेकी आशा रखना। अिसलिअे जिसने अेक अिद्रियको वशमे रखनेका निश्चय किया है, अुसे शेष अिद्रियोको कावूमे रखनेका भी वैसा ही व्रत लेना चाहिये। मेरा हमेशा यह खयाल रहा है कि ब्रह्मचर्यकी सकीर्ण व्याख्यासे बहुत हानि हुअी है। अगर हम सभी दिशाओमे अेकसाथ संयमका पालन करे तो वह वैज्ञानिक होगा और सभव है अुसमे हमे सफलता भी मिले। ब्रह्मचर्यके पालनकी कठिनाअीमे शायद मुख्य कारण स्वादेन्द्रियका असयम है। अिसलिअे आश्रममे हमने अपने व्रतोमें स्वादके सयमको अलग स्थान दिया है।

हमे ब्रह्मचर्यका मूल अर्थ याद रखना चाहिये। चर्याका अर्थ है आचरण; ब्रह्मचर्यका अर्थ है ब्रह्म अर्थात् सत्यकी खोजके अनुकूल आचरण। अिस शब्दार्थसे सब अिद्रियोके नियत्रणका विशेष अर्थ अुत्पन्न होता है। हमे अुस अपूर्ण व्याख्याको बिलकुल भूल जाना पडेगा, जिसमे ब्रह्मचर्यका अर्थ केवल जननेंद्रियका सयम किया जाता है।

मगलप्रभात, अध्याय ३

ब्रह्मचर्यके अुपाय

पहला अुपाय अुसकी आवश्यकताको अच्छी तरह समझ लेना है।

दूसरा अुपाय है धीरे धीरे अिन्द्रियोको वशमे करना। ब्रह्मचारीको अपनी जीभ जरूर कावूमें कर लेनी चाहिये। अुसे जीनेके लिअे, न कि भोगके लिअे, खाना चाहिये। अुसे केवल पवित्र वस्तुअे ही देखनी चाहिये और हरअेक गदी चीजके सामने आखे वन्द रखनी चाहिये। यह कुलीनताका चिह्न है कि हम अपनी आंखे नीची रखकर चलें और अिधर-अुधर न देखे। अिसी तरह अेक ब्रह्मचारी कोअी अश्लील या अपवित्र बात नही सुनेगा और न कोअी तेज और अुत्तेजक पदार्थ सूघेगा। साफ मिट्टीकी सुगन्ध बनावटी अित्र-फुलेलकी सुगन्धमे कही मीठी होती है। ब्रह्मचर्यार्थीको सारे समय अपने हाथपैरोको भी अुपयोगी कामोमे लगाये रखना चाहिये। वह कभी कभी अुपवास भी करे।

तीसरा अुपाय है शुद्ध साथी — शुद्ध मित्र और शुद्ध पुस्तके रखना।

अन्तिम परन्तु महत्त्वकी दृष्टिसे अत्यन्त श्रेष्ठ अुपाय प्रार्थना है। ब्रह्मचर्यार्थीको नित्य नियमसे पूरे दिलके साथ रामनाम लेना चाहिये और अीश्वरकी कृपाकी याचना करनी चाहिये।

साधारण पुरुष या स्त्रीके लिअे अिनमे से कोअी भी बात कठिन नही है। वे बिलकुल सीधी-सादी हैं, परतु अुनकी सादगी ही परेशान करनेवाली हैं। जहा अिरादा होता है वहा रास्ता बहुत सरल हो जाता है। लोगोमे अिरादा नही होता, अिसलिअे वे व्यर्थ भटकते है। यह हकीकत है कि ससारका आधार थोडे या बहुत ब्रह्मचर्य या सयमके पालन पर है। अिसीसे जाहिर है कि वह आवश्यक और व्यावहारिक है।

यंग अिडिया, २९–४–'२६

ब्रह्मचर्यके अनेक साधक अिसलिअे असफल होते है कि अपनी अन्य अिन्द्रियोका अुपयोग करते समय वे अुन लोगोका-सा आचरण करते रहना चाहते है जो ब्रह्मचारी नही है। अिसलिअे अुनका प्रयत्न ठीक अैसा ही है जैसा झुलसानेवाली गर्मीके दिनोमें कडाकेका जाडा अनुभव करनेका प्रयत्न करना। ब्रह्मचारी और अब्रह्मचारीके जीवनमे स्पष्ट भेद होना चाहिये। दोनोके बीच जो सादृश्य है वह केवल अूपरी है। भेद सूर्यप्रकाशकी भाति स्पष्ट होना

चाहिये। आखका अुपयोग दोनों करते है। पर ब्रह्मचारी देवदर्शन करता है, भोगी खेल-तमाशेमे ही लीन रहता है। दोनो अपने कानोका अुपयोग करते है। परतु जहां अेक केवल ओश्वरके गुणगान सुनता है, वहा दूसरा शृंगारिक गीतोका अनुरागी होता है। जागरण दोनो करते है। परतु जहा अेक अपना समय प्रार्थनामे विताता है, वहा दूसरा अुसे विनाशकारी नाच-रंगमें वरवाद करता है। भोजन दोनो करते है। परतु अेक देहरूपी देव-मन्दिरको अच्छी हालतमे रखनेके लिअे खाता है, तो दूसरा ठूस ठूसकर खाता है और अिस पवित्र मन्दिरको गदा वनाता है। अिस प्रकार दोनोके आचार-विचारमें जमीन आसमानका फर्क होता है और यह फर्क समयके साथ घटनेके वजाय वढता जाता है।

ब्रह्मचर्यका अर्थ है मन, वचन और कर्मसे सव अिन्द्रियोका संयम। मैंने अिस प्रकारके सयमका अूपर वर्णन किया है अुसकी आवश्यकता मैं अधिकाधिक अनुभव कर रहा हूं। जैसे ब्रह्मचर्यकी सभावनाओंकी कोओी सीमा नही है, वैसे ही त्यागकी सभावनाओंकी भी कोओी सीमा नही है। अल्प प्रयत्नके द्वारा अैसा ब्रह्मचर्य सिद्ध करना असभव है। वहुतोंके लिअे वह केवल आदर्श ही रहेगा। ब्रह्मचर्यके साधकको सदा अपनी त्रुटियोका भान होता है। वह अपने हृदयके भीतरी कोनोमे छिपे हुअे विकारोको ढूढ निकालेगा और अुनसे मुक्त होनेका सतत प्रयत्न करेगा। जव तक विचार पर हमारा अितना कावू नही हो जाता कि अिच्छाके विना अेक भी विचार मनमे न अुठे, तव तक ब्रह्मचर्य पूर्ण नही होगा। विचारमात्र विकार है। अुसका नियत्रण करना हो तो मनका नियत्रण करना होगा। और मनका नियत्रण वायुके नियंत्रणसे भी अधिक कठिन है। फिर भी अन्तर्यामी ओश्वरके होनेसे मनका नियत्रण भी सभव हो जाता है। कोओी यह न सोचे कि चूकि यह मुश्किल है अिसलिअे नामुमकिन है। वह सर्वोच्च लक्ष्य है; और कोओी आश्चर्यकी वात नही, यदि अुसकी प्राप्तिके लिअे सर्वोच्च प्रयत्न आवश्यक हो।

परंतु यह वात भारतमे आनेके वाद ही मेरी समझमें अच्छी तरह आओी कि अिस प्रकारका ब्रह्मचर्य केवल मानव-प्रयत्नसे ही सिद्ध नही हो सकता। अुस समय तक मुझे यह भ्रम था कि फलाहारसे ही सव विकार नष्ट हो जाते है और मैं अभिमानपूर्वक यह मान वैठा था कि मुझे अिसके लिअे और कुछ नही करना है।

परतु अपने अिस संघर्षका वर्णन मैं यथास्थान आगे करूगा। अिस बीच मैं यह स्पष्ट कर दू कि जो लोग अीश्वर-साक्षात्कारकी दृष्टिसे ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहते हैं, अुन्हे निराश होनेकी जरूरत नही, बशर्ते कि अुन्हे अीश्वर पर अुतनी ही श्रद्धा हो जितनी अपने प्रयत्न पर

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिन.।
रसवर्ज रसोऽप्यस्य पर दृष्ट्वा निवर्तते ॥

(निराहारी मनुष्यके विषय तो शान्त हो जाते है, मगर अुनका स्वाद बाकी रह जाता है। परमेश्वरका साक्षात्कार हो जाने पर वह स्वाद भी बाकी नही रहता।)

अिसलिअे मोक्षार्थीके लिये अुसका नाम और अुसका अनुग्रह ही अतिम साधन है। यह सत्य मेरे भारत लौटनेके बाद ही मुझ पर प्रगट हुआ।

आत्मकथा (अग्रेजी) १९४८; पृष्ठ २५८–२६०

मेरे लिअे शारीरिक ब्रह्मचर्यका पालन भी कठिनाअियोसे भरा रहा है। आज मैं कह सकता हूं कि मै अपनेको काफी सुरक्षित महसूस करता हू। परतु मुझे अभी तक अपने विचारो पर पूरा प्रभुत्व प्राप्त करना बाकी है, और वह बहुत जरूरी है। यह बात नही है कि अिसमे अिच्छा या कोशिशकी कमी है। परतु मेरे लिअे अभी तक यह अेक समस्या ही है कि अवाछनीय विचारोके बुरे हमले हम पर कहासे होते है। मुझे अिसमे शका नही कि अवांछनीय विचारोको दूर रखनेकी भी कोअी कुजी है। परतु वह हरअेकको अपने-अपने लिअे खुद ही ढूढ लेनी होती हैं। संत और ऋषि हमारे लिअे अपने अनुभव छोड गये है, मगर अुन्होने हमें कोअी अचूक और सार्वत्रिक नुसखा नही दिया है। पूर्णता या दोषमुक्ति भगवानकी कृपासे ही आती है। और अीश्वरकी खोज करनेवाले हमारे लिअे रामनाम जैसे मत्र छोड गये है, जो अुनकी तपस्यासे पुनीत और अुनकी पवित्रतासे परिपूर्ण है। सपूर्ण अीश्वरार्पणके विना विचारो पर पूरा प्रभुत्व होना असभव है। प्रत्येक महान धर्मग्रथकी यही शिक्षा है और सपूर्ण ब्रह्मचर्यके अपने प्रयत्नके हर क्षणमे मुझे अिस सत्यका अनुभव हो रहा है।

आत्मकथा (अग्रेजी) १९४८, पृष्ठ ३८८

मुझे स्वीकार करना पड़ेगा कि ब्रह्मचर्यके नियमका पालन अीश्वरमें सजीव श्रद्धाके विना असभव है और अीश्वर सजीव सत्य है। आजकल तो अीश्वरको

जीवनमे कोअी स्थान न देनेका और यह आग्रह रखनेका कि अीश्वरमे सजीव श्रद्धा रखे विना ही सर्वोच्च प्रकारका जीवन प्राप्त किया जा सकता है फैशन चल पडा है। मुझे स्वीकार करना होगा कि जो लोग अपनेसे अनन्त-गुनी किसी अुच्च सत्तामे विश्वास नही रखते और अुसकी जरूरत नही समझते, अुन्हे मै यह वात नही समझा सकता। मेरा अपना अनुभव तो मुझे अिसी ज्ञान पर ले जाता है कि किसी अैसे सजीव नियममे, जिसके आदेश पर सारा विश्व चलता है, अटल विश्वास हुअे विना संपूर्ण जीवन असभव है। अिस श्रद्धाके विना मनुष्य अैसा ही है जैसी महासागरसे निकालकर वाहर फेंक दी गयी अेक वूद, जो नष्ट होकर ही रहती है। लेकिन महासागरमें रहनेवाली प्रत्येक वूद अुसकी महानताकी हिस्सेदार होती है और हमें प्राणवायु देनेका गौरव प्राप्त करती है।

हरिजन, २५–४–'३६

३६

विवाह अेक धार्मिक संस्कार है

वेशक मनुष्य अेक कलाकार और स्रष्टा है। वेशक अुसे सौन्दर्य और अिसलिअे रग अवश्य चाहिये। अुसकी अुत्तम कोटिकी कलात्मक और सृजनकारी प्रकृतिने अुसे यह विवेक करना और जानना सिखाया कि रंगोंका कैसा भी मेल सौन्दर्यका चिह्न नही है। और न हर तरहका आनन्द ही अपने-आपमे अच्छा है। कलाकी अुसकी दृष्टिने मनुष्यको अुपयोगितामे आनन्द लेना सिखाया। अिस प्रकार अुसने अपने विकासकी प्रारभिक स्थितिमे यह सीखा कि अुसे खानेके लिअे ही नही खाना है, जैसे हममें से कुछ लोग अब तक करते है, परन्तु अुसे जी सकनेके लिअे खाना चाहिये। आगे चलकर अुसने यह भी सीखा कि जीनेके लिअे ही जीनेमे न सौन्दर्य है और न आनन्द है। परन्तु अुसे अपने भाअियोंकी और अुनके द्वारा अपने प्रभुकी सेवाके लिअे जीना चाहिये। अिसी प्रकार जब अुसने सभोगकी क्रियासे होनेवाले आनन्द पर विचार किया तो अुसे मालूम हुआ कि अन्य अिन्द्रियोंकी भांति जननेन्द्रियका भी अुपयोग और दुरुपयोग हो सकता है। और अुसने देख लिया कि अुसका सच्चा अुपयोग अुसे प्रजनन तक ही सीमित रखना है। अुसने समझ लिया कि अुस

अिन्द्रिय है। अिसके सिवा और कोअी अुपयोग असुन्दर है और अुसने यह भी समझ लिया कि अिसके व्यक्ति और मानव-जाति दोनोके लिअे वहुत गभीर परिणाम हो सकते है।

हरिजन, ४–४–'३६

आध्यात्मिकताके अर्थमे मानव-समाजका सतत विकास होता रहता है। अगर अैसी वात है तो अुसका आधार यह होना चाहिये कि अिद्रियोकी अिच्छाओ पर अधिकाधिक सयम रखा जाय। अिस दृष्टिसे विवाहको अेक अैसा धार्मिक सस्कार समझना चाहिये, जो पति और पत्नी दोनो पर अमुक अनुशासन डालता है; अिस अनुशासनके अनुसार वे शारीरिक सभोग अपने ही वीच कर सकते है, सो भी केवल सन्तानोत्पादनकी गरजसे और अुसी हालतमे जब वे दोनो अुस कामके लिअे तैयार और अिच्छुक हो।

यंग अिंडिया, १६–९–'२६

संतति-निरोधकी आवश्यकताके वारेमे दो राये नही हो सकती। परतु अुसके लिअे प्राचीन कालसे ब्रह्मचर्य या सयम ही अेकमात्र अुपाय चला आया है। यह अेक अचूक और श्रेष्ठ अुपाय है, जो अुस पर अमल करनेवालोको फायदा पहुचाता है। और अगर डॉक्टर लोग सतति-निरोधके कृत्रिम साधन खोजनेके वजाय सयमके साधनोंका पता लगायेगे तो मानव-जाति अुनकी आभारी होगी।

यग अिंडिया, १२–३–'२५

कृत्रिम अुपाय वुराअीको प्रतिष्ठा प्रदान करनेके वरावर है। अुनसे पुरुष और स्त्री लापरवाह हो जाते है। और अिन अुपायोको जो प्रतिष्ठा प्रदान की जा रही है, अुससे वे पावन्दिया जल्दी ही मिट जायगी, जो लोकमतने हम पर लगा रखी है। कृत्रिम अुपायोको अपनानेका नतीजा नपुसकता और निर्वीर्यता ही होगा। यह अिलाज रोगसे भी वुरा सावित होगा।

यग अिंडिया, १२–३–'२५

अपने कृत्योके परिणामोसे वचनेकी कोशिश करना गलत और अनैतिक है। जो आदमी ज्यादा खा ले अुसके लिअे यही अच्छा है कि अुसके पेटमे दर्द हो और फिर वह अुपवास करके अुस दर्दसे मुक्त हो। वह स्वादके लोभमे

खूब डटकर खाये और फिर पौष्टिक अथवा अन्य औषधियां लेकर परिणामसे बच निकले, यह अुसके लिअे अच्छा नही है। यह तो और भी बुरा है कि वह अपने काम-विकारोका पोषण और भोग करे और फिर अपने कृत्योंके फलसे बच जाय। प्रकृति क्षमाशील नही है। वह अपने नियमोंके अुल्लघनका पूरा बदला लेती है। नैतिक परिणाम नैतिक प्रतिबंधोसे ही आ सकते हैं। अन्य सब प्रतिबधोसे वह अुद्देश्य ही विफल हो जाता है, जिसके लिअे वे प्रतिबध लगाये जाते हैं।

यग अिडिया, १२–३–'२५

ससारके अस्तित्वका आधार प्रजनन-क्रिया पर है और चूंकि संसार ओीश्वरकी लीला-भूमि और अुसके गौरवका प्रतिबिंब है, अिसलिअे संसारके व्यवस्थित विकासके लिअे प्रजनन-क्रिया पर नियत्रण होना चाहिये।

आत्मकथा (अग्रेजी) १९४८; पृ० २५१

कामेच्छा अेक बढिया और अुदात्त वस्तु है। अिसमे शर्मिन्दा होनेकी कोअी बात नही। परतु वह सृजन-कार्यके लिअे ही बनाअी गअी है। अुसका और कोअी अुपयोग करना ओीश्वर और मानवताके प्रति पाप है।

हरिजन, २८–३–'४६

अवाछित सन्तान पैदा करना पाप है, परतु मेरे खयालसे अपने कामके नतीजेसे बचना और भी बडा पाप है। वह मानवको अमानव बनाता है।

हरिजन, ७–९–'३५

मनुष्यको दोमे से अेक रास्ता चुनना होगा नीचेका या अूपरका; परन्तु चूंकि अुसमे पशुत्व है वह अूर्ध्वगतिके बजाय अधोगतिको अधिक आसानीसे पसन्द करेगा, खास तौर पर जब अधोगतिका मार्ग अुसके सामने किसी सुन्दर वेशमें पेश किया जाय। जब पाप मनुष्यके आगे धर्मके रूपमे रखा जाता है तो वह अुसके सामने आसानीसे घुटने टेक देता है, और मेरी स्टोप्स तथा अन्य लोग यही कर रहे है।

हरिजन, ३१–१–'३५

३७

अपरिग्रहका धर्म

कोअी सत्यका साधक, प्रेम-धर्मका अुपासक कलके लिअे कुछ भी बचा-कर नहीं रख सकता। ीश्वर अगले दिनके लिअे कभी व्यवस्था नही करता। जितनी चीजकी रोज जरूरत होती है अुससे जरा भी ज्यादा वह पैदा नही करता। अिसलिअे यदि हमें अुसकी दयामे विश्वास है, तो हमे भरोसा रखना चाहिये कि वह हमें हमारी रोटी रोज देता रहेगा। . रोजके लिअे जितना चाहिये अुतना रोज पैदा करनेके ीश्वरीय नियमको हम जानते नही है, या जानते हुअे भी पालते नही है, अिसीलिअे दुनियामे विषमता और अुससे अुत्पन्न होनेवाले तमाम दुःख हम भोगते हैं। धनवानोके पास जिन चीजोकी अुन्हे जरूरत नही होती अुनके फालतू भडार जमा हो जाते है, जिनकी अुपेक्षा होती है और दुर्व्यय होता है, अुधर लाखों लोग अिन वस्तुओके अभावमें भूख और ठंडसे मर जाते है। अगर प्रत्येकके पास अुतना ही हो जितनी अुसकी आवश्यकता है, तो किसीको अभाव नही रहेगा और सब सतोषपूर्वक रहेगे। आज जो स्थिति है अुसमे जितने असतुष्ट गरीब है अुतने ही अमीर भी है। गरीब आदमी लखपति होना चाहता है और लखपति करोडपति बनना चाहता है । गरीबोको जब केवल पेट-भर खानेको मिलता है तो वे अक्सर असंतुष्ट रहते हैं; परतु अिसे पानेका अुन्हें स्पष्ट अधिकार है और समाजको यह देखना ही चाहिये कि अुन्हे पेट-भर खाना जरूर मिल जाय। अमीरोको अिस मामलेमे पहल करनी पडेगी, ताकि सतोषकी भावना सब जगह फैल जाय। अगर वे अपनी सपत्ति सौम्य मर्यादामे ही रखने लगे तो भी गरीबोको आसानीसे खानेको मिल जाय और गरीब तथा अमीर दोनो सतोषका पाठ सीखे। अपरिग्रहके आदर्शकी पूर्ण प्राप्तिके लिअे मनुष्यके पास पक्षियोकी तरह न कोअी मकान होना चाहिये, न कपड़ा और न आगेके लिअे खाद्यभडार। अवश्य ही अुसे अपनी रोजकी रोटीकी जरूरत होगी, परतु अुसका बन्दोवस्त करना अुसका नही, ीश्वरका काम है । परतु अिस आदर्शको विरली ही आत्माअे सिद्ध कर सकती है। हम साधारण साधक तो अिसे सतत दृष्टिमे ही रख सकते है और अुसके प्रकाशमे अपनी सपत्तिकी कडी जाच-पडताल

करके अुसे रोज घटानेकी कोशिश कर सकते है। सच्चे अर्थमे सभ्यता जरूरते वढानेमे नही, अुन्हे जानवूझ कर और स्वेच्छापूर्वक घटानेमे है। अिससे सच्चा सुख और सतोष अुत्पन्न होता है और सेवाकी शक्ति वढती है। मनुष्य अपनी जरूरते दीर्घ प्रयत्नसे कम कर सकता है और जरूरते घटानेसे सुखकी — स्वस्थ शरीर और शात मनकी प्राप्ति होती है। शुद्ध सत्यकी दृष्टिसे शरीर भी आत्मा द्वारा अर्जित संपत्ति है। भोगकी लालसासे हमने यह शरीररूपी परिग्रह पैदा किया है और अुसे कायम रखे हुअे हैं। जव वह लालसा नही रहेगी, तव अिस शरीरकी भी आवश्यकता नही रहेगी और मनुष्य जन्म-मरणके कुचक्रसे छूट जायगा। आत्मा सर्वव्यापी है, वह अिस शरीररूपी पिजडेमे वन्द रहना या वुराअी करना और अिस पिजडेके खातिर हत्या तक करना क्यों पसन्द करेगी? अिस प्रकार हम पूर्ण त्यागके आदर्श पर पहुचकर जव तक शरीर है तव तक शरीरका सेवाके लिअे अुपयोग करना सीखते है, यहां तक कि रोटीके वजाय सेवा ही हमारे जीवनका सहारा वन जाती है। तव हमारा खाना, पीना, सोना, जागना — सव सेवाके लिअे हो जाता है। अिससे हमे वास्तविक सुख और समय पाकर सत्यका दर्शन प्राप्त होता है। हम सवको अपने परि-ग्रहका अिस दृष्टिसे विचार कर लेना चाहिये।

हमें याद रखना चाहिये कि अपरिग्रह अैसा सिद्धान्त है जो वस्तुओ और विचारो, दोनो पर लागू हो सकता है। जो अपने मस्तिष्कको निरर्थक जान-कारीसे भरता है वह अिस अमूल्य सिद्धान्तका भग करता है। जो विचार हमे ओीश्वरसे विमुख करते है या अुसकी ओर प्रवृत्त नही करते, वे अैसी रुकावटे है जिन्हे हमे जल्दी ही दूर कर देना चाहिये। अिस सवधमे हम ज्ञानकी अुस व्याख्याका विचार कर सकते है जो गीताके १३ वे अध्यायमे दी गअी है। वहा हमें वताया गया है कि 'अमानित्व' आदि ज्ञान है और वाकी सव कुछ अज्ञान है। यदि यह सत्य है — और अिसमें सन्देह नही कि सत्य है — तो जिसे हम आज ज्ञान समझ वैठे है वह अधिकतर निरा अज्ञान है और अिसलिअे कोअी लाभ पहुचानेके वजाय हानि ही करता है। अुससे मन अिधर-अुधर भटकता है और अन्तमे खाली तक हो जाता है; असतोष फैलता है और अनर्थ वढता है। कहनेकी आवश्यकता नही कि यह कोअी जडताका समर्थन नही है। हमारे जीवनका हर क्षण प्रवृत्तिमय होना चाहिये, परतु वह प्रवृत्ति सात्त्विक और सत्योन्मुख हो। जिसने अपना

जीवन सेवाके लिअे अर्पण कर दिया है वह क्षण भर भी निष्क्रिय नही रह सकता। परन्तु हमे सत्कर्म और दुष्कर्ममें भेद करना सीखना चाहिये। सेवाकी अेकनिष्ठ भावनाके साथ यह विवेक अपने-आप आ जाता है।

मंगलप्रभात, अध्याय ६

अिसलिअे सब कुछ छोडकर अुसे अीश्वरार्पण कर दो और फिर जीवन जिओ। अिस प्रकार जीनेका अधिकार त्यागसे आता है। वह यह नही कहता: 'जब सब अपने अपने हिस्सेका काम करेंगे तब मैं भी करूंगा।' वह कहता है, 'दूसरोंकी चिन्ता न करो, अपना काम पहले करो और बाकी अीश्वर पर छोड दो।'

हरिजन, ६-३-'३७

अीसा, मुहम्मद, बुद्ध, नानक, कबीर, चैतन्य, शंकर, दयानंद, राम-कृष्ण सब अैसे पुरुष थे, जिनका हजारो आदमियो पर जबर्दस्त प्रभाव था, अुन्होंने अुनके चरित्रका निर्माण किया। अुनके होनेसे संसार समृद्ध हुआ है। और वे सब अैसे पुरुष थे जिन्होने गरीबीको जानबूझ कर अपनाया था।

'स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी' (१९३३), पृ० ३५३

सुवर्ण नियम . . . यह है कि जो चीज लाखोको नही मिल सकती अुसे लेनेसे हम दृढतापूर्वक अिनकार कर दे। यह अिनकार करनेकी शक्ति हम पर अचानक आकाशसे नही अुतर आयेगी। पहली बात यह है कि अैसी मनोवृत्ति पैदा की जाय, जो अुन वस्तुओ अथवा सुविधाओको स्वीकार न करे जिनसे लाखो लोग वंचित है, और दूसरी तात्कालिक बात यह है कि हम अपने जीवनको जल्दीसे जल्दी अुस मनोवृत्तिके सांचेमे ढाले।

यंग अिंडिया, २४-६-'२६

अगर हम आजकी चिन्ता कर लेंगे तो कलकी चिन्ता भगवान कर लेगा।

यंग अिंडिया, १३-१०-'२१

काम ही पूजा है

"ब्रह्माने अपनी प्रजाको यज्ञके साथ — अुन पर यज्ञका धर्म लागू करके — पैदा किया और कहा. अिससे तुम सुखी और समृद्ध बनो। अिससे तुम्हारी अिच्छाअे पूरी हों। जो यज्ञ किये बिना खाता है वह चोरीकी रोटी खाता है।" यह गीताका वचन है। बाअिबल कहती है: "अपने पसीनेकी कमाअी खाओ।" यज्ञ कअी प्रकारके हो सकते हैं। अुनमें से अेक रोटीके लिअे परिश्रम भी है। अगर सब लोग केवल अपनी रोटीके लिअे मेहनत करने लगें, तो सबके लिअे काफी अन्न और काफी अवकाश होगा। तब यह पुकार नहीं होगी कि आबादी अुचितसे अधिक बढ़ रही है, रोग न होंगे और आजकी भांति दुःख न होगा। अिस प्रकारका श्रम अूंचेसे अूंचे दर्जेका यज्ञ होगा। अवश्य ही मनुष्य अपने शरीर द्वारा अथवा अपने मस्तिष्क द्वारा और बहुतसी बातें करेंगे, परन्तु वह सब प्रेमपूर्ण, सबकी भलाअीके लिअे किया गया, श्रम होगा। फिर कोअी गरीब, कोअी अमीर, कोअी नीचा, कोअी अूंचा, कोअी छूत और कोअी अछूत न होगा।

हरिजन, २९–६–'३५

यह अप्राप्य आदर्श हो सकता है। परन्तु अिसका यह मतलब न होना चाहिये कि हम अुसके लिअे कोशिश करना बन्द कर दें। अगर हम यज्ञका सम्पूर्ण धर्म, जो हमारा जीवनधर्म है, पालन किये बिना अपनी रोटीके लिअे भी काफी शरीर-श्रम कर लें तो हम लक्ष्यकी ओर काफी आगे बढ़ेंगे।

हरिजन, २९–६–'३५

अगर हमने अैसा किया तो हमारी आवश्यकताअें कमसे कम हो जायगी, हमारा भोजन सादा हो जायगा। तब हम खानेके लिअे न जीकर जीनेके लिअे खायेंगे। जिसे अिस वचनके ठीक होनेमें शंका हो वह अपनी रोटीके लिअे पसीना बहाकर देख ले। अुसे अपनी मेहनतके फलमें अत्यन्त स्वाद आयेगा, अुसकी तन्दुरुस्ती सुधर जायगी और अुसे पता चलेगा कि बहुतसी चीजें जो वह लेता है फालतू हैं।

हरिजन, २९–६–'३५

क्या लोग बौद्धिक श्रमसे अपनी रोजी न कमाये? नही, शरीरकी जरूरतें शरीरसे ही पूरी होनी चाहिये। 'राजाका हक राजाको ही मिलना चाहिये,' यह कहावत यहा भी लागू होती है। केवल मानसिक अर्थात् बौद्धिक श्रम आत्माके लिये है और वह खुद ही अपना पुरस्कार है। अुसका मुआवजा कभी नहीं मागना चाहिये। आदर्श राज्यमे डॉक्टर, वकील आदि अपने लिअे काम न करके केवल समाजके लिअे करेंगे।

रोटीके लिअे श्रमके नियमका पालन समाजकी रचनामे शात क्रान्ति कर देगा। मनुष्यकी विजय तब हुअी मानी जायगी, जब हमारे जीवनका नियामक अुसूल जीवन-सग्रामके बजाय पारस्परिक सेवाकी प्रतियोगिता हो जाय। तब पशु-धर्मका स्थान मानव-धर्म ले लेगा।

हरिजन, २९–६–'३५

देहातमे लौट चलनेका अर्थ है रोटीके लिअे श्रमके धर्म और अुसके सारे फलितार्थोको साफ तौर पर और स्वेच्छापूर्वक स्वीकार करना।

हरिजन, २९–६–'३५

जो मनुष्य अपने मानव-बन्धुओकी सेवा करता है अुसके हृदयमे औश्वर स्वय अपना निवास-स्थान बनाना चाहता है। अबू-बिन-आदम अैसा ही आदमी था। अुसने अपने मानव-बन्धुओकी सेवा की और अिसीलिअे अुसका नाम खुदाकी बन्दगी करनेवालोकी सूचीमे सबसे अूपर था।

यंग अिंडिया, २८–३–'२५

परंतु दुखी और पीडित कौन है? दलित और गरीबीके मारे लोग। अिसलिअे जो भक्त बनना चाहता है, अुसे अिन लोगोकी तन-मन और आत्मासे सेवा करनी पडेगी। जो गरीबोके खातिर कातने तकका श्रम करनेको तैयार नही है और झूठे बहाने बनाता है, वह सेवाका अर्थ नही जानता। जो गरीबोके आगे कातता है और अुन्हे भी कातनेको कहता है वह औश्वरकी जो सेवा करता है वैसी और कोअी नही करता। भगवद्गीतामे भगवान कहते है, "जो मुझे फल-फूल या पत्तीकी तुच्छ भेंट भी भक्तिभावसे देता है वह मेरा भक्त है।" और औश्वरके चरण वहा है जहा 'गरीब, नीचेसे नीचे और निराश्रित लोग' रहते है। अिसलिअे अैसे लोगोके लिअे कताअी करना सबसे बडी प्रार्थना, सबसे बडी पूजा, सबसे बडा यज्ञ है।

यग अिडिया, २४–९–'२५

सत्य ही ओश्वर है

प्रश्न क्या मनुष्यके लिये यह बेहतर नही होगा कि जो समय वह ओश्वरकी पूजामे खर्च करता है अुसे गरीबोकी सेवामे लगाये? और क्या अैसे आदमीके लिअे सच्ची सेवाके कारण पूजा-पाठ अनावश्यक नही हो जाता?

अुत्तर मुझे अिस प्रश्नमे मानसिक आलस्य और नास्तिकता दोनोकी गध आती है। बडेसे बडे कर्मयोगी भी भजन-कीर्तन या पूजा नही छोडते। आदर्शकी दृष्टिसे यह कहा जा सकता है कि दूसरोकी सच्ची सेवा स्वयं पूजा है और अैसे भक्तोको कोओ समय भजन आदिमे खर्च करनेकी जरूरत नही। लेकिन असल बात यह है कि भजन आदि सच्ची सेवामे सहायक होते है और भक्तके हृदयमे ओश्वरकी याद ताजा बनाये रहते है।

हरिजन, १३–१०–'४६

कोओ भी काम, जो ओश्वरके नाम पर और अुसे समर्पित करके किया जाता है, छोटा नही होता। अिस प्रकार किये हुअे सभी कार्योका पुण्य समान होता है। अेक भगी जो ओश्वरकी सेवाके लिअे काम करता है और अेक राजा जो अुसकी दी हुओ वस्तुओको अुसके नाम पर और केवल सरक्षक बनकर काममें लेता है, दोनोका दर्जा बराबर है।

यग अिडिया, २५–११–'२६

अिससे अधिक अुदात्त या अधिक राष्ट्रीय किसी वस्तुकी मै कल्पना नही कर सकता कि हम सब रोज घटे भर वही परिश्रम करे जो गरीबोको करना होता है और अिस प्रकार अुनके साथ और अुनके द्वारा सारी मानव-जातिके साथ तादात्म्य स्थापित करे। मै अिससे अच्छी ओश्वर-पूजाके बारेमे सोच नही सकता कि जैसे गरीब मेहनत करते है वैसे ही मै भी ओश्वरके नाम पर गरीबोके लिअे मेहनत करू।

यग अिडिया, २०–१०–'२१

काम पर जितना जोर दिया जाय अुतना हमेशा अच्छा है। मै केवल गीताका सिखाया हुआ धर्म ही दोहरा रहा हू। भगवान कहते है, 'अगर मै सतत जागरूक रहकर सदा काम न करता रहू, तो मै मानव-जातिके लिअे गलत अुदाहरण स्थापित करूगा।'

हरिजन, २–११–'३५

जब तक अेक भी सशक्त स्त्री या पुरुष बेकार या भूखा रहे, तब तक हमें आराम लेने या भरपेट भोजन करनेमें शर्म आनी चाहिये।

यंग अिंडिया, ६–१०–'२१

सेवा तब तक संभव नहीं, जब तक अुसका मूल प्रेम या अहिंसा न हो। सच्चा प्रेम महासागरकी तरह असीम होता है और अपने भीतर अुठता और बढ़ता हुआ बाहर फैल जाता है तथा सब सीमाओं और सरहदोंको पार करके सारे जगत पर छा जाता है। साथ ही यह सेवा रोटीके लिअे श्रमके बिना भी संभव नहीं। गीतामें अिसीको यज्ञका नाम दिया गया है। जब कोअी पुरुष या स्त्री सेवाके खातिर शरीर-श्रम करे तभी अुसे जीनेका हक हासिल होता है।

यंग अिंडिया, २०–९–'२८

३९

सर्वोदय

यह शरीर . . हमें अिसीलिअे दिया गया है कि अुससे हम सारी सृष्टिकी सेवा कर सकें। और अिसीलिअे गीता कहती है कि जो यज्ञ किये बिना खाता है वह चोरी करता है। जो शुद्धताका जीवन बिताना चाहता है, अुसका अेक अेक काम यज्ञरूप* होना चाहिये। यज्ञ हमें जन्मसे ही प्राप्त होता है, अिसलिअे हम जीवनभर ऋणी रहते हैं और अिस प्रकार विश्वकी सेवा करना

---

* यज्ञका क्या अर्थ है, यह गांधीजी पिछले अेक अध्यायमें समझा चुके हैं। वे कहते हैं "यज्ञ वह कर्म है जो दूसरोंकी भलाअीके लिअे किया जाय और जिसमें सांसारिक या आध्यात्मिक किसी भी प्रकारके बदलेकी अिच्छा न हो। 'कर्म' का यहां अत्यंत व्यापक अर्थ करना चाहिये और अुसमें शारीरिक कर्मकी तरह ही मानसिक और वाचिकको भी सम्मिलित मानना चाहिये। 'दूसरों' में न सिर्फ मानव-जातिको, बल्कि प्राणीमात्रको समझना चाहिये। अिसलिअे और अहिंसाकी दृष्टिसे मानव-जातिकी सेवाके खयालसे भी नीची श्रेणीके प्राणियोंका बलिदान करना यज्ञ नहीं है।"

सदा ही हमारा कर्तव्य है। जिस प्रकार दासको अपने स्वामीसे, जिसकी वह सेवा करता है, अन्नवस्त्रादि प्राप्त होते है, अुसी प्रकार हमे भी जगन्नियन्तासे जो भी दान मिल जाय अुसे कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करना चाहिये। जो कुछ हमे मिले अुसे भगवानका दान मानकर ही हमे लेना चाहिये, क्योंकि कर्जदार होनेके कारण हमें अपने कर्तव्य-पालनका कोअी मुआवजा पानेका हक नही है। अिसलिअे अगर हमे वह न मिले तो हम मालिकको दोष न दे। हमारा शरीर अुसका है, वह चाहे तो अिसे रखे और न चाहे तो फेंक दे। यह कोअी शिकायत या दयाकी भी बात नही, बल्कि अगर हम ओश्वरकी योजनामे हमारा अुचित स्थान क्या है, अिस बातको ठीक समझ लें तो यह अेक स्वाभाविक और सुखद अेव वाछनीय स्थिति है। यदि हम अिस परम आनदका अनुभव करना चाहते है, तो हमे वास्तवमें प्रबल श्रद्धाकी जरूरत होगी। "अपने बारेमे जरा भी चिन्ता न करो, सब चिन्ता ओश्वर पर छोड दो।" सब धर्मोका यही आदेश मालूम होता है।

अिससे किसीको डर जानेकी जरूरत नही। जो शुद्ध अन्तःकरणसे सेवामे लगता है, वह दिन-दिन अिसकी अधिकाधिक जरूरत समझेगा और अुसकी श्रद्धामे सतत वृद्धि होती रहेगी। जो स्वार्थको छोड़ने और मनुष्य-जन्मकी शर्त — यज्ञकी आवश्यकताको स्वीकार करनेके लिअे तैयार नही है, अुसके लिअे सेवाका मार्ग दुर्गम है। जाने-अनजाने हम सब कोअी न कोअी सेवा अवश्य करते है। अगर हम जानबूझ कर सेवा करनेकी आदत डाले, तो सेवाकी हमारी अिच्छा बराबर प्रबल होती जायगी और अुससे हमारा अपना ही नही, सारे ससारका सुख भी बढेगा।

मगलप्रभात, अध्याय १४

अहिंसाका पुजारी अधिकसे अधिक लोगोकी अधिकसे अधिक भलाअीके अुपयोगितावादी सूत्रको स्वीकार नही कर सकता। वह सबकी अधिकसे अधिक भलाअीका प्रयत्न करेगा और अिस आदर्शकी सिद्धिके प्रयत्नमें प्राण भी दे देगा। अिसलिअे वह दूसरोको जिन्दा रखनेके लिअे खुद मरनेको तैयार रहेगा। वह खुद मरकर दूसरोके साथ साथ अपनी भी सेवा करेगा। अन्तमें तो सबकी अधिकसे अधिक भलाअीमे अधिकसे अधिक लोगोकी भलाअी शामिल ही है और अिसलिअे बहुतसी बातोमे अुसका और अुपयोगितावादीका मेल ही रहेगा। परतु अैसा समय आ जाता है जब दोनोको जुदा होना पडता है;

और विरोधी दिशाओंमें भी काम करना पडता है। अुपयोगितावादी अगर अपने तर्कका अनुगमन करेगा तो कभी अपनेको कुर्बान नही करेगा।

यग अिडिया, ९–१२–'२६

मैं नही मानता . . . कि कोअी व्यक्ति तो आध्यात्मिक प्रगति करता रहेगा और अुसके पडोसी कष्ट भोगते रहेंगे। मेरा अद्वैतमे विश्वास है। मैं मनुष्य-जातिकी ही नही, प्राणीमात्रकी अेकताको मानता हू। अिसलिअे यदि अेक आदमीको आध्यात्मिक लाभ होता है तो अुसके साथ साथ सारी दुनियाको भी होता है, और अगर अेक मनुष्य गिरता है तो अुस हद तक समस्त जगतका भी पतन होता है।

यग अिडिया, ४–१२–'२४

कोअी भी गुण अैसा नही है, जिसका लक्ष्य अेक ही व्यक्तिकी भलाअी हो या अेक ही व्यक्तिकी भलाअीसे अुसे सतोष हो जाय। अिसी प्रकार अेक भी अपराध अैसा नही है, जिसका वास्तविक अपराधीके अलावा दूसरे अनेक लोगो पर असर न पड़ता हो। अिसलिअे कोअी व्यक्ति अच्छा है या बुरा, यह सिर्फ अुसके विचारका ही विषय नही है, बल्कि सारे समाजकी — नही, सारी दुनियाकी चिन्ताका विषय है।

'अेथिकल रिलीजन' (१९२७), पृ० ५५

सेवामय जीवनमें नम्रता होनी ही चाहिये। जो दूसरोके लिअे अपना जीवन कुर्बान कर देना चाहता है, अुसके पास यह सोचनेका समय ही नही होगा कि अुसके लिअे कोअी अुच्च स्थान सुरक्षित रहे। लेकिन जैसा हिन्दू धर्ममें भूलसे मान लिया गया है, जडताको नम्रता नही समझ बैठना चाहिये। सच्ची नम्रताका अर्थ यह है कि अेकमात्र मानव-सेवाके अुद्देश्यसे सतत और अत्यत परिश्रमपूर्ण प्रयत्न जारी रहे। अीश्वर क्षणभर भी आराम लिये बिना कर्म करता रहता है। अगर हम अुसकी सेवा करना चाहते है या अुसके साथ अेकरूप होना चाहते हैं तो हमारा कर्म अुसीकी तरह अविश्रान्त होना चाहिये।

मंगलप्रभात, अध्याय १२

समुद्रसे अलग हुअी बूदके लिअे क्षणभरका आराम हो सकता है, परतु जो बूंद समुद्रमें है अुसके लिअे कोअी विश्राम नही होता। हमारी अपनी भी

यही बात है। ज्यो ही हम ीश्वररूपी समुद्रके साथ ेक हो जाते हैं, त्यों ही हमारे लिे कोी आराम नही रह जाता। असलमे फिर हमे आरामकी जरूरत ही नही रहती। हमारी निद्रा भी कर्म है, क्योंकि हम हृदयमें ीश्वरका ध्यान करते हुे सोते हैं। यह अविश्राम ही सच्चा विश्राम है। िस अविश्रान्त बेचैनीमे ही अमिट शांतिकी कुंजी है। सपूर्ण समर्पणकी िस परम अवस्थाका वर्णन करना कठिन है, परंतु वह मानव-अनुभवकी परिधिके बाहर नही है। अनेक समर्पित आत्माोने िसे प्राप्त किया है और हम भी प्राप्त कर सकते हैं।

मंगलप्रभात, अध्याय १२

४०

अणु-बम और अहिंसा

अमरीकी मित्रोका कहना है कि अणु-बमसे अहिंसा जितनी जल्दी आयेगी ुतनी और किसी तरह नहीं आ सकती। यह बात सही मानी जा सकती है, अगर िसका मतलब यह हो कि अणु-बमकी विनाशक शक्तिसे संसारको ितनी घृणा हो जायगी कि वह फिलहाल हिंसासे मुह मोड़ लेगा। लेकिन यह तो वैसा ही है जैसे कोी आदमी पहले तो अपना पेट मिठािोंसे ितना ठूस-ठूस कर भर ले कि ुसे मतली होने लगे और ुनसे विमुख हो जाय, मगर ज्यो ही मतलीका असर मिट जाय त्यों ही फिर दुगुने जोशके साथ मिठाियां खाने बैठ जाय। ठीक िसी प्रकार जब घृणाका असर मिट जायगा तब संसार फिर नये ुत्साहसे हिंसाकी तरफ दौड़ेगा।

कभी बार बुराीसे भलाी निकल आती है। परन्तु यह ीश्वरकी योजना है, मनुष्यकी नही। मनुष्य तो यही जानता है कि जैसे भलाीसे भलाी पैदा होती है, वैसे बुराीसे बुराी ही ुत्पन्न हो सकती है।

बेशक यह संभव है कि यद्यपि अमरीकी वैज्ञानिको और सेनाके लोगोंने अणु-शक्तिका ुपयोग विनाशके लिे किया है, तो भी दूसरे वैज्ञानिक ुसका ुपयोग मानव-सेवाके कामोमे कर ले। परन्तु अमरीकी भािोंके ुपरोक्त कथनका यह मतलब नही था। वे ितने भोले नही थे कि कोी ैसा सवाल पूछते

जिसका अुत्तर स्पष्ट हो। आग लगानेवाला आगका अुपयोग विनाशक और घृणित हेतुसे करता है, जब कि गृहस्वामिनी अुसका अुपयोग रोज मानव-जातिके लिअे पौष्टिक भोजन तैयार करनेमे करती है।

जहा तक मुझे दिखाअी देता है, अणु-बमने अुस श्रेष्ठ भावनाकी हत्या कर दी है जो युगोसे मानव-जातिका आधार रही है। लडाअीके कुछ नियम हुआ करते थे, जिनसे वह सह्य बनी हुअी थी। अब हम नग्न सत्य जान गये है। अब ताकतके सिवा युद्धका कोअी कानून नही रहा। अणु-बमसे मित्रराष्ट्रोकी थोथी जीत तो हो गअी, पर साथ ही अुसने थोडे वक्तके लिअे तो जापानकी आत्माका खून कर दिया है। विनाशक राष्ट्रकी आत्माका क्या हुआ, यह अभी नही देखा जा सकता। प्रकृतिकी शक्तियां रहस्यमय ढंगसे काम करती है। हम तो अिस रहस्यको अिसी प्रकारकी घटनाओके ज्ञात परिणामोके सहारे ही समझ सकते है। अपनेको या अपने प्रतिनिधिको गुलामीके पिंजडेमे रखे बिना कोअी आदमी किसीको गुलाम नही रख सकता। कोअी यह कल्पना न कर ले कि जापानने अपनी अशोभनीय महत्त्वा-कांक्षाकी पूर्तिके लिअे जो कुकृत्य किये, अुनकी मैं कोअी सफाअी देना चाहता हूं। फर्क केवल मात्राका था। मै मान लेता हू कि जापानका लोभ अधिक अनुचित था। परन्तु अिस अधिक अनौचित्यके कारण कम अनौचित्यवाले पक्षको यह हक हासिल नही हो जाता कि किसी विशेष अिलाकेमे वह जापानके मर्दों, औरतों और बच्चोका नाश कर डाले।

बमकी अिस अत्यन्त करुण दुर्घटनासे हमे सबक तो यह सीखना है कि जैसे प्रतिहिंसासे हिंसा नष्ट नही होती, वैसे ही जवाबी बमोसे अणु-बम नष्ट नही होगा। मानव-जातिको अहिंसाके द्वारा ही हिंसासे छुटकारा पाना होगा। घृणाको प्रेमसे ही जीता जा सकता है। बदलेमें घृणा करनेसे घृणाका विस्तार और गहराअी दोनो बढते ही है। मुझे मालूम है कि मैंने पहले कअी बार जो कहा है और जिसका अपनी योग्यता और शक्तिके अनुसार अमल किया है, अुसीको मैं दोहरा रहा हू। मैंने जो कुछ पहले कहा था वह भी कोअी नअी बात नही थी। वह अुतनी ही पुरानी थी जितनी यह सृष्टि पुरानी है। हा, मैंने किसी पुस्तकीय अुपदेशको नही दोहराया था, परन्तु निश्चित रूपमे अुसी चीजकी घोषणा की थी जो मै मानता था कि मेरी रग-रगमे समाअी हुअी है। जीवनके विविध क्षेत्रोमे किये गये साठ सालके आचरणने मेरा वह विश्वास दृढ ही किया है और मित्रोके अनुभवने भी अुसे बल पहुचाया है। परन्तु यह अेक अैसा केन्द्रीय

सत्य है, जिस पर आदमी अकेला भी अटल रह सकता है। मैक्समूलरने वर्षो पहले कहा था : 'जब तक सत्यको न माननेवाले लोग मौजूद है, तब तक अुसे बार-बार कहते रहनेकी जरूरत है।' मै अिस बातको मानता हूं।

हरिजन, ७–७–'४६

४१

संसारमें शान्ति

यह मेरी पक्की राय है कि आजका युरोप न तो अीश्वरकी भावनाका प्रतिनिधि है, न अीसाअी धर्मकी भावनाका, बल्कि शैतानकी भावनाका प्रतीक है। और शैतानकी सफलता तब सबसे अधिक होती है, जब वह अपनी जबान पर खुदाका नाम लेकर सामने आता है। युरोप आज नाममात्रको ही अीसाअी है। वह सचमुच धनकी पूजा कर रहा है। 'अूटके लिअे सुअीकी नोकमें होकर निकलना आसान है, मगर किसी धनवानका स्वर्गमे जाना मुश्किल है।' अीसा मसीहने यह बात ठीक ही कही थी। अुनके कथित अनुयायी अपनी नैतिक प्रगतिको अपनी धन-दौलतसे ही नापते हैं।

यग अिंडिया, ८–९–'२०

अीसाके पर्वतीय अुपदेशमे आपको जो अमृत दिया गया है अुसे आप शौकसे खूब पीजिये। परन्तु फिर तो आपको तपस्वी जीवन अपनाना होगा। वह अुपदेश हम सबके लिये था। आप अीश्वर और धन-दौलत दोनोंकी सेवा नही कर सकते। करुणासागर और दयालु अीश्वर सहिष्णुताकी मूर्ति है। वह धन-दौलतको चार दिनकी चादनी मनाने देता है। परन्तु मैं आपसे कहता हूं . . कि शैतानकी अिस अपने-आप नष्ट होनेवाली किन्तु विनाशक तड़क-भड़कसे आप दूर भागिये।

यग अिंडिया, ८–१२–'२७

समय आ रहा है जब वे लोग, जो आज भ्रमवश यह समझ कर कि वे संसारके वास्तविक ज्ञानमे वृद्धि कर रहे है अपनी जरूरते दुगुनी चौगुनी बढानेकी दौड़मे पागल होकर लगे हुअे है, वापिस लौटेंगे और कहेंगे . 'हा ! हमने यह क्या किया ?'

सभ्यताअे आअी और चली गअी। और हम अपनी प्रगतिका कितना भी घमण्ड क्यों न करे, मुझे बार-बार यह पूछनेका लोभ होता है: 'अिससे लाभ क्या हुआ?' डार्विनके अेक समकालीन वालेसने भी यही बात कही है। अुसने कहा है कि पचास बरसके चमत्कारी आविष्कारो और अनुसधानोने मानव-जातिकी नैतिक अूचाअीमे तिलभर भी वृद्धि नही की है। यही बात टॉल्स्टॉयने कही, भले ही आप अुसे स्वप्नद्रष्टा और कल्पनाके घोडे दौडानेवाला समझ लीजिये। यही बात अीसा, बुद्ध और मुहम्मदने कही है, जिनके धर्म पर आज मेरे अपने ही देशमे कलक लगाया जा रहा है।

यंग अिंडिया, ८-१२-'२७

स्थायी शातिकी संभावनामे विश्वास न रखना मानव-स्वभावकी अीश्वरोन्मुखता पर अविश्वास करना है। आज तकके अुपाय अिसलिअे बेकार साबित हुअे है कि जिन लोगोने कोशिश की है अुनमे बुनियादी सचाअीकी कमी रही है। अुन्होने अिस कमीको अनुभव कर लिया हो सो बात भी नही। जैसे किसी रासायनिक मेलका होना अुसकी जरूरी शर्तोंके सपूर्ण पालनके बिना असंभव है, अुसी तरह शांतिकी शर्तोंके अधूरे पालनसे शाति नही हो सकती। मानव-जातिके जिन माने हुअे नेताओका विनाशके साधनो पर नियत्रण है, वे अुनका अुपयोग करना पूरी तरह छोड दे और छोडनेके गूढार्थोको पूरी तरह जान कर छोडे, तो ही शाति स्थापित हो सकती है। यह साफ तौर पर तब तक नामुमकिन है जब तक कि ससारकी महान सत्ताअे अपने साम्राज्यवादी अिरादोको तिलाजलि न दे दे। यह भी तब तक सभव नही होगा, जब तक बडे-बडे राष्ट्र आत्मनाशक स्पर्धामे विश्वास करना और जरूरते बढाकर अपनी भौतिक संपत्ति बढानेकी अिच्छा रखना नही छोड देगे। मेरा दृढ विश्वास है कि बुराअीकी जड चेतन अीश्वरमे सजीव श्रद्धाका अभाव है। यह अेक प्रथम श्रेणीकी करुण घटना है कि ससारकी वे जातिया, जो अीसाको शातिका राजा कहकर अुनके सदेशमें विश्वास रखनेका दावा करती है, वास्तविक व्यवहारमे अुस विश्वासका परिचय नही देती। यह देखकर दुःख होता है कि सच्चे अीसाअी पादरी भी अीसाके सन्देशका क्षेत्र चुने हुअे व्यक्तियो तक ही सीमित रखते है। मुझे बचपनसे सिखाया गया है और अिस सत्यकी अनुभवसे परीक्षा हो चुकी है कि छोटेसे छोटे मानव-प्राणी भी मानव-जातिके प्राथमिक गुणोको अपनेमें पैदा कर सकते है। मनुष्यमात्रमे निहित यह अचूक शक्ति

ही मनुष्यको ओीश्वरकी शेष सृष्टिसे अलग करती है। अगर कोओी अेक राष्ट्र भी बिलाशर्त यह परम त्यागका काम कर डाले, तो हममे से बहुतोको अपने जीवनकालमे अिस पृथ्वी पर शाति स्थापित हुओी देखनेका सौभाग्य प्राप्त हो जायगा।

हरिजन, १८–६–'३८

अगर ससारके अुत्तम व्यक्तियोने अहिसाकी वृत्तिको ग्रहण नही किया, तो अुन्हे गुडागिरीका सामना पुरानी रीतिसे ही करना पड़ेगा। परंतु अिससे यही साबित होगा कि अभी तक हम जगलके कानूनसे आगे नही बढे है, ओीश्वरने हमे जो देन दी है अुसकी कदर करना अभी तक हमने नही सीखा है और अुन्नीस सौ वर्ष पुरानी ओीसाओी धर्मकी और अुससे भी पुरानी हिन्दू, बौद्ध धर्म और अिस्लामकी भी शिक्षाके बावजूद मानव-प्राणियोकी हैसियतसे हमने बहुत प्रगति नही की है। परतु जहा मै यह समझ सकता हू कि जिन लोगोमे अहिसाकी वृत्ति नही है वे बलका प्रयोग करे, वहां मैं चाहूगा कि जो अहिसाको जानते है वे अपना सारा जोर यह साबित करनेमे लगाये कि गुडागिरीका मुकाबला भी अहिसासे ही करना होगा।

हरिजन, १०–१२–'३८

पशुबलका बोलबाला ससारमे हजारो वर्षसे रहा है और अिसका कड़वा फल मानव-जाति बराबर भुगत रही है। यह बात अधेको भी दिखाओी दे सकती है। अिससे भविष्यमे कुछ भी लाभ होनेकी आशा नही है। अगर अधकारसे प्रकाश पैदा हो तो ही घृणासे प्रेम अुत्पन्न हो सकता है।

दक्षिण अफ्रीकाका सत्याग्रह (अग्रेजी); पृष्ठ २८९

४२

स्फुट विचार

मृत्यु

जब बच्चे, नौजवान या बूढे मरे तब हमे अशात क्यो हो जाना चाहिये? अिस संसारमे अेक भी क्षण अैसा नही गुजरता जब कोअी न कोअी जन्मता या मरता न हो। हमें समझ लेना चाहिये कि जन्मकी खुशी मनाना और मौतका मातम करना बडी बेवकूफी है। जो आत्माको मानते है — और कौन हिन्दू, मुसलमान या पारसी अैसा होगा जो आत्माको नही मानता — वे जानते है कि आत्मा कभी मरती नही है। जीवितो और मृतो, दोनोकी आत्माये अेक ही है। अुत्पत्ति और लयकी शाश्वत क्रियाये बराबर जारी रहती है। अिसमें अैसी कोअी बात नही जिसके लिअे हम सुख या दुखके मारे बावले हो जाय। अगर हम अपनी कौटुम्बिकताका खयाल अपने देशवासियो तक भी बढा ले और समझ ले कि देशमे होनेवाले सारे जन्म हमारे परिवारमे ही हो रहे है, तो हम कितने जन्मोत्सव मनायेगे? अगर हम देशकी सारी मृत्युओं पर रोयें तो हमारी आखोके आसू कभी नही सूखेगे। अिस विचारधारासे हमे मौतके सारे डरसे छुटकारा पानेमे मदद मिलनी चाहिये।

यग अिडिया, १३–१०–'२१

जन्म और मृत्यु दो भिन्न स्थितियां नही है, परतु अेक ही स्थितिके दो अलग अलग पहलू है। अेक पर दु खी होने और दूसरे पर खुशी मनानेका कोअी कारण नही है।

यग अिडिया, २०–११–'२४

अमरता

मेरा आत्माकी अमरतामे विश्वास है। मै आपको महासागरकी अुपमा समझाअूगा। महासागर पानीकी बूदोसे बना है। प्रत्येक बूद अेक स्वतत्र अिकाअी है और साथ ही सारे समुद्रका अेक अश भी है। अिसी प्रकार जीवनके महासागरमें हम सब छोटी छोटी बूदे है। मेरे सिद्धान्तका यह अर्थ

है कि मुझे प्राणीमात्रके साथ अेकता स्थापित करना चाहिये, मुझे अीश्वरकी अुपस्थितिमे अखिल जीवनके गौरवका भागीदार बनना चाहिये। अिन सब प्राणियोका समूचा योग ही तो अीश्वर है।

'अिडियाज केस फॉर स्वराज' (१९३२), पृष्ठ २४५

बीमा

मेरा खयाल था कि जीवनका बीमा करानेमे भय और श्रद्धाका अभाव प्रगट होता है। अपने जीवनका बीमा कराकर मैने अपने स्त्री-बच्चोंका स्वावलबन छीन लिया था। अुनसे यह आशा क्यो न रखी जाय कि वे अपनी फिकर आप कर लेगे? ससारके असख्य गरीबोके परिवारोका क्या हाल होता है? मै अपने आपको अुन्हीमे से अेक क्यो न समझू? मेरे पास यह मान लेनेका क्या कारण था कि मौत मुझे औरोसे पहले बुला लेगी? आखिर तो सच्चा रक्षक न मै हू, न मेरे भाअी, परतु सर्वशक्तिमान अीश्वर है।

आत्मकथा (अग्रेजी) १९४८; पृष्ठ ३२०–२१

साधन और साध्य

लोग कहते है, 'आखिर साधन तो साधन ही है।' मै कहूगा, 'आखिर तो साधन ही सब कुछ है।' जैसे साधन होगे वैसा ही साध्य होगा। साधन और साध्यको अलग करनेवाली कोअी दीवार नही है। वास्तवमे सृष्टिकर्ताने हमे साधनो पर नियत्रण (और वह भी बहुत सीमित नियत्रण) दिया है, साध्य पर तो कुछ भी नही दिया। लक्ष्य-सिद्धि ठीक अुतनी ही शुद्ध होती है, जितने हमारे साधन शुद्ध होते है। यह बात अैसी है जिसने किसी अपवादकी गुजाअिश नही।

यग अिडिया, १७–७–'२४

राजनीति

सार्वत्रिक और सर्वव्यापी सत्यकी भावनाका प्रत्यक्ष दर्शन करनेके लिअे हममे छोटेसे छोटे जीवसे अपनी ही तरह प्रेम करनेका सामर्थ्य होना चाहिये। और जो मनुष्य यह आकाक्षा रखता है वह जीवनके किसी क्षेत्रसे बाहर नही रह सकता। यही कारण है कि मेरी सत्यनिष्ठा मुझे राजनीतिके मैदानमे खीच लाअी है, और मै जरा भी सकोच किये बिना और फिर भी

पूरी नम्रताके साथ कह सकता हू कि जो लोग यह कहते हैं कि राजनीतिसे धर्मका कोअी वास्ता नही वे नही जानते कि धर्मका अर्थ क्या है।

आत्मकथा (अंग्रेजी) १९४८; पृष्ठ ६१५

मेरे लिअे धर्मरहित राजनीति बिलकुल गन्दी चीज है, जिससे हमेशा दूर रहना चाहिये। राजनीतिका राष्ट्रोंके हितसे सबध है। और जिस चीजका संबध राष्ट्रोंके हितसे है अुसके साथ अुस मनुष्यका सबंध होना ही चाहिये, जिसकी धार्मिक वृत्ति हो या दूसरे शब्दोमे जो अीश्वर और सत्यका शोधक हो। मेरे लिअे अीश्वर और सत्य समानार्थक शब्द है। और अगर कोअी मुझे कहे कि अीश्वर असत्य या अत्याचारका अीश्वर है तो मै अुसकी पूजा करनेसे अिनकार कर दूंगा। अिसलिअे राजनीतिमे भी हमे स्वर्गका राज्य स्थापित करना होगा।

यग अिडिया, १८–६–'२५

जब तक मै सारी मानव-जातिके साथ अेकता सिद्ध न कर लू, तब तक मै धार्मिक जीवन व्यतीत नही कर सकता; और यह हो नही सकता यदि मै राजनीतिमे भाग न लू। आज मनुष्यकी सारी प्रवृत्तियां अेक अविभाज्य वस्तु बन गअी है। आप सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक कार्यको अेक-दूसरेसे असंबद्ध करके बिलकुल अलग अलग विभागोमे नही बाट सकते। मै मानवीय प्रवृत्तिसे अलग किसी धर्मको नही जानता। अुससे अन्य सब प्रवृत्तियोको नैतिक आधार मिलता है, जो और किसी तरहसे नही मिलता और जिसके बिना जीवन 'निरर्थक शोरगुल' बन जाता है।

हरिजन, २४–१२–'३८

प्रारब्ध

प्रश्न . क्या प्रत्येक व्यक्तिके लिअे भगवान पहलेसे ही मृत्युका समय, स्थान और ढग मुकर्रर कर देता है? अैसी बात हो तो हम बीमार पडने पर भी चिन्ता क्यों करे?

अुत्तर यह तो मै नही जानता कि मृत्युका समय, स्थान और ढग पहलेसे निश्चित होता है। मै अितना ही जानता हूं कि 'भगवानकी मर्जीके बिना

अेक पत्ता भी नही हिलता'। अिसका भी मुझे धुंधला-सा ही ज्ञान है। जो चीज आज धुंधली है वह भक्तिपूर्ण प्रतीक्षासे कल या परसों साफ हो जायगी। लेकिन यह बिलकुल स्पष्ट हो जाना चाहिये कि सर्वशक्तिमान परमात्मा हमारे जैसा कोअी व्यक्ति नही है। वह बडीसे बडी चेतन-शक्ति या नियम है। अिसलिअे वह न मनमानी करता है और न अुस नियममें किसी संशोधन या सुधारकी गुंजाअिश है। अुसकी अिच्छा निश्चित और अपरिवर्तनीय है, बाकी सब चीजे हर वक्त बदलती रहती है। अवश्य ही प्रारब्धके सिद्धान्तसे यह नतीजा नही निकलता कि बीमारीमे भी हम अपनी देखभालकी 'चिन्ता' न करे। बीमारीकी लापरवाही बीमार पडनेसे भी बडा अपराध है। कलसे आज और भी अच्छा करनेकी कोशिशका कोअी अन्त नही है। हम बीमार क्यों है या क्यो हो गये, चिन्ता करके हमे अिसका पता लगाना ही होगा। प्रकृतिका नियम स्वास्थ्य है, बीमारी नही। हमे प्रकृतिके नियमोकी खोज करके अुनका पालन करना चाहिये। तब हम बीमार नही पडेंगे या पड भी गये तो अच्छे हो जायेंगे।

हरिजन, २८-७-'४६

प्रगति

विकास सदा प्रयोगात्मक होता है। गलतिया करने और अुनको ठीक करनेसे ही सब प्रकारकी प्रगति होती है। कोअी भलाअी ओश्वरके हाथो घड़ी-घड़ाअी नही आती, परंतु हमको ही बार-बार प्रयोग करके और बार-बार असफलताअें सहकर पैदा करनी होती है। यह व्यक्तिगत विकासका नियम है। सामाजिक और राजनैतिक विकास भी अिसी नियमके अधीन हैं। भूल करनेका अधिकार, जिसका अर्थ प्रयोग करनेकी स्वतत्रता है, सभी प्रकारकी प्रगतिकी सार्वत्रिक शर्त है।

'स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी' (१९३३): पृष्ठ २४५

राष्ट्रोने विकास और क्रान्ति दोनो तरीकोसे तरक्की की है। अेककी जितनी जरूरत है अुतनी ही दूसरीकी है। मृत्यु, जो अेक शाश्वत सत्य है, क्रान्ति है और जन्म व अुसके बादकी स्थिति धीमा और निश्चित विकास है। मनुष्यके विकासके लिअे जीवन जितना जरूरी है अुतनी ही मृत्यु जरूरी है। संसारमे जितने क्रान्तिकारी हुअे है या होंगे, अुनमे ओश्वर सबसे बड़ा है।

जहा क्षणभर पहले शाति होती है वहा वह तूफान भेज देता है। जिन पहाड़ोको वह अत्यंत सावधानी और अनन्त धैर्यसे बनाता है, अुन्हे वह जमीनसे मिलाकर समतल कर देता है। मैं आकाशको निहारता हूं तो वह मुझे भय और आश्चर्यसे भर देता है। भारत और अिंग्लैण्ड दोनोके शात नीले आकाशमे मैने बादलोको अिकट्ठा होते और अितनी भीषणतासे गरजते और बरसते देखा है कि मैं दग रह गया हू। अितिहास कथित क्रमबद्ध प्रगतिकी अपेक्षा अद्‌भुत क्रान्तियोंका लेखा अधिक है। . . .

यंग अिंडिया, २–२–’२२

पुनर्जन्म

मैं पूर्वजन्म और पुनर्जन्मको माननेवाला हू। हमारे सारे सबंध पूर्व-जन्मसे प्राप्त सस्कारोके परिणाम है। अीश्वरके नियम दुर्बोध है और अनन्त खोजके विषय है। अुनकी गहराअीका कोअी पता नही लगा सकेगा।

हरिजन, १८–८–’४०

धार्मिक शिक्षा

मैं नही मानता कि धार्मिक शिक्षाकी योजना करना राज्यका काम है या कि अुसकी योजना वह सफलतापूर्वक कर सकता है। मैं मानता हू कि धार्मिक शिक्षा अेकमात्र धार्मिक सस्थाओका ही काम होना चाहिये। धर्म और नीतिशास्त्रको मिला न दीजिये। मैं मानता हूं कि बुनियादी नीतिशास्त्र सब धर्मोमे अेकसा है। बुनियादी नीतिशास्त्रकी शिक्षा देना बेशक राज्यका काम है। धर्मसे मेरे दिमागमे बुनियादी नीतिशास्त्र नही आता, मगर वह चीज आती है जिसे पथवाद कहा जाता है। हम राज्य द्वारा सहायता-प्राप्त धर्मसे और राज्य द्वारा समर्थित धर्म-सस्थासे काफी कष्ट भोग चुके है। जो समाज या समूह अपने धर्मके अस्तित्वके लिअे राज्य पर थोडा या पूरा आधार रखता है अुसका कोअी धर्म नही होता, या यो कहे कि अुसके धर्मको सच्चे अर्थमे धर्म नही कहा जा सकता।

यह सत्य अितना स्पष्ट है कि अुसके समर्थनमे मुझे कोअी दृष्टान्त देनेकी जरूरत नही मालूम होती।

हरिजन, ३१–८–’४७

धार्मिक आदर्श

किसी धार्मिक आदर्शकी खूबी ही अिस बातमें है कि वह शरीर द्वारा पूरी तरह सिद्ध नही किया जा सकता। कारण, कोअी भी धार्मिक आदर्श श्रद्धा द्वारा प्रमाणित होना चाहिये। और श्रद्धा कैसे काम कर सकती है, यदि आत्मा 'मिट्टीके नाशवान पुतले' से घिरी रहकर भी सपूर्णताको प्राप्त कर ले? अनन्त विस्तार अुसका विशिष्ट धर्म है। शरीरबद्ध होते हुअे अुसके लिअे गुजाअिश ही कहा होगी? यदि मर्त्यलोकके प्राणी शरीरस्थ होते हुअे भी सपूर्णावस्थामे पहुंच जायं तो फिर आदर्शके खातिर सतत प्रयत्न करनेके लिअे — निरतर खोज करनेके लिअे, जगह ही कहा रहेगी? अगर शरीरमे रहकर अितनी आसानीसे सपूर्णता संभव हो, तो हमे किसी घडे-घडाये नमूनेका अनुसरण करना ही रह जायगा। अिसी प्रकार यदि सबके लिअे अेक संपूर्ण आचारशास्त्र सभव हो तो फिर भिन्न भिन्न धर्मों और मत-पन्थोके लिअे कोअी गुजाअिश नही होगी, क्योकि अेक ही नपातुला धर्म होगा जिस पर सबको चलना पडेगा।

यग अिडिया, २२–११–'२८

आदर्शकी खूबी यह होती है कि वह अनन्त होता है। परंतु यद्यपि धार्मिक आदर्श होते ही अैसे है कि अपूर्ण मानव-प्राणी अुन्हे पूरी तरह नही पा सकते, यद्यपि अपनी अनन्तताके गुणके कारण जितने हम अुनके नजदीक जाय अुतने ही वे हमसे सदा दूर जाते दिखाअी देते हैं, फिर भी वे हमारे हाथ-पैरोसे भी हमारे अधिक निकट है। क्योंकि हमे अपने भौतिक अस्तित्वसे भी अुनकी वास्तविकता और सत्यताका अधिक विश्वास होता है। अपने आदर्शोंमे यह श्रद्धा ही सच्चा जीवन है, असलमे यही मनुष्यका सर्वस्व है।

यग अिडिया, २२–११–'२८

अधिकार

अधिकारोका सच्चा स्रोत कर्तव्य है। अगर हम सब अपने कर्तव्य पूरे करे तो अधिकारोंको ढूढने कही दूर नही जाना पडेगा। अगर कर्तव्योंको अधूरा छोड़कर हम अधिकारोके पीछे दौडेगे तो वे मृगजलकी तरह कभी हमारी पकडमे नही आयेगे। हम जितना ही अुनका पीछा करेगे अुतने वे हमसे

दूर भागेंगे। यही अुपदेश श्रीकृष्णके अिन अमर शब्दोंमें मूर्तिमान हुआ है: 'तुझे कर्म करनेका ही अधिकार है। फलका तू विचार ही छोड दे।' कर्म कर्तव्य है; फल अधिकार है।

यंग अिंडिया, ८–१–'२५

गुप्तता

मैं गुप्तताको पाप समझने लगा हूं। . . . अगर हम अच्छी तरह समझ लें कि हम जो कुछ कहते और करते हैं अुस सबका अीश्वर साक्षी होता है, तो हमारे लिअे संसारमें किसीसे भी कोअी चीज छिपानेको नहीं रहेगी। कारण, हम अपने प्रभुके सामने अपवित्र विचार करेंगे ही नहीं, कहनेकी तो बात ही क्या? अपवित्रता ही गुप्तता और अंधकार ढूंढती है। मानव-स्वभावकी प्रवृत्ति गंदगीको छिपानेकी होती है। हम गंदी चीजोंको देखना या छूना नहीं चाहते। हम अुन्हें अपनी आंखोंसे ओझल कर देना चाहते हैं। और यही बात हमारी वाणीकी होनी चाहिये। मेरा कहना यह है कि हम जिन विचारोंको संसारसे छिपाना चाहें, अुन्हें सोचनेसे भी हमें परहेज करना चाहिये।

यंग अिंडिया, २२–१२–'२०

पाप

मैं अपने पापोंके परिणामसे अपनी रक्षा नहीं चाहता, मैं तो स्वयं पापसे या यों कहिये कि पापके विचार तकसे अपना अुद्धार चाहता हूं। जब तक मैं अुस लक्ष्य तक पहुंच नहीं जाता तब तक मैं बेचैनीसे ही संतोष कर लूंगा।

'महात्मा गांधीज आअिडियाज' (१९३०); पृ० ७०

अीश्वरकी नजरमें पापी सन्तके ही बराबर है। दोनोंको समान न्याय मिलेगा और दोनोंको आगे बढने या पीछे हटनेका समान अवसर मिलेगा। दोनों अुसकी सन्तान हैं, अुसकी सृष्टि हैं। जो सन्त अपनेको पापीसे श्रेष्ठ समझता है वह अपना सन्तपन खो देता है, और पापीसे भी बुरा बन जाता है; क्योंकि पापीको यह ज्ञान नहीं है कि वह क्या कर रहा है, जब कि सन्तको है या होना चाहिये।

हरिजन, १४–१०–'३३

मैंने अपने अनेक पापोंको बिलकुल खुले तौर पर मजूर किया है। परंतु मैं अुनका भार अपने कंधों पर लिये नहीं फिरता। अगर मैं अीश्वरकी ओर बढ रहा हू, जैसा कि मैं अनुभव करता हू, तो मैं सुरक्षित हूं। कारण, मुझे अुसकी मौजूदगीकी गरमी महसूस हो रही है। मैं मानता हूं कि मेरे सयम, अुपवास और प्रार्थनाओं आदिका कोअी मूल्य नहीं, अगर मैं अपने सुधारके लिअे अुन पर आधार रखू। परतु यदि, जैसी मुझे आशा है, वे अेक अैसी आत्माकी तडपनके प्रतीक हैं जो अपने प्रभुकी गोदमें अपने थके-मांदे मस्तकको रखकर सो जानेकी कोशिश कर रही है, तो अुनका अकल्पनीय महत्त्व है।

हरिजन, १८-४-'३६

मृतात्माओंसे संपर्क

मुझे मृतात्माओंसे कभी सन्देश नहीं मिलते। अैसे सदेशोंके मिलनेकी सभावनामें अविश्वास करनेके लिअे मेरे पास कोअी प्रमाण नहीं है। परंतु अिस प्रकारके सपर्क रखने या रखनेके प्रयत्नको मैं जरा भी पसन्द नहीं करता। अक्सर वे भ्रमपूर्ण और कल्पनाकी अुपज होते हैं। यदि यह मान लिया जाय कि अिस प्रकारके वार्तालाप हो सकते हैं, तो भी यह क्रिया माध्यम और आत्मा दोनोंके लिअे हानिकारक है। अिससे बुलाअी हुअी आत्मा पृथ्वीकी ओर आकर्षित होकर अुसके बंधनमें फसती है, जब कि अुसकी कोशिश संसारमें अनासक्त रहने और अूचे अुठनेकी होनी चाहिये। आत्मा शरीर छोड़नेसे ही अधिक शुद्ध नहीं हो जाती। वह अपने साथ वे सब कमजोरियां ले जाती है जो पृथ्वी पर अुसमें थी। अिसलिअे यह जरूरी नहीं कि अुसकी दी हुअी जानकारी या सलाह सही या ठीक ही हो। आत्माको सांसारिक प्राणियोंसे सपर्क रखना पसन्द है, यह कोअी खुशीकी बात नहीं। अिसके विपरीत, अुसे अैसी गलत आसक्तिसे छुडाना चाहिये। यह तो हुअी आत्माओंको होनेवाली हानिकी बात।

यग अिंडिया, १२-९-'२९

रही बात माध्यमकी। मैं निश्चयपूर्वक जानता हूं कि मेरे अनुभवमें आये हुअे अैसे व्यक्ति जब तक मृतात्माओंसे सपर्क साधनेका यह काम सचमुच करते रहे या अिस भ्रममें रहे, तब तक अुनका दिमाग बिगड़ा हुआ

या कमजोर रहा और वे व्यावहारिक कार्यके अयोग्य रहे। मुझे अपने किसी मित्रके बारेमें यह याद नहीं कि असे अिस प्रकारके संपर्कसे कुछ भी लाभ हुआ हो।

यंग अिंडिया, १२-९-'२९

अंधविश्वास

ज्यों ही हम सच्चा और सरल जीवन व्यतीत करना शुरू कर देते हैं, त्यों ही अन्धविश्वास और अवांछनीय बातें चली जाती हैं। लोगोंके विश्वासको सुधारना मेरा काम नहीं। मैं तो अुन्हें सदाचारी बननेको कहता हूं। ज्यों ही वे अैसा करने लगते हैं, अुनका विश्वास अपने आप ठीक हो जाता है।

यंग अिंडिया, ११-८-'२७

संग्रहमें दिये गये अुद्धरणोंके मूल स्रोत

आत्मकथा (अंग्रेजी) : ले० गांधीजी । नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४; आवृत्ति १९४८ ।

अिण्डियाज केस फॉर स्वराज : आवृत्ति १९३२ ।

अेथिकल रिलीजन : ले० गांधीजी । अेस० गणेशन्, मद्रास, १९२७ ।

दक्षिण अफ्रीकाका सत्याग्रह (सत्याग्रह अिन साअुथ अफ्रीका) : ले० गांधीजी । नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४ ।

दि बाम्बे क्रानिकल : बम्बअीसे निकलनेवाला अंग्रेजी दैनिक ।

दि माडर्न रिव्यू : कलकत्तासे निकलनेवाला अंग्रेजी मासिक ।

दि नेशन्स वाअिस : नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४ । आवृत्ति १९४७ ।

मंगल प्रभात (फ्रॉम यरवडा मंदिर) : ले० गांधीजी । नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४ । आवृत्ति १९४५ ।

महात्मा गांधी : गणेश अेण्ड कंपनी, मद्रास, १९१८ ।

महात्मा गांधीज आअिडियाज : ले० सी० अेफ० अेण्ड्रूज । अेलेन अेण्ड अनविन, लन्दन, १९३० ।

यंग अिंडिया : गांधीजीके संपादकत्वमें अहमदाबादसे निकलनेवाला अंग्रेजी साप्ताहिक (१९१९-१९३२) ।

स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी : जी० अे० नटेसन, मद्रास (चौथी आवृत्ति), १९३३ ।

हरिजन : अंग्रेजी साप्ताहिक । संस्थापक महात्मा गांधी ।

हिन्द स्वराज (अंग्रेजी) ले० गांधीजी । नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४ । आवृत्ति १९४६ ।